मिननुर् रहमान

जिसमें अरबी भाषा को समस्त भाषाओं की जननी सिद्ध किया गया है

लेखक

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी
मसीह मौऊद व महदी मा‘हूद अलैहिस्सलाम

नाम पुस्तक : मिननुर् रहमान
लेखक : हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी
मसीह मौऊद और महदी माहूद अलैहिस्सलाम
अनुवादक : डॉ अन्सार अहमद पी.एच.डी आनर्स इन अरबिक
टाइप, सैटिंग : महवश नाज़
संस्करण : प्रथम (हिन्दी) जनवरी 2021 ई०
संख्या : 500
प्रकाशक : नज़ारत नश्र-व-इशाअत,
क़ादियान, 143516
ज़िला-गुरदासपुर (पंजाब)
मुद्रक : फ़ज़्ले उमर प्रिंटिंग प्रेस,
क़ादियान, 143516
ज़िला-गुरदासपुर, (पंजाब)

Name of book : Minanur Rahmaan
Author : Hazrat Mirza Ghulam Ahmad Qadiani
Masih Mou'ud & Mahdi Alaihissalam
Translator : Dr. Ansar Ahmad, M.Phil,
Type, Setting : Mahwash Naaz
Edition : 1st Edition (Hindi) January 2021
Quantity : 500
Publisher : Nazarat Nashr-o-Isha'at, Qadian,
143516 Distt. Gurdaspur, (Punjab)
Printed at : Fazl-e-Umar Printing Press,
Qadian 143516
Distt. Gurdaspur (Punjab)

प्रकाशक की ओर से

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी मा'हूद अलैहिस्सलाम द्वारा लिखित पुस्तक "मिननुर् रहमान" का यह हिन्दी अनुवाद आदरणीय डॉ० अन्सार अहमद ने किया है और तत्पश्चात आदरणीय शेख़ मुजाहिद अहमद शास्त्री (सदर रिव्यू कमेटी), आदरणीय फ़रहत अहमद आचार्य (इंचार्ज हिन्दी डेस्क), आदरणीय अली हसन एम. ए. आदरणीय नसीरुल हक़ आचार्य, आदरणीय इब्नुल मेहदी एम् ए और आदरणीय मुहियुद्दीन फ़रीद एम् ए ने इसका रीव्यू आदि किया है। अल्लाह तआला इन सब को उत्तम प्रतिफल प्रदान करे।

इस पुस्तक को हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ (जमाअत अहमदिया के वर्तमान ख़लीफ़ा) की अनुमति से हिन्दी प्रथम संस्करण के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है।

विनीत
हाफ़िज़ मख़दूम शरीफ़
नाज़िर नश्र व इशाअत क़ादियान

नोट

पुस्तक के अंत में पारिभाषिक शब्दावाली दी गई है। पाठकगण उसकी सहायता से पुस्तक में प्रयोग किए गए इस्लामिक शब्दों को सरलतापूर्वक समझ सकते हैं।

लेखक परिचय

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी अलैहिस्सलाम

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी माहूद अलैहिस्सलाम का जन्म 1835 ई० में हिन्दुस्तान के एक कस्बे क़ादियान में हुआ। आप अपनी प्रारंभिक आयु से ही ख़ुदा की उपासना, दुआओं, पवित्र क़ुरआन और अन्य धार्मिक पुस्तकों के अध्ययन में व्यस्त रहते थे। इस्लाम जो कि उस समय चारों ओर से आक्रमणों का शिकार हो रहा था, उसकी दयनीय अवस्था को देख कर आप अलैहिस्सलाम को अत्यंत दुख होता था। इस्लाम की प्रतिरक्षा और फिर उसकी शिक्षाओं को अपने रूप में संसार के सम्मुख प्रस्तुत करने के लिए आपने 90 से अधिक पुस्तकें लिखीं और हज़ारों पत्र लिखे और बहुत से धार्मिक शास्त्रार्थ और मुनाज़रात किए। आपने बताया कि इस्लाम ही वह ज़िन्दा धर्म है जो मानवजाति का संबंध अपने वास्तविक सृष्टिकर्ता से स्थापित कर सकता है और उसी के अनुसरण से मनुष्य व्यवहारिक तथा आध्यात्मिक उन्नति प्राप्त कर सकता है।

छोटी आयु से ही आप सच्चे स्वप्न, कश्फ़ और इल्हाम से सुशोभित हुए। 1889 ई० में आपने ख़ुदा तआला के आदेशानुसार बैअत⁕ लेने का सिलसिला प्रारंभ किया और एक पवित्र जमाअत की नींव रखी। इल्हाम व कलाम का सिलसिला दिन प्रति दिन बढ़ता गया और आपने ख़ुदा के आदेशानुसार यह घोषणा की कि आप अंतिम युग के वही सुधारक हैं जिस की भविष्यवाणियाँ संसार के समस्त धर्मों में भिन्न-भिन्न नामों से उपस्थित हैं।

आपने यह भी दावा किया कि आप वही मसीह मौऊद व महदी माहूद हैं जिसके आने की भविष्यवाणी आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने की

⁕ **बैअत**- किसी नबी, रसूल, अवतार या पीर के हाथ पर उसका मुरीद होना, दीक्षा लेना, निष्ठा की प्रतिज्ञा- अनुवादक

थी। जमाअत अहमदिया अब तक संसार के 200 से अधिक देशों में स्थापित हो चुकी है।

1908 ई० में जब आप का स्वर्गवास हुआ तो उसके पश्चात पवित्र क़ुरआन तथा आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणियों के अनुसार आपके आध्यात्मिक मिशन की पूर्णता हेतु खिलाफ़त का सिलसिला स्थापित हुआ। अतः इस समय हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ आप के पंचम ख़लीफ़ा और विश्वस्तरीय जमाअत अहमदिया के वर्तमान इमाम हैं।

पुस्तक परिचय

मिननुर् रहमान

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि "इस्लाम के उलमा का आलस्य में सोए रहना और उनकी धार्मिक सहानुभूति और उसकी सेवा में लापरवाही और संसार को पाने की इच्छा तथा विरोधियों का इस्लाम धर्म को मिटाने के लिए प्रयास और उनके आक्रमणों को देख कर मेरा हृदय व्याकुल हुआ और निकट था कि जान निकल जाती। तब मैंने अल्लाह तआला से बहुत ही विनम्रता एवं विनयपूर्वक दुआ की कि वह मेरी सहायता करे। अल्लाह तआला ने मेरी दुआ को स्वीकार किया। अत: एक दिन जबकि मैं अत्यन्त बेचैनी की हालत में पवित्र क़ुरआन की आयतें बहुत सोच-समझ कर और ध्यानपूर्वक पढ़ रहा था और अल्लाह तआला से दुआ करता था कि मुझे मारिफ़त का मार्ग दिखाए और अत्याचारियों पर मेरी हुज्जत पूरी करे तो पवित्र क़ुरआन की एक आयत मेरी आँखों के सामने चमकी और विचार करने के बाद मैंने उसे ज्ञानों का ख़ज़ाना और रहस्यों का भण्डार पाया। मैं प्रसन्न हुआ और अलहम्दुलिल्लाह कहा और अल्लाह तआला का आभार व्यक्त किया। और वह आयत यह थी-

وَ كَذٰلِكَ اَوۡحَيۡنَاۤ اِلَيۡكَ قُرۡاٰنًا عَرَبِيًّا لِّتُنۡذِرَ اُمَّ الۡقُرٰى وَ مَنۡ حَوۡلَهَا

(अश्शूरा-8)

इस आयत के बारे में मुझ पर खोला गया कि यह आयत अरबी भाषा की श्रेष्ठताओं को बताती है और संकेत करती हैं कि अरबी भाषा समस्त भाषाओं की तथा पवित्र क़ुरआन समस्त पहली किताबों की मां है और यह कि मक्का मुकर्रमा समस्त ज़मीनों की मां है।

(रूहानी ख़ज़ायन की इसी जिल्द के पृष्ठ 179 से 184 तक का सार)

अल्लाह तआला के इस मार्गदर्शन के पश्चात आप ने 'मिननुर् रहमान' पुस्तक लिखी और उस के संबंध में आप ने एक विज्ञापन दिया जिसमें आप ने

इस पुस्तक के बारे में लिखा-

"यह एक अत्यन्त विचित्र पुस्तक है जिस की ओर पवित्र क़ुरआन की कुछ दूरदर्शिता से भरपूर आयतों ने हमें ध्यान दिलाया। अत: पवित्र क़ुरआन ने संसार पर यह भी एक भारी उपकार किया है कि जो भाषाओं की भिन्नता की वास्तविक फ़िलासफ़ी वर्णन कर दी और हमें इस बारीक हिकमत से अवगत किया कि इन्सानी बोलियाँ किस स्त्रोत और खान से निकली हैं और वे लोग कैसे धोखे में रहे जिन्होंने इस बात को स्वीकार न किया कि इन्सानी बोली की जड़ ख़ुदा तआला की शिक्षा है। और स्पष्ट हो कि इस पुस्तक में भाषाओं के अन्वेषण की दृष्टि से यह सिद्ध किया गया है कि संसार में केवल पवित्र क़ुरआन ही एक ऐसी किताब है जो उस भाषा में उतरी है जो समस्त भाषाओं की जननी और इल्हामी और समस्त भाषाओं का स्त्रोत और झरना है।"

(ज़ियाउल हक़, रूहानी ख़ज़ायन जिल्द- 9, पृष्ठ- 250)

दूसरे लोगों के प्रयासों की विफलता का जो उन्होंने अपनी भाषाओं को समस्त भाषाओं की जननी सिद्ध करने के लिए कीं, वर्णन करते हुए फ़रमाते हैं-

"अब हमें ख़ुदा तआला के मुक़द्दस और पवित्र कलाम क़ुरआन मजीद से इस बात का निर्देश हुआ कि वह इल्हामी भाषा और समस्त भाषाओं की मां, जिसके लिए पारसियों ने अपनी जगह और इब्रानी भाषाविदों ने अपनी जगह और आर्य क़ौम ने अपनी जगह दावे किये कि उन्हीं की वह भाषा है, (वास्तव में) वह (स्पष्ट) अरबी भाषा है और दूसरे समस्त दावेदार ग़लती और भूल पर हैं।"

(ज़ियाउल हक़ रूहानी ख़ज़ायन जिल्द-9 पृष्ठ 320)

फिर अपने अन्वेषण और अरबी भाषा के मुक़ाबले पर दूसरी भाषाओं का अपूर्ण होना वर्णन करके फ़रमाते हैं-

"हम ने अरबी भाषा की श्रेष्ठता, ख़ूबी और समस्त भाषाओं से श्रेष्ठतर होने के तर्कों को अपनी पुस्तक में विस्तारपूर्वक लिख दिया है

जो निम्नलिखित हैं-

(1)- अरबी के मुफ़रदों की व्यवस्था पूर्ण है।

(2)- अरबी उच्च कोटि के नामकरण के कारणों पर आधारित है जो विलक्षण है।

(3)- अरबी के अतराद (धातुओं अथवा मस्दरों) का सिलसिला और सामग्री सर्वांगपूर्ण है।

(4)- अरबी तरकीबों में शब्द कम और अर्थ अधिक हैं।

(5)- अरबी भाषा मानवीय सर्वनामों का पूर्ण चित्रण करने के लिए अपने अन्दर पूरा-पूरा सामर्थ्य रखती है।

अब प्रत्येक को अधिकार है कि हमारी पुस्तक के प्रकाशित होने के पश्चात् यदि संभव हो तो ये ख़ूबियां संस्कृत या किसी अन्य भाषा में सिद्ध करे। ....हमने इस पुस्तक के साथ पांच हज़ार रुपये का इनामी विज्ञापन प्रकाशित कर दिया है ....विजयी होने की अवस्था में बिना हानि के वह रुपया उन्हें प्राप्त हो जाएगा।"

(ज़ियाउल हक़ रूहानी ख़ज़ायन, जिल्द 9, पृष्ठ 321, 322)

इस अन्वेषण से कि 'अरबी भाषा समस्त भाषाओं की जननी' है आप ने इस्लाम की विश्वव्यापी विजय की नींव रख दी। क्योंकि अरबी भाषा के समस्त भाषाओं की जननी और इल्हामी भाषा सिद्ध होने से यह भी स्वीकार करना पड़ेगा कि समस्त किताबों में से जो विभिन्न भाषाओं में विशेष क़ौमों के सुधार के लिए नबियों पर उतरीं उच्चतर, श्रेष्ठतर, सर्वांगपूर्ण, ख़ातमुल कुतुब और समस्त किताबों की माँ पवित्र क़ुर्आन है और रसूलों में से ख़ातमुन्नबिय्यीन और ख़ातमुर्रुसुल हज़रत सय्यिदिना मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का यह विचार था कि यह पुस्तक दिसम्बर 1895 ई. में प्रकाशित हो जाएगी और 'ज़ियाउल हक़' पुस्तक को जो मई 1895 ई. में लिखी जा चुकी थी, उसका एक भाग बनाया जाएगा। परन्तु अख़बार 'नूर अफ़्शां' में अब्दुल्लाह आथम की भविष्यवाणी से सम्बन्धित कुछ

निबंधों के प्रकाशित होने के कारण ‘ज़ियाउल हक़’ की कुछ प्रतियों का प्रकाशित करना आप ने उचित समझा। परन्तु अफ़सोस है कि पुस्तक ‘मिननुर् रहमान’ अपूर्ण हालत में रह गई और उसका प्रकाशन भी हज़रत मसीह मौऊद के स्वर्गवास के पश्चात् हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह द्वितीय रज़ियल्लाहु अन्हु के दौर में जून 1915 ई. में हुआ। और जिस हालत में यह पुस्तक हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की मौजूदगी में थी उसी रूप में प्रकाशित कर दी गई। परन्तु इस अन्वेषण के बारे में आपके कुछ सेवकों ने अपने प्रयास जारी रखे। अत: ख़्वाजा कमालुद्दीन साहिब मरहूम ने एक संक्षिप्त पुस्तक “उम्मुल अलसिन:” लिखी। परन्तु हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के क़ायम किए हुए सिद्धांतों पर विस्तृत शोध का सौभाग्य आदरणीय शेख़ मुहम्मद अहमद साहिब मज़्हर एडवोकेट लाइलपुर सुपुत्र हज़रत मुंशी ज़फ़र अहमद साहिब कपूरथलवी[रज़ि.] के भाग में आया, जिन्होंने वर्षों की मेहनत और खोज से संसार की प्रसिद्ध भाषाओं संस्कृत, अंग्रेज़ी, लातीनी, जर्मन, फ्रंसीसी, चीनी, फारसी और हिन्दी की गहरी समानता और अरबी के 'समस्त भाषाओं की जननी' होने का दृष्टिकोण पूर्ण विस्तार से प्रकट किया है और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के वर्णन किए हुए सिद्धान्तों के आलोक में उन भाषाओं के बीस हज़ार शब्दों के हल करने में बड़ी सफलता प्राप्त कर ली है।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

الحمد ﷲ مولی النعم و الصلوة و السلام علی سید الرّسل
و سراج الامم اصحابه الهادین المهدین و اٰله الطاهرین المطهرین۔

तत्पश्चात् चूंकि पवित्र क़ुर्आन एक ऐसा चमकदार बहुमूल्य रत्न और प्रकाशमान सूर्य है कि उसकी सच्चाई की किरणें और उसके ख़ुदा तआला की ओर से होने की चमकारें न किसी एक या दो पहलू से अपितु हज़ारों पहलुओं से प्रकट हो रही हैं और इस्लाम के विरोधी जितने प्रयास कर रहे हैं कि इस रब्बानी प्रकाश को बुझा दें उतना ही वह ज़ोर के साथ प्रकट होता और अपनी सुन्दरता और ख़ूबसूरती से प्रत्येक विवेकवान के हृदय को अपनी ओर आकर्षित कर रहा है। इसलिए इस अंधकारपूर्ण युग में भी जबकि पादरियों और आर्यों ने अपमान एवं तिरस्कार में कोई क़सर नहीं छोड़ी और अपने अंधेपन के कारण उस प्रकाश पर वे समस्त आक्रमण किए जो एक बड़ा अज्ञानी तथा अत्यन्त पक्षपाती कर सकता है। इस अनादि प्रकाश ने स्वयं अपने ख़ुदा की ओर से होने का प्रत्येक पहलू से सबूत दिया है। इसमें यह एक महान विशेषता है कि वह अपने समस्त निर्देशों तथा ख़ूबियों के बारे में स्वयं ही दावा करता है और स्वयं ही उस दावे का सबूत देता है और यह श्रेष्ठता किसी अन्य किताब को प्राप्त नहीं। और उन समस्त तर्कों एवं प्रमाणों में से जो उसने अपने ख़ुदा की ओर से होने पर और अपनी उच्चकोटि की श्रेष्ठता पर प्रस्तुत किए हैं, एक बड़ा तर्क वह है जिसके विवरण और व्याख्या के लिए हम ने इस पुस्तक को लिखा है जो समस्त भाषाओं की जननी के पवित्र झरने से निकलती है जिसका शुद्ध जल सितारों के समान चमकता और प्रत्येक मारिफ़त के प्यासे को विश्वास के पानी से तृप्त करता और सन्देह एवं शंकाओं की मलिनता से साफ़ कर देता है। यह तर्क किसी पहली किताब ने अपनी सच्चाई के समर्थन में प्रस्तुत नहीं किया और यदि वेद या किसी अन्य किताब ने प्रस्तुत किया है तो आवश्यक

है कि उसके अनुयायी मुक़ाबले के समय पहले उस वेद के स्थान को प्रस्तुत करें और उस तर्क का सारांश यह है कि भाषाओं पर दृष्टि डालने से यह सिद्ध होता है कि संसार की समस्त भाषाओं में परस्पर इश्तिराक़ (मेल-मिलाप) है। फिर एक दूसरी गहरी दृष्टि से यह बात पुख़्ता सबूत तक पहुंचती है कि इन समस्त भाषाओं की मां अरबी भाषा है जिससे ये समस्त भाषाएँ निकली हैं। फिर एक पूर्ण और व्यापक छानबीन से अर्थात जबकि अरबी की विलक्षण ख़ूबियों की जानकारी हो, यह बात माननी पड़ती है कि यह भाषा न केवल भाषाओं की मां है अपितु ख़ुदाई भाषा है जो ख़ुदा तआला के विशेष इरादे और इल्हाम द्वारा प्रथम मनुष्य को सिखाई गई और किसी मनुष्य का आविष्कार नहीं। और फिर इस बात का परिणाम कि समस्त भाषाओं में से **इल्हामी भाषा** केवल अरबी ही है, यह स्वीकार करना पड़ता है कि ख़ुदा तआला की सर्वांगपूर्ण वह्यी उतरने के लिए केवल अरबी भाषा ही अनुकूलता रखती है, क्योंकि यह अत्यावश्यक है कि ख़ुदा की किताब जो समस्त क़ौमों की **हिदायत (मार्ग-दर्शन)** के लिए आई है वह **इल्हामी भाषा** में ही उतरे और ऐसी भाषा में हो जो समस्त भाषाओं की जननी हो ताकि उसे प्रत्येक भाषा और मातृभाषी से एक स्वाभाविक अनुकूलता हो और ताकि वह इल्हामी भाषा होने के कारण वह बरकतें अपने अन्दर रखती हो जो उन चीज़ों में होती हैं जो ख़ुदा तआला के मुबारक हाथ से निकलती हैं। परन्तु चूंकि अन्य भाषाएँ भी मनुष्यों ने जानबूझ कर नहीं बनाईं अपितु वे समस्त उसी पवित्र ज़ुबान से, शक्तिशाली रब्ब के आदेश से निकल कर बिगड़ गई हैं और उसी की संतानें हैं, इसलिए यह कुछ अनुचित नहीं था कि उन भाषाओं में भी विशेष-विशेष क़ौमों के लिए इल्हामी किताबें उतरें, हाँ यह आवश्यक था कि सुदृढ़ और श्रेष्ठतम पुस्तक अरबी भाषा में ही उतरे क्योंकि वह समस्त भाषाओं की जननी और असल इल्हामी भाषा और ख़ुदा तआला के मुंह से निकली है और चूंकि यह तर्क क़ुरआन ने ही बताया और क़ुरआन ने ही दावा किया और अरबी भाषा में कोई अन्य किताब दावेदार भी नहीं। इसलिए स्पष्ट रूप से क़ुरआन का ख़ुदा की ओर से

होना और सब किताबों पर **निगरान** होना मानना पड़ा अन्यथा अन्य किताबें भी झूठी ठहरेंगी। इसलिए मैंने इसी उद्देश्य से इस पुस्तक को लिखा है ताकि सर्वप्रथम ख़ुदा तआला की सहायता के साथ समस्त भाषाओं का इश्तिराक (मेल-मिलाप) सिद्ध करूं, तत्पश्चात अरबी भाषा के समस्त भाषाओं की मां और असल इल्हामी होने के **तर्क** सुनाऊँ और फिर अरबी की इस विशेषता के आधार पर कि पूर्ण, शुद्ध और इल्हामी भाषा केवल वही है, इस अन्तिम परिणाम का ठोस और निश्चित सबूत दूं कि ख़ुदाई किताबों में से सर्वोत्तम, सर्वोच्च, सर्वांगपूर्ण और ख़ातमुल कुतुब केवल पवित्र क़ुरआन ही है और वही उम्मुल कुतुब (समस्त पुस्तकों की मां) है जैसा कि अरबी उम्मुल अलसिनः (समस्त भाषाओं की मां) है। और अन्वेषणों के इस सिलसिले में हमारे दायित्व में तीन पड़ावों का तय करना आवश्यक होगा।

(1)- पहला पड़ाव- भाषाओं का इश्तिराक (मेल-मिलाप) सिद्ध करना।

(2)- दूसरा पड़ाव- अरबी का समस्त भाषाओं की मां होना प्रमाणित करना।

(3)- तीसरा पड़ाव- अरबी को विलक्षण ख़ूबियों के कारण इल्हामी भाषा सिद्ध करना।

परन्तु चूंकि हमारे विरोधी भली-भांति जानते हैं कि इस अन्वेषण से यदि अरबी के पक्ष में **डिग्री** हो गई तो केवल यही नहीं मानना पड़ेगा कि क़ुरआन ख़ुदा की ओर से है अपितु यह भी इक़रार करना पड़ेगा कि वह किताब जो असल, पूर्ण और इल्हामी भाषा में उतरी है वह केवल **क़ुरआन ही है** और अन्य समस्त भाषाएँ उस पर आश्रित हैं। इसलिए निश्चित है कि इस सच्चाई के खुलने से इन समस्त क़ौमों में बहुत ही मातम हो, विशेष तौर पर **आर्य** क़ौम में जिन की यह ग़लत धारणा है कि उन्हीं की भाषा संस्कृत परमेश्वर की भाषा है और वही अत्यन्त पूर्ण, इल्हामी तथा समस्त भाषाओं की मां है। हालांकि आज तक वेद की कोई एक श्रुति भी प्रस्तुत नहीं की गई जिससे ज्ञात हो कि **वेद** ने अपने मुंह से ऐसा दावा भी किया है। यह भी स्मरण रहे कि इस से पहले इस्लाम धर्म के मुक़ाबले

पर कुछ गाली देने वाले और अनभिज्ञ आर्य बहुत सी डींगे मार चुके हैं और अत्यन्त अनभिज्ञता और ज्ञान के आभाव के बावजूद फिर भी वे धार्मिक शास्त्रार्थों में हस्तक्षेप करते रहे हैं तथा कुछ उत्पाती, निर्लज्ज, अधम प्रकृति वाले लोगों ने अकारण वेद की तरफ़दारी करके ख़ुदा तआला की पवित्र वाणी क़ुरआन का निरादर किया और अन्दर जो कुछ गंद भरा था वह सब निकाला और अज्ञानियों को धोखा दिया कि मानो वे बड़े वेदवान और विद्यावान हैं और मानो कि उन्होंने वेद की बहुत सी श्रेष्ठताएं देखीं तब उसकी ओर झुक गए। परन्तु अब यह ज्ञान संबंधी शोध है जिसमें किसी धर्म का अज्ञानी बोल नहीं सकता। क्योंकि इस स्थान पर बात करने के लिए ज्ञान की आवश्यकता है। इसमें व्यर्थ और असंबंधित बातें काम नहीं दे सकतीं। शोध का यह सिलसिला ऐसा पूर्ण है जिस की जड़ पृथ्वी में और शाखाएं आकाश में हैं। अर्थात मनुष्य उस वृक्ष पर चढ़ता-चढ़ता अन्त में रूहानी सच्चाई के फल को पा लेता है और जैसा कि स्पष्ट है कि यद्यपि शाखाओं को जड़ों से ही शक्ति मिलती है परन्तु फल जो खाए जाते हैं वे जड़ों में तो नहीं लगते बल्कि शाखाओं में लगते हैं। ऐसा ही समस्त घटनाओं का असल परिणाम इस ज्ञान रूपी शाखाओं में ही प्रकट होता है और जो लोग उसकी घटनाओं पर न्यायसंगत बहस करते हैं और प्रमाणित वास्तविकताओं को अपने मस्तिष्कों में भली भांति सुरक्षित रखते हैं वे बहुत सफ़ाई से उन फलों को देख लेते हैं जिन से शाखाएं लदी पड़ी हैं।

जानना चाहिए कि इस मारिफ़त तक पहुंचने के लिए कि क़ुरआन ख़ुदा की ओर से तथा समस्त किताबों की मां है, केवल तीन बातें तहक़ीक़ योग्य हैं जिन का अभी हम वर्णन कर चुके हैं। इसमें कुछ सन्देह नहीं कि जो व्यक्ति इन तीन विषयों को अच्छी तरह समझ लेगा उसकी आँखों से अज्ञानता के पर्दे दूर हो जाएंगे और जो घटनाओं से परिणाम निकलता है, बहरहाल उसे मानना पड़ेगा।

तहक़ीक के तीन विषयों में से प्रथम विषय जो **भाषाओं का पारस्परिक मेल-मिलाप है** उस का निर्णय हमारी इस पुस्तक में ऐसी सफ़ाई से हो गया

है कि इस से बढ़ कर किसी उच्चतर शोध के लिए कोई कार्रवाई नहीं जिसकी कल्पना की जाए। क्योंकि परस्पर मेल-मिलाप सिद्ध करने के लिए केवल एक शब्द का मेल-मिलाप दिखला देना पर्याप्त होता है, परन्तु हमने तो इस पुस्तक में परस्पर मेल-मिलाप के हज़ारों शब्द दिखला दिए और पूर्ण सफ़ाई से सिद्ध कर दिया कि अरबी भाषा का प्रत्येक भाषा के साथ परस्पर मेल-मिलाप है।

तहक़ीक की बातों में से दूसरी बात यह है कि परस्पर मेल-मिलाप वाली भाषाओं में से केवल अरबी ही **समस्त भाषाओं की मां है।** अतः इसके कारण विस्तारपूर्वक लिखे गए हैं और हमने सिद्ध कर दिया है कि अरबी की विशेष ख़ूबियों में से यह है कि वह अपने साथ प्राकृतिक व्यवस्था रखती है और ख़ुदाई कारीगरी की सुन्दरता उसी रंग से दिखाती है जिस रंग से ख़ुदा तआला के अन्य कार्य संसार में पाए जाते हैं। और यह भी सिद्ध किया गया है कि शेष समस्त भाषाएँ अरबी भाषा का एक बिगड़ा हुआ रूप है। यह मुबारक भाषा इन भाषाओं में अपने रूप में जितनी स्थापित रही है वह भाग तो मोती के समान चमकता है और अपने दिलरुबा सौन्दर्य के साथ दिलों पर प्रभाव डालता है और कोई भाषा जितनी बिगड़ गयी है उतना ही उसकी कोमलता तथा आकर्षक रूप में अन्तर आ गया है। यह बात तो स्पष्ट है कि प्रत्येक चीज़ जो ख़ुदा तआला के हाथ से निकली है जब तक वह अपने वास्तविक रूप में है तब तक उसमें विलक्षण प्रकृतियाँ अवश्य होती हैं और उस जैसा बनाने पर मनुष्य समर्थ नहीं होता और ज्यों ही वह वस्तु अपनी असली हालत से गिर जाती है तो सहसा उसके रूप और सौन्दर्य में अन्तर प्रकट हो जाता है। देखो जब एक वृक्ष अपनी असली हालत पर होता है तो कैसा सुन्दर और प्रिय दिखाई देता है और अपनी कैसी मनोरम हरियाली से, अपनी आरामदायक छाया से, अपने फूलों से, अपने फलों से उच्च स्वर में पुकारता है कि मनुष्य मेरा नमूना बनाने पर समर्थ नहीं और जब वह अपने स्थान से गिर जाता या सूख जाता है, तो साथ ही उसकी समस्त स्थितियों में अन्तर आ जाता है, न वह रंग और चमक-दमक शेष रहती है और न वह

मनोरम हरियाली दिखाई देती है और न भविष्य में विकसित होने और फल लाने की आशा कर सकते हैं या उदाहरणतया मनुष्य जब जीवित और जवान होता है तो चेहरा कैसा चमकीला और समस्त शक्तियां अच्छी तरह से काम देती हैं और वह कैसा बहुमूल्य लिबास पहने होता है और फिर जबकि प्राण निकल जाते हैं तो न वह लावण्यता आँखों में रहती है और न वह मनोरम चेहरा और सुनना, देखना, समझना, पहचानना, बोलना, चलना-फिरना दिखाई देता है अपितु तुरन्त सब बातें जाती रहती हैं। यही अन्तर अरबी और अन्य भाषाओं में पाया जाता है। अरबी भाषा उस कोमल स्वभाव और प्रवीण मनुष्य की तरह काम देती है जो विभिन्न माध्यमों द्वारा अपने उद्देश्य को समझा सकता है। उदाहरणतया एक अत्यन्त होशियार और प्रवीण मनुष्य कभी भौंह या नाक या हाथ से वह काम ले लेता है जो ज़बान ने करना था। अर्थात इस बात पर समर्थ होता है कि सूक्ष्म-सूक्ष्म संकेतों से संबोधित को समझा दे। यही तरीक़ा अरबी भाषा की प्रकृतियों में से है। अर्थात् यह भाषा कभी अलिफ़ लाम तारीफ़ (ال) से वह काम निकालती है जिसमें अन्य भाषाएँ कुछ शब्दों की मुहताज होती हैं और कभी केवल (अनुस्वार पैदा करके) (तन्वीन)ً– से ऐसा काम लेती है जो अन्य भाषाएँ लम्बे वाक्यों से भी पूरा नहीं कर सकतीं। ऐसा ही **ज़ेर**ِ– **ज़बर**َ– **पेश** ُ–भी शब्दों का ऐसा काम दे जाते हैं जो संभव नहीं कि कोई दूसरी भाषा सिवाए कुछ अधिक वाक्यों के इनका मुक़ाबला कर सके। इसके कुछ शब्द भी बहुत छोटे होने के बावजूद ऐसे लम्बे अर्थ रखते हैं कि बहुत ही आश्चर्य होता है कि ये अर्थ कहां से निकले। उदारहणतया عَرَضْتُ (अरज़्तु) के यह अर्थ हैं कि मैं मक्का और मदीना और जो उनके आस-पास देहात हैं सब देख आया और طهفلتُ (तहफ़ल्तु) के यह अर्थ हैं कि मैं चीने☆ की रोटी खाता हूँ और हमेशा चीने की रोटी खाने के लिए प्रण कर चुका हूँ और جَشَمَ (जसम) के यह अर्थ हैं कि अर्धरात्रि चली गई और حِيَعَلْ (हीअल) के यह अर्थ हैं कि आओ नमाज़ पढ़ो नमाज़ का

☆ चीने :- एक प्रकार के अनाज का नाम - अनुवादक

समय है और इसी प्रकार बहुत से शब्द ऐसे हैं कि केवल एक अक्षर ही है परन्तु इसके अर्थ दो या तीन शब्दों पर आधारित हैं जैसे -

فِ (फि) वफ़ा कर	قِ (क़ि) निगाह रख	لِ (लि) क़रीब हो	عِ (इ) याद कर	اِ (इ) वादा कर
خِ (ख़ि) न धीरे चल और न जल्दी कर बल्कि दरमियानी चाल चल	ہِ (हि) फट जा कमज़ोर हो जा	دِ (दि) ख़ून बहा दे	رِ (रि) भड़क और रौशन हो और व्याभिचार की अग्नि से निकल और गन्दा हो जा	شِ (शि) अपने कपड़े पर बेल-बूटे बना

نِ (नि) सुस्त हो जा

और अरबी की विचित्र बातों में से एक यह भी मालूम हुई है कि अन्य विभिन्न भाषाओं में जितनी विशेषताएं हैं वे सब इसमें जमा हैं। उदाहरणतया कुछ भाषाओं में जैसा कि चीनी भाषा में यह विशेषता है कि उसके समस्त शब्द एक ही भाग के हैं और प्रत्येक भाग अपने-अपने स्थान पर स्थायी अर्थ रखता है। तो यह विशेषता भी अरबी के कुछ भाग में पाई जाती है। ऐसा ही वर्णन किया गया है कि **अमरीका** की असल भाषा के शब्द कई-कई टुकड़ों से मिलकर बने हुए होते हैं और उन टुकड़ों के स्वयं कुछ मायने नहीं होते। तो यह विशेषता भी अरबी के कुछ भागों में मौजूद है। फिर **अमरीका** और **संस्कृत** भाषा में अर्थों के परिवर्तन की अभिव्यक्ति के लिए गर्दानें (उदाहरणतया शब्द या धातु रूप) हैं, तो वे गर्दानें अरबी भाषा में भी पाई जाती हैं और **चीनी** भाषा में गर्दानें नहीं हैं अपितु वहां नए विचार की अभिव्यक्ति के लिए अलग शब्द है। अत: कुछ शब्दों में यह बात भी अरबी में मौजूद है। फिर जबकि विचार करने और पूरा-पूरा चिन्तन करने तथा

गहरी छान-बीन करने से ज्ञात होता है कि वास्तव में अरबी भाषा समस्त भाषाओं की भिन्न-भिन्न विशेषताओं की **संग्रहीता** है तो इस से निश्चित तौर पर मानना पड़ता है कि समस्त भाषाएं अरबी की ही **शाख़ाएं** हैं।

कुछ लोग ऐतराज़ करते हैं कि यदि समस्त भाषाओं की जड़ और मूल एक ही भाषा को माना जाए तो बुद्धि इस बात को स्वीकार नहीं कर सकती कि केवल तीन-चार हज़ार वर्ष तक ऐसी भाषाओं में जो एक ही जड़ से निकली थीं इतना अन्तर प्रकट हो गया हो। इसका उत्तर यह है कि इस ऐतराज़ का आधार वास्तव में ऐसी ग़ल्ती पर है जिसकी नींव ही ग़लत है अन्यथा यह बात निश्चित रूप से प्रमाणित नहीं कि संसार की आयु केवल चार-पांच हज़ार वर्ष तक गुज़री है और इससे पूर्व पृथ्वी तथा आकाश का नामो-निशान न था, बल्कि गहरी दृष्टि डालने से ज्ञात होता है कि यह संसार एक दीर्घ काल से आबाद है। इसके अतिरिक्त भाषाओं की भिन्नता के लिए केवल समय और स्थान की दूरी का होना कारण नहीं बल्कि इस का एक सुदृढ़ कारण यह भी है कि भूमध्य रेखा के निकट या दूर और सितारों की एक विशेष बनावट का प्रभाव और अन्य अज्ञात सामानों से हर प्रकार की ज़मीन अपने निवासियों की प्रकृति को एक विशेष हलक (कंठ) और लहजा (बोली) और उच्चारण के रूप प्रदान करती है और वही प्रेरक धीरे-धीरे कलाम (वर्णन शैली) की एक विशेष बनावट की ओर ले आता है। इसी कारण से देखा जाता है कि कुछ देशों के लोग शब्द ज़ा (زا) बोलने पर समर्थ नहीं हो सकते और कुछ रा (را) बोलने पर समर्थ नहीं हो सकते। जैसे मनुष्यों में देशों की भिन्नता से रंगों की भिन्नता, आयु की भिन्नता, आचरणों की भिन्नता, रोगों की भिन्नता एक आवश्यक बात है इसी प्रकार यह भिन्नता भी निश्चित है क्योंकि उन्हीं प्रभावकारियों के अधीन भाषाओं की भी भिन्नता है। अत: यह विचार एक धोखा है कि यह भिन्नता हज़ारों वर्ष से क्यों एक ही सीमा तक रही, इस से आगे न बढ़ी क्योंकि प्रभाव डालने वाली बातों ने जितनी भिन्नता को चाहा उतनी ही हुई उससे अधिक क्योंकर हो सकती। यह ऐसा ही प्रश्न है जैसा कि कोई कहे कि स्थानों की भिन्नता में रंगों और उमरों और रोगों और शिष्टाचार की भिन्नता

हो गई, यह क्यों न हुआ कि किसी स्थान पर एक आंख के स्थान पर दस आंखें हो जातीं। तो ऐसे भ्रम का इसके अतिरिक्त हम क्या उत्तर दे सकते हैं कि यह भिन्नता यों ही अनियमित नहीं थी अपितु एक प्राकृतिक नियम के अधीन थी तो नियम ने जितना चाहा उतनी ही भिन्नता भी हुई। इसलिए जो कुछ आकाशीय और पार्थिवों के कारण मनुष्य की बनावट, आचरण या विचारों की प्राकृतिक रफ़्तार में परिवर्तन पैदा होता है वह परिवर्तन अवश्य ही वाक्यों की शृंखला में परिवर्तन करता है। इसलिए वह स्वभाविक तौर पर भिन्नता पैदा करने के लिए विवश होता है और यदि कोई अन्य भाषा का शब्द उनकी भाषा में पहुंचे तो वे जान-बूझ कर उसमें बहुत कुछ परिवर्तन कर देते हैं। तो यह इस बात पर कैसा उच्चकोटि का तर्क है कि वह अपनी बनावट की दृष्टि से जो पार्थिव-आकाशीय प्रभावों से प्रभावित है, स्वाभाविक तौर पर परिवर्तन के मुहताज हैं। इसके अतिरिक्त ईसाइयों और यहूदियों को तो यह बात अवश्य स्वीकार करनी पड़ती है कि समस्त भाषाओं की माँ अरबी है। क्योंकि **तौरात** के स्पष्ट आदेश से यह बात सिद्ध है कि प्रारंभ में भाषा एक ही थी। फिर ख़ुदा तआला ने बाबिल के स्थान पर उनमें भिन्नता डाल दी। देखो तौरात पैदायश अध्याय-11, और यह बात प्रत्येक पक्ष के नज़दीक मान्य है कि बाबिल शहर उसी देश में आबाद था कि जहां अब कर्बला है। अत: इस से तो तौरात के वर्णन का ख़ुलासा यही निकला कि समस्त भाषाओं की माँ अरबी है। अंग्रेज़, अन्वेषकों तथा इस्लामी अन्वेषकों की सहमति से यह बात प्रमाणित है कि बाबिल जिसकी आबादी की लम्बाई दो-सौ मील तक थी और वह अपनी आबादी में शहर लन्दन जैसे पांच शहरों के बराबर था और उसमें बहुत अद्भुत और शोभायमान बाग़ भी थे और **फ़ुरात** नदी उसके अन्दर बहती थी और **ईराक़** अरब के अन्दर था। और जब वह वीरान हुआ तो उसकी ईंटों से **बसरा, कूफ़ा, हल्ला, बग़दाद** और **मदायन** आबाद हुए। और ये सब शहर उसकी सीमाओं के क़रीब-क़रीब हैं। अत: इस शोध से सिद्ध है कि बाबिल **अरब** देश में था। इसलिए **अरब** के मानचित्र में जो अभी **बैरूत** में छपा है बाबिल को ईराक़ अरब में ही दिखाया है।

असल तौरात इब्रानी अध्याय पैदायश आयत-1 में यह इबारत है-

ویہی خُل ہارص شفہ آحت و دبریم آحدیم

(अर्थात्) और सम्पूर्ण धरती एक होंठ थी और एक समान बातें। स्पष्ट हो कि समस्त ज़मीन (धरती) से अभिप्राय केवल बाबिल की ज़मीन नहीं हो सकती जो **सिन्आर** के नाम से नामित है क्योंकि यह आयत उस क़िस्से से पहले और उन किस्सों से संबंधित है जो दसवें अध्याय में गुज़र चुके हैं। अत: कथित आयत का मतलब यह है कि समस्त वे क़ौमें जो ज़मीन में रहती थीं उनकी एक ही भाषा थी उस समय तक कि उनमें से एक गिरोह बाबिल में नहीं पहुँचा था। फिर बाबिल में पहुंचने के बाद ख़ुदा तआला ने उनकी भाषाएँ भिन्न-भिन्न कर दीं और भाषाओं में भिन्नता यों डाली गई कि बाबिल के निवासी विभिन्न देशों में निकाल दिए गए जैसा कि इसी अध्याय की यह आठवीं आयत इस पर दलालत करती है और वह यह है-

ویفص یھوہ آتم مِشّم عَلْ بنی کل ھارص

अर्थात ख़ुदा ने उन को वहां से सब ज़मीन पर परेशान कर दिया। अब स्पष्ट है कि वे लोग बाबिल से बिखर कर प्रत्येक देश में चले गए, तो کل ھارص का शब्द जो पहली आयत में इस बात को प्रकट करने के लिए आया है कि समस्त संसार की एक भाषा थी वही शब्द आठवीं आयत में इस बात के लिए प्रयोग हुआ कि बाबिल के निवासी ख़ुदा के प्रकोप के पात्र होकर समस्त संसार में बिखर गए। अत: इन दोनों आयतों की परस्पर सहायता से और पिछले अध्याय को देखने से भली भांति सिद्ध हो गया कि इन आयतों का मतलब यही है कि बाबिल की घटना से पहले संसार में एक ही भाषा थी और यही ईसाइयों-यहूदियों की सर्व सम्मत आस्था है। और जिसने इस बारे में सन्देह किया उसे बड़ी ग़लती लगी है। यह मामला तौरात के स्पष्ट आदेश में से है जो हमेशा से अहले किताब में मान्य चला आता है। हाँ यह मानना पड़ता है कि पैदायश अध्याय-11, आयत-1 के अनुसार समस्त संसार की भाषा एक ही थी तो फिर यह व्यर्थ विचार होगा कि हम ऐसा समझें कि समस्त इन्सान अपने-अपने देशों से कूच करके बाबिल में ही आकर ठहर गए थे और इस का कोई कारण ज्ञात नहीं

होता कि क्यों उन्होंने अपने देशों को छोड़ दिया था। अपितु असल बात यह ज्ञात होती है कि चूंकि **नूह** के तूफ़ान के बाद ख़ुदा तआला का इरादा था कि बहुत जल्द संसार अपनी सन्तान पैदा करने और नस्ल बढ़ाने में उन्नति करे। इसलिए उस सर्वशक्तिमान ने एक अवधि तक उनको स्वस्थ और अमन की हालत में छोड़ दिया था। तब वे बहुत बढ़े और प्रगति की और उनमें एक विलक्षण उन्नति हुई। तब कुछ क़ौमों ने अपने देश में गुंजायश कम देख कर **सिनआर** की ज़मीन की ओर जो बाबिल की ज़मीन थी, कूच किया और इस स्थान पर आकर इस शहर को आबाद किया और इतनी प्रचुरता हो गई जिसका उदाहरण किसी युग में सिद्ध नहीं होता। फिर वे दूसरे शहरों की ओर बिखर गए और समस्त संसार में भाषाओं की भिन्नता का कारण हुए।

परन्तु यदि यह ऐतराज़ किया जाए कि अरबी भाषा जो समस्त भाषाओं की जननी ठहराई गई है उसके बारे में समस्त भाषाओं का संबंध एक समान नहीं है बल्कि कुछ से कम और कुछ से अधिक है। उदाहरणतया इब्रानी भाषा पर थोड़ा विचार करने से ज्ञात होता है कि वह थोड़े से परिवर्तन के पश्चात अरबी भाषा ही है परन्तु संस्कृत या यूरोप की भाषाओं के साथ वह संबंध नहीं पाया जाता। तो इसका उत्तर यह है कि यद्यपि **इबरानी** और उसकी दूसरी शाखाएं वास्तव में अरबी के थोड़े से परिवर्तन से पैदा हुई हैं और संस्कृत इत्यादि संसार की सब भाषाएं बड़े परिवर्तन से निकली हैं तथापि पूर्ण रूप से विचार करने और नियमों पर दृष्टि डालने से स्पष्ट तौर पर ज्ञात होता है कि इन भाषाओं के वाक्य और मुफ़रद शब्द अरबी से ही परिवर्तित करके भिन्न-भिन्न प्रकार के रूपों में लाए गए हैं।

अरबी की विशेष श्रेष्ठताओं में से जो उसी भाषा से विशिष्ट हैं जिनकी हम इन्शाअल्लाह अपने-अपने स्थान पर व्याख्या करेंगे और जो उसके उम्मुल अलसिन:, पूर्ण तथा इल्हामी भाषा होने पर ठोस तर्क है, पांच ख़ूबियां हैं जो निम्नलिखित हैं-

पहली ख़ूबी- अरबी के मुफ़रदों (एकांकी शब्दों) की व्यवस्था पूर्ण है अर्थात मानवीय आवश्यकताओं को वे मुफ़रद पूरी-पूरी सहायता देते हैं और दूसरे

शब्दकोश इस से वंचित हैं।

दूसरी ख़ूबी- अरबी में स्रष्टा (ख़ुदा तआला) के नाम, संसार के अर्कान के नाम, वनस्पतियाँ, जानवर, स्थूल पदार्थ और मनुष्य के अवयव अपने-अपने नामकरण के कारणों में बड़ी-बड़ी हिकमतपूर्ण विद्याओं पर आधारित हैं और दूसरी भाषाएँ कदापि इसका मुक़ाबला नहीं कर सकतीं।

तीसरी ख़ूबी- अरबी की धातु प्रणाली तथा शब्द प्रणाली भी पूर्ण व्यवस्था रखती है और उस व्यवस्था का दायरा समस्त क्रियाओं और संज्ञाओं को जो एक ही धातु के हैं, दार्शनिकता की श्रृंखला में सम्मिलित करके उसके परस्पर संबंधों को दिखाती है, और यह बात इस ख़ूबी के साथ दूसरी भाषाओं में नहीं पाई जाती।

चौथी ख़ूबी- अरबी की तरकीबों में शब्द कम और अर्थ अधिक हैं। अर्थात् अरबी भाषा अलिफ़, लाम, तन्वीनों (अनुस्वार) और किसी शब्द को आगे या पीछे करने से वह काम निकालती है जिसमें दूसरी भाषाएँ कई वाक्यों के जोड़ने की मुहताज होती हैं।

पांचवीं ख़ूबी- अरबी भाषा ऐसे मुफ़रदों (अर्थात एकांकी शब्दों) और तरकीबों (मिश्रित शब्दों) को अपने साथ रखती है जो मनुष्य की समस्त सूक्ष्म से सूक्ष्म भावनाओं तथा विचारों को अभिव्यक्त करने के लिए पूर्ण माध्यम हैं।

अब चूंकि यह भारी सबूत हमारे ज़िम्मे में है कि हम अरबी के मुफरदों की ऐसी व्यवस्था सिद्ध करें कि दूसरी पुस्तकें उसके मुक़ाबले से असमर्थ रहें और उसकी शेष चार ख़ूबियों को भी इसी प्रकार सबूत तक पहुंचाएं। इसलिए हमारे लिए आवश्यक हुआ कि हम इन बहसों को अरबी भाषा में ही लिखें। क्योंकि हमारा यह कर्तव्य है कि ये समस्त खूबियां विपक्षी को दिखाएं और यदि वह किसी अन्य भाषा को इल्हामी तथा समस्त भाषाओं की मां ठहराता है तो उस से इन ख़ूबियों की मांग करें। चूंकि यह बड़ा भारी कार्य है इसलिए मैंने इसे समय और अवस्था के अनुकूल समझा कि विपक्षी को पूर्ण रूप से दोषी और खामोश करने के लिए कोई ऐसा उपाय किया जाए जिस से इन सब झूठे बहानों का उन्मूलन हो जाए जिनको एक विपक्षी मुक़ाबले से असमर्थ होकर केवल व्यर्थ बहाने बना

कर प्रस्तुत कर सकता है। उदाहरणतया एक विरोधी आर्य अपना पीछा छुड़ाने के लिए कह सकता है कि इन **पांच ख़ूबियों** में अरबी की विशिष्टता का दावा बिना सबूत है क्योंकि यह दावा उस समय सही ठहर सकता है कि जब तुम्हें संस्कृत की पूर्ण जानकारी होती। अब जबकि संस्कृत की ऐसी जानकारी नहीं है तो यह दावा केवल एक पक्षीय विचार है। संभव है कि एक पक्षीय विचार छान-बीन के समय ग़लत निकले। यद्यपि हम इस व्यर्थ विचार का उत्तर दे चुके हैं कि हमारी ये जांच-पड़तालें एक समूह की जांच-पड़ताल है जिसमें संस्कृत विद भी हैं। परन्तु अब हम पूर्ण रूप से हुज्जत पूरी करने के लिए एक ऐसा निर्णायक तरीका लिखते हैं जिस से कोई इन्कार नहीं कर सकता। और वह यह है कि यदि हम इस दावे में झूठे हैं कि अरबी में वे पांच खूबियां विशेष तौर पर मौजूद हैं जो हम लिख चुके हैं और कोई संस्कृत विद इत्यादि इस बात को सिद्ध कर सकता है कि उनकी भाषा भी इन ख़ूबियों में अरबी की भागीदार और उसके समान है या उस पर विजयी है तो हम **उसे पांच हज़ार रूपए** अविलम्ब देने के लिए निश्चित और अटल वादा करते हैं। और स्मरण रहे कि हमारा ईनाम देने का यह वादा सामान्यजन के व्यर्थ विज्ञापनों की तरह नहीं ताकि कोई यह समझे कि केवल कहने की बातें हैं किसने देना और किसने लेना। बल्कि हम घोषणा करते हैं कि ऐसा व्यक्ति जिस प्रकार चाहे अपनी संतुष्टि कर ले और यदि चाहे तो यह रुपया सरकारी बैंक में रखा जाए और चाहे तो किसी आर्य महाजन के पास जमा करा दिया जाए। यदि हम उसके निवेदन के अनुसार जमा न कराएं या निवेदन के प्रकाशित होने और रजिस्टर्ड पत्र द्वारा हम तक पहुंचने के बाद एक माह तक हम रुपया जमा न कराएं तो निस्सन्देह हम झूठे और डींगियाँ ठहरेंगे और हमारी समस्त कारवाई विश्वास से गिर जाएगी, परन्तु यह आवश्यक होगा कि जो व्यक्ति जमा कराने का निवेदन करे वह उस निवेदन में यह भी लिख दे कि वह अमुक अवधि (मुद्दत) तक इस कार्य को पूरा करेगा और इस बात का इक़रार कर दे कि यदि वह उस अवधि तक दायित्व पूरा न कर सका और मुक़ाबला करके न दिखा सका तो जजों या अदालत के प्रस्ताव से जो कुछ

जुर्माना एक व्यापार के रुपए का कथित समय तक बंद रहने से अनुमानित है, वह बिना किसी बहाने के अदा कर देगा।

और स्पष्ट हो कि यह पुस्तक लगभग डेढ़ माह के परिश्रम और प्रयास से हमने तैयार की है। अत: अप्रैल 1895 ई. के कुछ दिन गुज़रे यह कार्य आरम्भ हुआ और मई 1895 ई. अभी कुछ शेष रहता था कि अन्त को पहुँच गया। इन परिश्रमों के दिनों में इस कार्य के लिए पूरा दिन कभी नहीं लगा अपितु अधिक से अधिक तीसरा या चौथा भाग इस चिन्ता में खर्च होता रहा और यदि सब दिन परिश्रम किया जाता तो शायद सप्ताह या दस दिन तक यह कार्य पूरा हो जाता। किन्तु अब मुक़ाबले पर लिखने वालों को यह परिश्रम नहीं करना पड़ेगा जो हमें करना पड़ा। क्योंकि हमारे लिए आवश्यक था कि समस्त भाषाओं पर एक गहरी दृष्टि डालें और अरबी भाषा का उन से परस्पर मेल-मिलाप सिद्ध करें और फिर परस्पर मेल-मिलाप के सबूत के बाद यह आवश्यक था कि अरबी की विशेष श्रेष्ठताओं और विलक्षण ख़ूबियों से उसका इल्हामी और समस्त भाषाओं की मां होना पुख्ता सबूत तक पहुंचाएं। परन्तु हमारे विपक्षियों के लिए यह आवश्यक नहीं कि इतनी मेहनत करें अपितु हम इस बात पर सहमत है कि केवल अरबी की विशेषताओं के मुक़ाबले पर अपनी भाषा की श्रेष्ठताएँ दिखाएँ और जितनी हमने अरबी भाषा की खूबियां इस पुस्तक में सिद्ध की हैं वे समस्त खूबियां अपनी भाषा में सिद्ध करके प्रस्तुत करें। और जैसा कि हमने नमूने के तौर पर अरबी भाषा के मुफ़रदों को इबारतों के क्रम में लिख कर यह सिद्ध किया है कि अरबी मुफ़रदों की व्यवस्था कामिल (पूर्ण) है, और हर प्रकार के विचारों को व्यक्त कर देने पर समर्थ है। यही नमूना अपनी भाषा के मुफ़रदों से वे भी दिखा दें और यह कार्य बहुत थोड़ा और केवल कुछ दिनों का है। तो इस स्थिति में मेहनत का कार्य अत्यन्त कम रह गया, अपितु उदाहरणतया वैदिक संस्कृत का जानने वाला केवल दो-चार दिन में यह नमूना प्रस्तुत कर सकता है बशर्ते कि संस्कृत में ऐसा नमूना भी हो। इस समय हम अन्य भाषा वालों से क्या मांगते हैं केवल यही कि वे ये ख़ूबियां जो हमने अरबी भाषा में सिद्ध की हैं अपनी भाषा में सिद्ध कर के

दिखा दें। उदाहरणतया यह बात स्पष्ट है कि पूर्ण भाषा के लिए मुफ़रदों की पूर्ण व्यवस्था आवश्यक है। अर्थात् यह अनिवार्य है कि पूर्ण भाषा जो इल्हामी और उम्मुल अलसिनः (समस्त भाषाओं की माँ) कहलाती है मानवीय विचारों को शब्दों के ढांचे में ढालने के समय अपने अन्दर मुफ़रदों का पूर्ण भण्डार रखती हो इस प्रकार से कि जब मनुष्य उदाहरणतया एक तौहीद के निबंध के संबंध में या शिर्क के निबंध के बारे में या उनके तर्कों के सम्बंध में या प्रेम और मेल-मिलाप के सम्बंध में या अल्लाह तआला के अधिकारों के बारे में या बन्दों के अधिकारों के बारे में या धार्मिक आस्थाओं के बारे में या बैर और नफ़रत के बारे में या ख़ुदा तआला की स्तुति और यशोगान और उस के पवित्र नामों के बारे में या झूठे धर्मों के खण्डन के बारे में या क़िस्सों और जीवन-चरित्रों के बारे में या आदेशों और दण्डों के बारे में या परलोक के ज्ञान के बारे में या व्यापार, खेती-बाड़ी और नौकरी के बारे में या नक्षत्र और खगोल के बारे में या भौतिकी, चिकित्सा और तर्कशास्त्र के बारे में कोई व्याख्यात्मक बात करना चाहे तो उस भाषा के मुफ़रद उसे इस प्रकार से सहायता दे सकें कि प्रत्येक विचार के मुक़ाबले पर जो हृदय में उत्पन्न हो, एक मुफ़रद शब्द मौजूद हो ताकि यह मामला इस बात पर दलील हो कि जिस पूर्ण अस्तित्व ने मनुष्य और उसके विचारों को पैदा किया उसी ने उन विचारों के व्यक्त करने के लिए हमेशा से वे मुफ़रद भी पैदा कर दिए और हमारा हार्दिक न्याय इस बात को स्वीकार करने के लिए हमें विवश करता है कि यदि यह विशेषता किसी भाषा में पाई जाए कि वह भाषा मानवीय विचारों की आकृति के अनुसार मुफ़रदों की सुन्दर शैली अपने अन्दर तैयार रखती है और प्रत्येक बारीक अन्तर जो कार्यों में पाया जाता है वही बारीक अन्तर कथनों के द्वारा दिखाती है और उसके मुफ़रद शब्द विचारों की समस्त आवश्यकताओं के पूरक हैं तो वह भाषा निःसंदेह इल्हामी है। क्योंकि यह ख़ुदा तआला का कार्य है जो उसने मनुष्य को हज़ारों प्रकार के विचार व्यक्त करने के लिए समर्थ पैदा किया है। इसलिए आवश्यक था कि उन्हीं विचारों के अनुमान के अनुसार उसको उन कथनों के मुफ़रदों का भण्डार भी दिया जाता, ताकि ख़ुदा तआला का कथन

और कर्म एक ही श्रेणी पर हो। किन्तु आवश्यकता पड़ने पर तरकीब से काम लेना यह बात किसी विशेष भाषा से विशिष्टता नहीं रखती। हज़ारों भाषाओं पर यह सामान्य विपत्ति और दोष है कि वह मुफ़रदों के स्थान पर मिश्रित (शब्दों) से काम लेती हैं जिस से स्पष्ट है कि आवश्यकताओं के समय वे मिश्रित (शब्द) मनुष्यों ने स्वयं बना लिए हैं। तो जो भाषा उन आफ़तों से सुरक्षित होगी और अपनी ज़ात में मुफरदों से काम निकालने की विशेषता रखेगी और अपने वाक्यों को ख़ुदा तआला के कर्म के अनुसार अर्थात् विचारों के आवेगों के अनुसार और उनके समतुल्य दिखाएगी निःसन्देह वह एक विलक्षण श्रेणी की होकर और समस्त भाषाओं की अपेक्षा एक विशिष्टता उत्पन्न करके इस योग्य हो जाएगी कि उसको असल इल्हामी भाषा और अल्लाह की प्रकृति कहा जाए और जो भाषा इस उच्च श्रेणी से विशिष्ट हो कि वह ख़ुदा तआला के मुंह से निकली और विलक्षण ख़ूबियों से विशिष्ट तथा उम्मुल अलसिनः (समस्त भाषाओं की माँ है) है उसके बारे में यह कहना ईमानदारी का कर्त्तव्य होगा कि वही एक भाषा है जो वास्तविक तौर पर इस योग्य ठहराई गई है कि ख़ुदा तआला का उच्चतम और पूर्ण इल्हाम उसी में उतरे और दूसरे इल्हाम उस इल्हाम की ऐसी शाखा हैं जैसा कि दूसरी बोलियां उस बोली की शाखा हैं। इसलिए हम इस बहस के बाद इस बहस को लिखेंगे कि वह वास्तविक और सर्वांगपूर्ण वह्यी जो संसार में आने वाली थी वह केवल पवित्र क़ुर्आन है और इन्हीं मुक़द्दमों (भूमिकाओं) से इस परिणाम को विस्तारपूर्वक व्यक्त करेंगे कि अरबी को समस्त भाषाओं की माँ और इल्हामी मानने से न केवल यही मानना पड़ता है कि क़ुर्आन ख़ुदा तआला का कलाम है अपितु यह भी निश्चित तौर पर मानना पड़ता है कि केवल क़ुर्आन ही है जिसे वास्तविक वह्यी, सर्वांगपूर्ण और ख़ातमुल कुतुब कहना चाहिए। और अब हम मुफ़रदों की व्यवस्था दिखाने के लिए तथा अन्य ख़ूबियों की दृष्टि से इस पुस्तक का अरबी भाग आरंभ करेंगे

وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيْمِ۔

चेतावनी

इस से पूर्व कि हम इस पुस्तक के अरबी भाग को आरंभ करें यह बात व्यक्त करना आवश्यक है कि हमने पहले इरादा किया था कि केवल अरबी के मुफ़रद शब्दों को एकत्र करके दिखा दें। किन्तु फिर हमने सोचा कि इस स्थिति में शायद कुछ लोग हमारे उद्देश्य को सफ़ाई से न समझ सकें क्योंकि देखने में थोड़े-बहुत मुफ़रद प्रत्येक क़ौम के पास हैं। उदाहरण के तौर पर यद्यपि संस्कृत में मुफ़रदों का भण्डार बहुत ही कम है। तथापि उस भाषा के विद्वान वर्णन करते हैं कि उसमें चार-सौ रूट से अधिक नहीं। परन्तु फिर भी यद्यपि चार-सौ हैं किन्तु यह नहीं कह सकते कि कुछ भी नहीं और अरबी के अन्वेषकों ने यद्यपि अन्वेषण किया है कि इसके मुफ़रद सत्ताईस लाख से भी अधिक हैं परन्तु जब तक एक पक्षपाती शत्रु को एक नियम के साथ दोषी न किया जाए वह अपनी संकीर्णता, बुराई और चूँ चरा करने से नहीं रुकता। इसलिए हमें यह प्रस्ताव नितान्त उचित मालूम हुआ कि प्रत्येक निबंध में मुफ़रदों की व्यवस्था मांगी जाए। और मुफ़रदों की व्यवस्था से हमारा तात्पर्य यह है कि प्रत्येक विषय जहां तक कि स्वभाविक तौर पर समाप्त हो उसे केवल ऐसी इबारत से जो मुफ़रदों से ही तरकीब पाती हो अंजाम तक पहुंचाया जाए और फिर विरोधियों से उसका नमूना मांगा जाए। यह एक ऐसा उपाय है जिस से बड़ी सफ़ाई से निर्णय हो जाएगा। और प्रत्येक भाषा की सरसता, सुबोधता का भी अनुमान हो जाएगा। इसके अतिरिक्त चूंकि मुफ़रदों की व्यवस्था सिद्ध करने के लिए प्रत्येक पक्ष के लिए यह आवश्यक होगा कि वह केवल फ़ुटकर मुफ़रदों को प्रस्तुत न करे बल्कि उन आवश्यक निबंधों के रूप में प्रस्तुत करे जो हमारे निबंधों के मुक़ाबले में लिखे जाएंगे। इसलिए इस विद्वतापूर्ण बहस में प्रत्येक अज्ञानी जो ज्ञान से वंचित हो हस्तक्षेप नहीं कर सकेगा। और जैसा कि इस से पूर्व उदाहरण के तौर पर आर्य समाज वालों ने अत्यन्त अधम, अज्ञानी और नितान्त मूर्ख और असभ्य लेखराम नामक एक हिन्दू को इस्लाम के मुक़ाबले पर खड़ा कर दिया था और वह केवल गालियों से काम

लेता था और ईसाइयों का चेला बनकर उनके बेहूदा ऐतराज़ जो उनके असभ्यों ने इस्लाम पर किए हैं प्रस्तुत करता था। इस बहस में ऐसा न होगा क्योंकि यह ज्ञान सम्बन्धी बहस है अब ऐसे अवैध चरित्र, अपवित्र प्रकृति, द:शील और इसके साथ नितान्त धूर्त और अज्ञानी को बोलने की गुंजायश नहीं रहेगी और लोग देख लेंगे कि इन लोगों की असल वास्तविकता क्या थी।

और हम यहां अपने उन मित्रों का **धन्यवाद** करने से रह नहीं सकते जिन्होंने हमारे इस कार्य में भाषाओं का परस्पर मेल-मिलाप सिद्ध करने के लिए सहायता दी है। हम नितान्त प्रसन्नता पूर्वक इस बात को अभिव्यक्त करते हैं कि हमारे निष्ठावान मित्रों ने **भाषाओं का परस्पर मेल-मिलाप** सिद्ध करने के लिए वह कठिन परिश्रम किया है जो नि:सन्देह उस समय तक इस संसार में यादगार रहेगा जब तक यह संसार आबाद रहे। इन **ख़ुदा के मर्दों** ने बड़ी बहादुरी से अपने प्रिय समय हमें दिए हैं और दिन-रात बड़ी मेहनत और कठिन परिश्रम करके इस **महान कार्य** को पूर्ण कर दिया है। मैं जानता हूँ कि उनको ख़ुदा के यहां बड़ा ही पुण्य प्राप्त होगा क्योंकि वे एक ऐसे युद्ध में सम्मिलित हुए जिसमें शीघ्र ही इस्लाम की ओर से विजय के नगाड़े बजेंगे। अत: उनमें से प्रत्येक **ख़ुदाई मैडल** पाने का अधिकारी है। मैं इस हालत को वर्णन नहीं कर सकता कि वे कैसे प्रत्येक सभा में परस्पर मेल-मिलाप निकालने के लिए अन्दर ही अन्दर सैकड़ों कोस निकल जाते थे और फिर क्योंकर सफलतापूर्वक वापस आकर किसी मेल-मिलाप वाले शब्द का तुहफ़ा प्रस्तुत करते थे। यहां तक कि इसी प्रकार संसार की भाषाएं हमारे पास जमा हो गईं। मैं इसे कभी नहीं भूलुंगा कि इस महान कार्य में हमारे निष्ठावान मित्रों ने वह सहायता की है कि मेरे पास वे शब्द नहीं जिनके द्वारा मैं उनका वर्णन कर सकूँ। और मैं **दुआ** करता हूँ कि ख़ुदा तआला उनकी ये मेहनतें स्वीकार करे और उनको अपने लिए स्वीकार कर ले और अपवित्र जीवन से हमेशा दूर और सुरक्षित रखे और अपना **प्रेम** तथा **शौक़** प्रदान करे और उनके साथ हो। **आमीन सुम्मा आमीन**। उन मित्रों के नाम ये हैं:-

(1)- मेरे भाई हकीम मौलवी **नूरुद्दीन** साहिब भैरवी

(2)- मेरे भाई मौलवी **अब्दुल करीम** साहिब सियालकोटी

(3)- मेरे भाई मुंशी **ग़ुलाम** क़ादिर साहिब सियालकोटी

(4)- मेरे भाई **ख़्वाजा कमालुद्दीन** साहिब बी.ए. लाहौरी

(5)- मेरे भाई मिर्ज़ा ख़ुदा बख़्श साहिब अत्तालीक, नवाब मुहम्मद अली खां साहिब कोटला मालेर

(6)- मेरे भाई मुफ़्ती मुहम्मद सादिक़ साहिब भैरवी

(7)- मेरे भाई मुंशी **ग़ुलाम मुहम्मद** साहिब सियालकोटी

(8)- मेरे भाई मियां **मुहम्मद खां** साहिब कपूरथला रियासत

और ख़ुदा तआला अधिक जानता है कि इस कार्य में किसकी कोशिशें अधिक हैं। वह किसी निष्ठावान की मेहनत को व्यर्थ नहीं करेगा। परन्तु जहाँ तक हमारी जानकारी और दृष्टि हमें जतलाती है वह यह है कि सबसे अधिक कोशिश **मेरे भाई हकीम मौलवी नूरुद्दीन साहिब** और मेरे भाई मौलवी **अब्दुल करीम साहिब** की है जो समस्त संबंध छोड़ कर कई महीनों से इस कार्य के लिए मेरे पास मौजूद हैं और हज़रत मौलवी नूरुद्दीन साहिब ने न केवल इतनी ही सहायता दी अपितु इस कार्य के लिए अच्छी-अच्छी अंग्रेज़ी पुस्तकें अपने पास से ख़रीद कर मंगवा दीं और इसी उद्देश्य के लिए बहुमूल्य पुस्तकों का भण्डार एकत्र किया।

अल्लाह तआला उन्हें इसका उत्तम प्रतिफल प्रदान करे। अल्लाह तआला उपकार करने वालों का प्रतिफल नष्ट नहीं करता। आमीन।

यह वह पहला ख़ुत्बा और प्रस्तावना है जिसका मुक़ाबला मुफ़रदों की व्यवस्था में संस्कृत के दावेदार आर्यों तथा अन्य क़ौमों से अभीष्ट है।

بسم الله الرحمٰن الرحيم

الحمد لله الرّب الرّحمان۔ ذی المجد و الفضل و الاحسان۔ خلق★

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

समस्त प्रशंसाएं उस अल्लाह को जो रब्ब और रहमान है। बुज़ुर्गी और फ़ज़्ल (कृपा) और उपकार उसकी विशेषताएं हैं। इन्सान पैदा किया★ और उसे

★हाशिया :- चूंकि अरबी इबारतों के लिखने से वास्तविक उद्देश्य यह दिखाना है कि यह भाषा इस विशेष गुण के अतिरिक्त कि इलाहीयात (ब्रहमज्ञान) और धार्मिक शिक्षा की समस्त शाख़ाओं की पूर्ण रूप से सेवक है और प्रत्येक क़िस्सा और ख़ुत्बा, प्रारंभिक बातों और उद्देश्यों के वर्णन करने में तथा प्रत्येक बारीक से बारीक विषय को व्यक्त करने के समय केवल मुफ़रदों से काम लेती है और उसके भण्डारों में वह मुफ़रदों की व्यवस्था मौजूद है जो प्रत्येक क़िस्से को पूर्णत: वर्णन करता है और मिश्रितों की आवश्यकता नहीं पड़ती। इसलिए हमने इस ख़ुत्बे और प्रस्तावना के समय और इसी प्रकार कुछ निबंधों में जो बाद में आएंगे यह इरादा किया है कि पाठकों को अरबी की उन ख़ास विशेषताओं की ओर ध्यान दिलाएं ताकि यदि संभव हो तो हमारे विरोधी उसका मुकाबला करके दिखाएं। और यदि हो सके तो अपनी भाषा को इस धब्बे से पवित्र कर दें कि वह प्रत्येक शानदार बात को वर्णन करने में केवल मुफ़रदों से काम पूरा करने में असमर्थ है। और यदि ऐसा न कर सकें तो यद्यपि वे संस्कृत के हामी हों या किसी अन्य भाषा के, उन्हें इस बात से शर्म करनी चाहिए कि वे कभी किसी मज्लिस में अरबी भाषा के मुक़ाबले पर अपनी भाषाओं का नाम भी लें या कभी भूले बिसरे भी मुंह पर लाएं कि हमारी भाषा भी ख़ुदा की भाषा है और इसी में ख़ुदा की वाणी उतरी है।

अब स्पष्ट हो कि इस ख़ुत्बे और प्रस्तावना में तीन सौ कलिमे (शब्द) हैं जो मुफ़रद कलिमे हैं और कुछ ऐसे कलिमे हम ने छोड़ भी दिए हैं जो एक ही तत्त्व से निकले हैं और ये कलिमे सैकड़ों विचित्रताओं और सूक्ष्मताओं पर आधारित हैं। और यदि हम उनकी अद्भुत विशेषताओं का वर्णन करें तो उन सब का लिखना वास्तव में बहुत विस्तार चाहता है। इसलिए हम यहां क्रियात्मक तौर पर केवल दो शब्दों की ख़ूबियाँ बतौर नमूना प्रस्तुत करेंगे और फिर समय-समय पर इन्शा अल्लाह प्रस्तुत करते जाएंगे। परन्तु इस से पूर्व इस नितान्त लाभप्रद नियम का लिखना अनिवार्य है कि प्रकृति पर दृष्टि डालने से यह बात निश्चित तौर पर स्वीकार

الانسان۔ علّمه البیان۔ ثم جعل من لسان واحدة السنة فی البلدان۔ کما جعل من لون واحد انواع الالوان۔ وجعل العربیة اُمّا لکل لسان۔ وجعلها کالشمس بالضوء واللمعان۔ هو الذی نطق

बोलना सिखाया फिर एक भाषा से कई भाषाएँ शहरों में कर दीं, जैसा कि एक रंग से भिन्न-भिन्न प्रकार के कई रंग बना दिए और अरबी को प्रत्येक भाषा की मां ठहराया और उसको चमक तथा प्रकाश में सूर्य के समान बनाया वही है जिसकी

शेष हाशिया :- करनी पड़ती है कि जो चीज़ें ख़ुदा तआला के हाथ से पैदा हुईं या उस से जारी हुईं उनकी पहली निशानी यही है कि अपनी-अपनी श्रेणी के अनुसार ख़ुदा की पहचान कराने के मार्गों में सहायक हों और अपने अस्तित्व का वास्तविक उद्देश्य कथनी या करनी से यही व्यक्त करें कि वह ख़ुदा की मारिफ़त का माध्यम और उसी के मार्ग के सेवक हैं। क्योंकि समस्त सृष्टि पर ध्यानपूर्वक दृष्टि डालने से यही सिद्ध होता है कि कायनात (ब्रह्माण्ड) का सम्पूर्ण सिलसिला नाना प्रकार की पद्धतियों में इसी कार्य पर लगा हुआ है ताकि वह ख़ुदा तआला के पहचानने तथा उसके मार्गों के जानने में एक माध्यम हो। तो चूंकि अरबी भाषा ख़ुदा तआला से जारी हुई और उसके मुंह से निकली है, इसलिए आवश्यक था कि इसमें भी यह निशानी मौजूद हो ताकि निश्चित तौर पर पहचाना जाए कि वह वास्तव में उन चीज़ों में से है जो मानवीय प्रयत्नों के माध्यम के बिना केवल ख़ुदा तआला की ओर से प्रकटन में आई हैं। अत: अल्हम्दुलिल्लाह कि अरबी भाषा में यह निशानी नितान्त स्पष्ट और साफ़ तौर पर पाई जाती है, और जैसा कि मनुष्य की अन्य शक्तियों के बारे में विषय आयत

وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْاِنْسَ اِلَّا لِيَعْبُدُوْنَ * (अज्ज़ारियात-51/57)

से सिद्ध और प्रमाणित है। इसी प्रकार अरबी भाषा में जो मनुष्य की असली भाषा और उसकी पैदायश का अंग है यही वास्तविकता सिद्ध है। इसमें क्या सन्देह है कि मनुष्य की पैदायश उसी हालत में सर्वांगपूर्ण ठहर सकती है जब कलाम की पैदायश (उत्पत्ति) भी उसमें सम्मिलित हो। क्योंकि वह चीज़ जो इन्सानियत के जौहर का चेहरा दिखाती है वह कलाम (वाणी) ही है। कुछ अतिशयोक्ति न होगी यदि हम यह कहें कि इन्सानियत से अभिप्राय यही 'बोली' अपने समस्त आवश्यक अंगों के साथ है। अत: ख़ुदा तआला का यह फ़रमाना कि मैंने इन्सान को अपनी इबादत और मारिफ़त के लिए पैदा किया है वास्तव में दूसरे शब्दों में यह वर्णन है कि मैंने इन्सानी वास्तविकता को जो 'बोली' और कलाम है, उसकी समस्त शक्तियों

---

* और मैंने जिन्नों और इन्सानों को केवल अपनी उपासना के लिए पैदा किया है। (अनुवादक)

بحمده الثقلان۔ واقرّ بربوبيتة الانس والجان۔ تسجد له الارواح
والابدان۔ والقلب واللسان يحمدان۔ سبحان ربّنا ربّ مايُوجدو
مايكون وكان يفعل مايشاء وكل يوم هو فى شان۔ يُسبّح له كل

स्तुति आदमी और जिन्न कर रहे हैं और उसके रब्ब होने का इक़रार करते हैं। रूहें और शरीर उसे सज्दा करते हैं। हृदय और ज़बान उसकी प्रशंसा करने में लगे हुए हैं। हमारा रब्ब पवित्र है जो मौजूदा युग, भविष्यकाल और भूतकाल का रब्ब है जो चाहता है करता है और प्रतिदिन वह एक काम में है। प्रत्येक बोलने

शेष हाशिया :- और कार्यों के साथ जो उसके आदेश के अन्तर्गत चलते हैं अपने लिए बनाया है क्योंकि जब हम सोचते हैं कि मनुष्य क्या चीज़ है तो स्पष्ट तौर पर यही ज्ञात होता है कि वह एक प्राणी है जो अपने 'बोली' के कारण दूसरे प्राणियों से पूर्णतया अन्तर रखता है। तो इससे सिद्ध हुआ कि बोली (वाणी) मनुष्य की असल वास्तविकता है और शेष शक्तियां इस वास्तविकता की आज्ञाकारी और सेवक हैं। अत: यदि ये कहें कि मनुष्य का बोली ख़ुदा तआला की ओर से नहीं तो यह कहना पड़ेगा कि मनुष्य की मानवता ख़ुदा तआला की ओर से नहीं। परन्तु प्रकट है कि ख़ुदा मनुष्य का स्रष्टा है इसलिए भाषा का शिक्षक भी वही है और इस झगड़े के निर्णय के लिए कि वह किस भाषा का शिक्षक है, अभी हम लिख चुके हैं कि उसकी ओर से वही भाषा है जो कथन के अनुसार

وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْاِنْسَ اِلَّا لِيَعْبُدُوْنَ (अज्ज़ारियात-57)

उसी प्रकार ख़ुदा की मारिफ़त की सेवक हो सकती है जैसा कि मनुष्य के अस्तित्व की दूसरी बनावट। और हम वर्णन कर चुके हैं कि इन विशेषताओं से विभूषित केवल अरबी ही है और इसकी सेवा यह है कि वह ख़ुदा की मारिफ़त तक पहुंचाने के लिए अपने अन्दर एक ऐसी शक्ति रखती है जो ब्रह्मज्ञान के एक आन्तरिक विभाजन को जो क़ानून-ए-क़ुदरत में पाया जाता है, बड़ी सुन्दरता के साथ अपने मुफ़रदों में दिखाता है और ख़ुदा की विशेषताओं के कोमल और सूक्ष्म अन्तरों को जो प्रकृति में प्रकट हैं और इसी प्रकार तौहीद (एकेश्वरवाद) के तर्कों को जो इसी प्रकृति से स्पष्ट हैं और ख़ुदा तआला के नाना प्रकार के इरादों को जो उसके बन्दों से संबंधित और प्रकृति में प्रकट हैं इस प्रकार से प्रकट कर देती है कि मानो उनका एक नितान्त उत्तम नक्शा खींचकर सामने रख देती है। और उन सूक्ष्म अंतरों को जो ख़ुदा तआला के नामों, विशेषताओं, कार्यों और इरादों में मौजूद हैं जिनकी गवाही उस का क़ानून-ए-क़ुदरत दे रहा है ऐसी सफ़ाई से दिखा देती है कि मानो उसके चित्र को आँखों के

ناطق و صامت و یبغی رحمہ کل زائغ و سامتٍأ وھو رب العالمین
لہ الحمدو المجدو ھو مولی النعم فی الاولیٰ و الاخرۃ و الصلوۃ
و السلام علی رسولہ سید الرسل و نور الامم و خیر البریّۃ و

वाला और बोलने वाला उसकी पवित्रता वर्णन करने में व्यस्त है। और प्रत्येक टेढ़ी चाल चलने वाला और सदाचारी उसकी दया चाहता है और वह समस्त लोकों का प्रतिपालक है। उसी के लिए प्रशंसा और बुज़ुर्गी मान्य है और वह दोनो लोकों में नेमत का मौला है और सलाम तथा दरूद उसके रसूल पर जो रसूलों का सरदार

शेष हाशिया :- सामने ले आती है। अत: यह बात बड़ी स्पष्टतापूर्वक ज्ञात होती है कि ख़ुदा तआला ने अपनी विशेषताओं, कार्यों और इरादों का चेहरा दिखाने तथा अपने कथन और कर्म की अनुकूलता के लिए अरबी भाषा को एक समर्थ सेवक पैदा किया है और अनादि काल से यही चाहा है कि ख़ुदाई के गुप्त और ताले में बंद रहस्य के लिए यही भाषा कुंजी हो। और जब हम इस रहस्य तक पहुँचते हैं और अरबी की यह विचित्र श्रेष्ठता और विशेषता हम पर खुलती है तो अन्य समस्त भाषाएँ घोर अन्धकार और क्षति में पड़ी हुई दिखाई देती हैं। क्योंकि जिस प्रकार अरबी भाषा ख़ुदा की विशेषताओं और उसकी समस्त शिक्षाओं के लिए आमने-सामने रखे दर्पणों के समान है और ब्रह्मज्ञान के प्राकृतिक नक़्शे का एक सीधी प्रतिबिम्बित रेखा अरबी में पड़ी हुई दिखाई देती है। यह रूप किसी अन्य भाषा में कदापि मौजूद नहीं। और जब हम सद्‌बुद्धि और सद् विवेक से ख़ुदा की विशेषताओं के उस विभाजन पर दृष्टि डालते हैं जो अनादि काल से संसार में प्राकृतिक तौर पर पाया जाता है तो हमें वही विभाजन अरबी के मुफ़रदों में मिलता है। उदाहरणतया जब हम विचार करते हैं तो ख़ुदा तआला का रहम बौद्धिक अन्वेषण की दृष्टि से अपने प्रारम्भ के विभाजन में कितने भागों पर आधारित हो सकता है तो इस क़ानून-ए-क़ुदरत को देख कर जो हमारी दृष्टि के सामने है हमें स्पष्ट तौर पर समझ आ जाता है कि वह दया (रहम) दो प्रकार की है अर्थात् कर्म से पूर्व और कर्म के पश्चात। क्योंकि बन्दे के भरण-पोषण की व्यवस्था उच्च स्वर में गवाही दे रही है कि ख़ुदा की दया (रहम) दो प्रकार से अपने प्रारंभिक विभाजन के अनुसार लोगों पर प्रकट हुआ है।

प्रथम वह रहमत (दया) जो किसी कर्मी के कर्म के बिना बन्दों को प्राप्त हुई जैसा कि पृथ्वी और आकाश, सूर्य, चन्द्रमा, नक्षत्र, जल, वायु, अग्नि और वे समस्त नेमतें जिन पर मनुष्य की अनश्वरता और जीवन निर्भर है, क्योंकि निस्संदेह ये समस्त वस्तुएं मनुष्य के लिए दया स्वरूप हैं जो बिना किसी अधिकार के मात्र कृपा और उपकार के तौर पर उसे प्रदान हुई

اصحابه الهادين المهتدين و اٰله الطيبين المطهرين و جميع
عباد الله الصّالحين امّا بعد فيقول عبد الله الاحد احمد عافاه الله
و ايّدانى كنتُ مولعًا مِنْ شَرخ الزمان بتحقيق المذاهب و الاديان

और उम्मतों का नूर और सम्पूर्ण सृष्टि से उत्तम है और उसके अस्हाब पर जो हादी और मुहतदी हैं और उसकी आल (सन्तान) पर जो तय्यब और पवित्र हैं और ख़ुदा के समस्त नेक बन्दों पर। इसके बाद एक ख़ुदा का बन्दा अहमद कहता है (ख़ुदा उसे अमन में रखे और समर्थन में रहे) कि मैं अपने प्रारंभिक काल से ही धर्म की छान-बीन में व्यस्त रहा हूँ। और मैं कभी इस बात पर प्रसन्न नहीं हुआ कि सरसरी

शेष हाशिया :- हैं और यह ऐसी विशेष दानशीलता है कि मनुष्य के मांगने का भी इस में कुछ हस्तक्षेप नहीं अपितु उसके अस्तित्व से भी पहले है। और ये चीज़ें ऐसी बड़ी दया है कि मनुष्य का जीवन इन्हीं पर निर्भर है। और फिर इसी प्रकार यह बात भी ज़ाहिर है कि ये समस्त चीज़ें मनुष्य के किसी शुभ कर्म से पैदा नहीं हुईं अपितु इन्सान के गुनाह का ज्ञान भी जो ख़ुदा तआला को पहले से था इन दयाओं के प्रकटन में रुकावट नहीं बना। और कोई आवागमन का मानने वाला यद्यपि कैसा ही अपने पक्षपात और मूर्खता में डूबा हो, परन्तु यह बात तो वह अपने मुंह पर नहीं ला सकता कि यह मनुष्य के ही शुभ कर्मों का फल और परिणाम है कि उसके आराम के लिए पृथ्वी पैदा की गई या उसका अन्धकार दूर करने के लिए सूर्य और चन्द्रमा बनाया गया या उसके किसी शुभ कर्म के प्रतिफल में जल और अनाज पैदा किया गया या उसके किसी संयम और तक़्वा के बदले में सांस लेने के लिए वायु बनाई गई, क्योंकि मनुष्य के अस्तित्व और जीवन से भी पहले ये चीज़ें मौजूद हो चुकी हैं। और जब तक इन वस्तुओं का अस्तित्व पहले न मान लें तब तक मनुष्य के अस्तित्व की कल्पना भी एक असंभव कल्पना है। फिर कैसे संभव है कि ये वस्तुएं जिन का मनुष्य अपने अस्तित्व, जीवन और अनश्वरता के लिए मोहताज था वे मनुष्य के बाद प्रकटन में आई हों। फिर स्वयं मानवीय अस्तित्व जिस उत्तम प्रकार से प्रारम्भ से तैयार किया गया है, ये समस्त वे बातें हैं जो मनुष्य के पूर्ण होने से पहले हैं और यही एक विशेष दया है जिसमें मनुष्य के कर्म, उपासना और कठोर परिश्रम का कुछ भी हस्तक्षेप नहीं।

रहमत (दया) का दूसरा प्रकार वह है जो मनुष्य के शुभ कर्मों पर आधारित होता है कि जब वह अत्यन्त विनयपूर्वक दुआ करता है तो स्वीकार की जाती है और जब वह मेहनत से बीजारोपण करता है तो ख़ुदा की दया उस बीज को बढ़ाती है, यहां तक कि अनाज का एक

ومارضیت قط ببادرة الکلمات وما قنعت بطافی من الخیالات
ککُلِّ غبّی اسیر الجهلات و محبوس الخزعبلات وما اصررتُ
علی باطل ککل جهول ضنین۔ وما حرّکنی الی امرٍ الا عین

बातों पर ही बस करूँ और कभी मैंने सतही विचारों पर सन्तोष नहीं किया। जैसा कि प्रत्येक मंदबुद्धि जो मूर्खता और झूठ में ग्रस्त हो पर्याप्त समझता है और कभी मैंने निर्मूल बातों पर आग्रह न किया। जैसा कि प्रत्येक नासमझ कृपण की आदत है। और कभी किसी चीज़ ने अनुसंधान के अतिरिक्त मुझे किसी बात की ओर हिलाया नहीं और गहराई से देखने के आकर्षण के अतिरिक्त और किसी ने मुझ को किसी

शेष हाशिया :- बड़ा भण्डार उस से पैदा होता है। इसी प्रकार यदि ध्यानपूर्वक देखें तो हमारे प्रत्येक सत्कर्म के साथ चाहे वह धर्म से संबंधित है या दुनिया से, ख़ुदा की दया लगी हुई है और जब हम उन नियमों की दृष्टि से जो ख़ुदाई सुन्नतों (नियमों) में सम्मिलित हैं कोई मेहनत दुनिया या दीन (धर्म) से सम्बन्धित करते हैं तो तुरन्त ख़ुदा की दया हमारे साथ संलग्न हो जाती है और हमारी मेहनतों को हरा-भरा कर देती है। ये दोनों दयाएं इस प्रकार की हैं कि हम इनके बिना जीवित ही नहीं रह सकते। क्या इनके अस्तित्व में किसी को आपत्ति हो सकती है? कदापि नहीं, अपितु यह तो अत्यन्त स्पष्ट बातों में से हैं जिन के साथ हमारे जीवन की सम्पूर्ण व्यवस्था चल रही है। तो जब कि सिद्ध हो गया कि हमारे प्रशिक्षण और पूर्णता के लिए दो दयाओं के दो झरने शक्तिमान कृपालु (ख़ुदा) ने जारी कर रखे हैं और वे उसकी दो विशेषताएं हैं जो हमारे अस्तित्व रूपी वृक्ष की सिंचाई के लिए दो रंगों में प्रकट हुई हैं। तो अब देखना चाहिए कि वे दो झरने अरबी भाषा में प्रतिबिम्बित हो कर किस-किस नाम से पुकारे गए हैं। अत: स्पष्ट हो कि प्रथम प्रकार की दया के अनुसार ख़ुदा तआला को अरबी भाषा में रहमान (कृपालु) कहते हैं और दूसरे प्रकार की दया के अनुसार कथित भाषा में उस का नाम रहीम★ (दयालु) है। इसी खूबी को दिखाने के लिए हम अरबी ख़ुत्बे की प्रथम पंक्ति में ही

★हाशिए का हाशिया :- मजूस (अग्नि पूजक) की किताब दसातीर में ये वाक्य हैं कि "बनाम ईज़द बख्शाइन्दह बख्शायश गर मेहरबान दाद गर" जो देखने में बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम के समान हैं परन्तु जो शब्द रहमान और रहीम में हिकमत से परिपूर्ण अन्तर है वह अन्तर इन शब्दों में मौजूद नहीं और जो 'अल्लाह' की संज्ञा विशाल अर्थ रखती है वह 'ईज़द' के शब्द में कदापि नहीं पाए जाते। इसलिए पारसियों की यह तरकीब बिस्मिल्लाह से कुछ समानता नहीं रखती। संभवत: ये शब्द बाद में चोरी के तौर पर लिखे गए हैं। बहरहाल यह दोष दलालत करता है कि यह मनुष्य का कथन है। इसी से।

لتحقیق۔ وما جرّنی الٰی عقیدۃ الّا قائد التعمیق وما فھمنی الاّ ربّی
الذی ھو خیر المفھمین۔ وانہ کشف علیّ اسرارًا من الحقائق
وانزل علی عھاد المعارف والدقائق واعطانی مایعطی المخلصین

आस्था की ओर आकर्षित नहीं किया और ख़ुदा के अतिरिक्त मुझे किसी ने नहीं समझा और वह सब समझाने वालों से उत्तम है। उसने सच्चाइयों के कई भेद मुझ पर खोले और मुझ पर मआरिफ़ और रहस्यपूर्ण बातों की वर्षाएं कीं। और मुझे वे नेमतें दीं जो निष्कपट लोगों को दिया करता है। तो जबकि मैंने उसकी कृपा से

शेष हाशिया :- रहमान का शब्द लाए हैं। अब इस नमूने को देख लो कि चूंकि यह रहम (दया) की विशेषता अपने प्रारंभिक विभाजन की दृष्टि से ख़ुदाई क़ानून-ए क़ुदरत के दो प्रकारों पर आधारित थी, अत: उसके लिए अरबी भाषा में दो मुफ़रद शब्द मौजूद हैं। और यह नियम सत्याभिलाषी के लिए नितान्त लाभप्रद होगा कि हमेशा अरबी के बारीक अन्तरों के पहचानने के लिए ख़ुदा की विशेषताओं और कार्यों को जो क़ानून-ए-क़ुदरत में प्रकट है, कसौटी ठहराया जाए और उनके प्रकारों को जो क़ानून-ए-क़ुदरत से प्रकट हों अरबी के मुफ़रदों में ढूँढा जाए और जहां कहीं अरबी के ऐसे पर्याय शब्दों का परस्पर अन्तर प्रकट करना अभीष्ट हो जो ख़ुदा की विशेषताओं और कार्यों के संबंध में हैं तो ख़ुदा की विशेषताओं और कार्यों के इस विभाजन की ओर ध्यान दें जो क़ानून-ए-क़ुदरत की व्यवस्था दिखा रहा है। क्योंकि अरबी का मूल उद्देश्य ब्रह्मज्ञान की सेवा है जैसा कि मनुष्य के अस्तित्व का मूल उद्देश्य ख़ुदा तआला की पहचान है और प्रत्येक वस्तु जिस उद्देश्य के लिए पैदा की गई है उसी उद्देश्य को सामने रख कर उसकी जटिल समस्याएँ हल हो सकती हैं और उसके जौहर मालूम हो सकते हैं। उदाहरणतया बैल हल चलाने और भार खींचने के लिए पैदा किया गया है। फिर यदि इस उद्देश्य की उपेक्षा करके उस से वह कार्य लेना चाहें जो शिकारी कुत्तों से लिया जाता है तो निस्सन्देह वह ऐसे कार्य से असमर्थ हो जाएगा और अत्यन्त निकम्मा और अधम सिद्ध होगा, परन्तु यदि असली कार्य के साथ उसे परखें तो वह बहुत शीघ्र अपने अस्तित्व के बारे में सिद्ध करेगा कि सांसारिक जीविका के साधनों का एक भारी बोझ उसके सर पर है। अत: प्रत्येक वस्तु का हुनर उसी समय सिद्ध होता है जब उसका असली कार्य उस से लिया जाए। अत: अरबी के प्रकटन का असली उद्देश्य ब्रहमज्ञान का चमकदार चेहरा दिखाना है। परन्तु चूंकि इस अत्यन्त बारीक और सूक्ष्म कार्य का ठीक-ठीक अंजाम देना और ग़लती से सुरक्षित रहना इन्सानी शक्तियों से बढ़कर था। इसलिए कृपालु और दयालु ख़ुदा ने पवित्र क़ुरआन को अरबी

فلما وجدت الحق بفیضانه و رُبّیتُ بِلبانه رأیت شکر
هٰذه الآلاء فی اَنْ امون خدمة الدین و الشریعت الغرآء۔
وأری الناس نور الدین المتین۔ و اری ملکوته بعساکر

सच को पा लिया और उसके दूध (ब्रह्म ज्ञान) से मेरा पोषण किया गया तो मैंने उन नेमतों का शुक्र इस बात में देखा कि धर्म की सेवा में और शरीअत की सहायता के लिए कठिन परिश्रम करूँ और प्रतिष्ठित धर्म का प्रकाश लोगों को दिखाऊँ और उसकी बादशाहत प्रमाणों की प्रचुरता के साथ प्रकट करूं

शेष हाशिया :- भाषा की सरसता और सुबोधता दिखाने के लिए और मुफ़रदों का सूक्ष्म अन्तर और मिश्रितों का विलक्षण संक्षिप्त होना व्यक्त करने के लिए ऐसे चमत्कार के तौर पर भेजा कि उसकी ओर समस्त गर्दनें झुक गईं और अरबी की सुबोधता को उसके मुफ़रदों और मिश्रितों के बारे में जो कुछ क़ुरआन ने प्रकट किया उस को उस समय के उच्च कोटि के भाषा विशेषज्ञों ने न केवल स्वीकार ही किया अपितु मुकाबले से असमर्थ होकर यह भी सिद्ध कर दिया कि मानवीय शक्तियां इन वास्तविकताओं और मआरिफ़ (अध्यात्म ज्ञान) के वर्णन करने और भाषा का सच्चा और वास्तविक सौन्दर्य दिखाने से असमर्थ हैं। इसी पवित्र वाणी से रहमान और रहीम का भी अन्तर ज्ञात हुआ जिसे हम ने बतौर नमूना कथित ख़ुत्बे में लिखा है और यह बात प्रकट है कि प्रत्येक भाषा में बहुत से पर्यायवाची शब्द पाए जाते हैं परन्तु जब तक आंख खोल कर उनके परस्पर अंतरों पर सूचना न पाएं और वे शब्द ख़ुदा के ज्ञान तथा धार्मिक शिक्षा में से न हों तब तक उसको ज्ञान की मद में सम्मिलित नहीं कर सकते। यह बात भी स्मरण रहे कि मनुष्य अपनी ओर से ऐसे मुफ़रद पैदा नहीं कर सकता। हाँ यदि शक्तिमान (ख़ुदा) की क़ुदरत से पैदा किए हुए हैं तो उनमें विचार करके उनके बारीक अन्तर और प्रयोग करने के स्थान को ज्ञात कर सकता है उदाहरणार्थ सर्फ़ और नह्व (अरबी व्याकरण) के निर्माताओं को देखो कि उन्होंने कोई नई बात नहीं निकाली और न नए नियम बना कर किसी को उन पर चलने के लिए विवश किया अपितु उसी भौतिक भाषा को एक चौकन्नी दृष्टि के साथ देख कर ताड़ गए कि यह बोलचाल नियमों के अन्दर आ सकती है तब कठिनाइयों को सरल करने के लिए नियमों की बुनियाद डाली। पवित्र क़ुरआन ने प्रत्येक शब्द को यथास्थान रख कर दुनिया को दिखा दिया कि अरबी के मुफ़रद किस-किस स्थान पर प्रयोग होते हैं और कैसे वे ब्रह्मज्ञान के सेवक और परस्पर अत्यंत बारीक अन्तर रखते हैं। यहां यह भी स्मरण रहे कि पवित्र क़ुरआन दस (10) प्रकार की व्यवस्था पर आधारित है-

البداھین و اراعی شئون صدوق امین۔ وما ھٰذا الّا فضل
ربی انہ ارانی سبل الصادقین۔ و علمنی فاحسن تعلیمی و
فھّمنی فاکمل تفھیمی وعصمنی من طُرق الخاطئین۔ و

और सदूक अमीन (सच्चे और ईमानदार अर्थात् हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) के कामों की रक्षा करूं और यह ख़ुदा की विशेष कृपा है उसी ने मुझे सच्चों के मार्ग दिखाए और उसने मुझे सिखाया और समझाया और मुझे अच्छा समझाया और ग़लती के मार्गों से मुझे बचा लिया और मुझे इल्हाम किया

शेष हाशिया :- (1)- ऐसे मुफ़रदों की व्यवस्था जिनमें अल्लाह तआला के अस्तित्व का वर्णन तथा अस्तित्व के तर्कों का वर्णन और साथ ही ख़ुदा तआला की ऐसी विशेषताओं, नामों, कार्यों, सुन्नतों (नियमों) तथा आदतों का वर्णन है जो परस्पर अंतरों के साथ अल्लाह तआला के अस्तित्व से विशिष्ट हैं और इसी प्रकार वे वाक्य जो उसकी उस पूर्ण प्रशंसा और स्तुति के संबंध में हैं और जो प्रताप, सौन्दर्य, श्रेष्ठता और महत्ता के बारे में हैं।

(2)- उन मुफ़रदों की व्यवस्था जो ख़ुदा की तौहीद (एकेश्वरवाद) और ख़ुदा की तौहीद के तर्कों पर आधारित हैं।

(3)- उन मुफ़रदों की व्यवस्था जिनमें उन विशेषताओं, कार्यों, कर्मों, आदतों, आध्यात्मिक या तामसिक हालतों का वर्णन किया गया है जो परस्पर अंतरों के साथ ख़ुदा तआला के सामने उसकी इच्छानुसार या इच्छा के विरुद्ध बन्दों से जारी होती हैं या प्रकट या प्रितरूपित में आती हैं।

(4)- उन मुफ़रदों की व्यवस्था जो वसीयतों और शिष्टाचार की शिक्षा और आस्थाओ और अल्लाह तथा बन्दों के अधिकारों और दर्शनशास्त्र, विद्याओं, दण्डों तथा आदेशों, आज्ञाओं और निषेधाज्ञाओं, वास्तविकताओं और मारिफ़तों के रंग में ख़ुदा तआला की ओर से पूर्ण निर्देश हैं।

(5)- उन मुफ़रदों की व्यवस्था जिन में वर्णन किया गया है कि वास्तविक मुक्ति क्या चीज़ है और उसकी प्राप्ति के लिए वास्तविक साधन और माध्यम क्या-क्या हैं और मुक्ति प्राप्त मोमिनों के लक्षण और निशानियां क्या हैं।

(6)- उन मुफ़रदों की व्यवस्था जिनमें वर्णन किया गया है कि इस्लाम क्या है और कुफ़्र तथा शिर्क क्या है और इस्लाम की सच्चाई पर तर्कों तथा आरोपों की प्रतिरक्षा है।

(7)- ऐसे मुफ़रदों की व्यवस्था जो विरोधियों की समस्त ग़लत आस्थाओं का खण्डन करती हैं।

اوحی الیّ ان الدّین ھو الاسلام و ان الرسول ھو المصطفٰی السید الامام رسول اُمّی امین۔ فکما ان ربنا اَحد یستحق العبادۃ وحدہ فکذالک رسولنا المطاع واحد لا

कि ख़ुदा का धर्म इस्लाम ही है और सच्चा रसूल मुहम्मद मुस्तफ़ा (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) इमाम का सरदार है जो उम्मी (अनपढ़), अत्यन्त ईमानदार रसूल है। तो जैसा कि इबादत केवल ख़ुदा के लिए है और वह एक साझी रहित है। इसी प्रकार हमारा रसूल इस बात में एक है कि उसका अनुकरण किया जाए

शेष हाशिया :- (8)- ऐसे मुफ़रदों की व्यवस्था जो चेतावनी और ख़ुशख़बरी देने वाले और अज़ाब के वादे और परलोक के वर्णन के रंग में या चमत्कारों के रंग में या उदाहरणों के तौर पर ऐसी भविष्यवाणियों के रूप में जो ईमान में वृद्धि का कारण या अन्य हितों पर आधारित हों या ऐसे क़िस्सों के रंग में जो सतर्क करने या ख़ुशख़बरी देने के उद्देश्य से हों बनाई गई है।

(9)- ऐसे मुफ़रदों की व्यवस्था जो आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का जीवन-चरित्र और पवित्र विशेषताओं तथा आंजनाब के पवित्र जीवन के उच्च आदर्श पर आधारित हैं जिनमें आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नुबुव्वत के पूर्ण तर्क भी हैं।

(10)- ऐसे मुफ़रदों की व्यवस्था जो पवित्र क़ुर्आन की विशेषताओं और प्रभावों तथा उसकी व्यक्तिगत गुणों का वर्णन करते हैं।

ये दस व्यवस्थाएं वे हैं जो अपनी सर्वांगपूर्ण ख़ूबियों के कारण दस दायरों की तरह पवित्र क़ुर्आन में पाई जाती हैं जिन्हें दस दायरों का नाम दे सकते हैं।

इन दस दायरों में ख़ुदा तआला ने पवित्र क़ुर्आन में ऐसे पवित्र और परस्पर अन्तर रखने वाले मुफ़रदों से काम लिया है कि सद्बुद्धि तुरन्त गवाही देती है कि यह मुफ़रदों का सर्वांगपूर्ण सिलसिला अरबी में इसलिए निर्धारित किया गया था ताकि क़ुर्आन का सेवक हो। यही कारण है कि मुफ़रदों का यह सिलसिला पवित्र क़ुर्आन की शिक्षण व्यवस्था से जो सर्वांगपूर्ण है सर्वथा अनुकूल हो गया, किन्तु अन्य भाषाओं के मुफ़रदों का सिलसिला उन पुस्तकों की शिक्षण व्यवस्था से कदापि अनुकूल नहीं बैठता जो ख़ुदाई किताबें कहलाती हैं और जिन का उन भाषाओं में उतरना वर्णन किया गया। और न तथाकथित दस दायरे उन किताबों में पाए जाते हैं। अतः उन किताबों के अपूर्ण होने के कारणों में से एक यह भी भारी कारण है कि वे आवश्यक दायरों से वंचित तथा भाषा के मुफ़रद उन किताबों की शिक्षा से मेल नहीं कर सके और इस में रहस्य यही है कि वे किताबें सच्ची किताबें नहीं थीं अपितु वह कुछ दिनों की

نبی بعدہ ولا شریك معه وانه خاتم النبیین ۔ فاهتدیت
بهداه و رأیت الحق بسناه ورفعتنی یداه و ربانی ربی کما
یربی عباده المجذوبین و هدانی و ادرانی و ارانی ما ارانی

और इस बात में एक है कि वह खातमुल अंबिया है। तो मैंने उसकी हिदायत से हिदायत पाई और उसके प्रकाश से मैंने सच्चाई को देखा और उसके दोनों हाथों ने मुझे उठा लिया और मेरे रब्ब ने मेरा ऐसा प्रतिपालन किया जैसा कि वह उन लोगों का प्रतिपालन करता है जिनको अपनी ओर खींचता है और उसने मुझे हिदायत दी और ज्ञान प्रदान किया और दिखाया जो दिखाया यहां तक कि

शेष हाशिया :- कार्रवाई थी। सच्ची किताब **संसार में एक ही** आई जो हमेशा के लिए मनुष्य की भलाई के लिए थी। इसलिए वह दस सर्वांगपूर्ण दायरों के साथ उतरी और उसके मुफ़रदों की व्यवस्था शिक्षण व्यवस्था के पूर्णत: समतुल्य और समान थी और उसका प्रत्येक दायरा दस दायरों में से अपनी प्रकृतिक व्यवस्था की मात्रा और अनुमान पर मुफ़रदों की व्यवस्था साथ रखता था, जिसमें ख़ुदा की विशेषताओं की अभिव्यक्ति के लिए और कथित चार प्रकारों की श्रेणियां वर्णन करने के उद्देश्य से अलग-अलग मुफ़रद शब्द निर्धारित थे और प्रत्येक शिक्षा के दायरे के अनुसार मुफ़रदों का पूर्ण दायरा मौजूद था। अब हम इसी पर बस करके एक और शब्द की कुछ ख़ूबियां वर्णन करते हैं। तो वह शब्द ''रब्ब'' है जिसे हमने क़ुर्आन के शब्दों से लिया है। यह शब्द पवित्र क़ुर्आन की पहली ही सूरह और पहली ही आयत में आता है जैसा कि अल्लाह तआला फ़रमाता है -

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ

'लिसानुल अरब' और 'ताजुल उरूस' में जो अरबी शब्दकोश की अत्यन्त विश्वसनीय पुस्तकें हैं, लिखा है कि अरबी भाषा में रब्ब का शब्द सात अर्थों पर आधारित है और वे ये हैं- मालिक, सय्यद (सरदार) मुदब्बिर (तद्बीर करने वाला), मुरब्बी (प्रतिपालक), क़य्यिम (स्थापित रखने वाला) मुनइम (इनाम देने वाला) मुतम्मिम (सम्पूर्ण करने वाला) अत: इन सात अर्थों में से तीन अर्थ ख़ुदा तआला की व्यक्तिगत श्रेष्ठता को बताते हैं। उनमें से एक मालिक है। और मालिक अरबी शब्दकोश में उसे कहते हैं जिसका अपनी मिल्कियत पर पूर्ण कब्ज़ा हो और जिस प्रकार चाहे अपने प्रयोग में ला सकता हो। और किसी अन्य की भागीदारी के बिना उस पर अधिकार रखता हो। यह शब्द वास्तविक तौर पर अर्थात् उसके अर्थों की दृष्टि से ख़ुदा तआला के अतिरिक्त किसी अन्य पर चरितार्थ नहीं हो सकता। क्योंकि पूर्ण कब्ज़ा,

حتى عرفت الحق بالدلائل القاطعة و وجدت الحقيقة بالبراهين الساطعة و وصلت الٰى حق اليقين۔ فاخذنى الاسف علٰى قلوب فسدت و انظار زاغت و عقول فالت

मैंने ठोस तर्कों के साथ सच्चाई को पहचान लिया और प्रकाशमान तर्कों के साथ सच्चाई को पा लिया और मैं पूर्ण विश्वास तक पहुँच गया। तब मुझे उन दिलों पर बहुत अफ़सोस हुआ जो बिगड़ गए और उन नज़रों (लोगों) पर दिल दुखा जो टेढ़ी हो गईं और उन अक़्लों पर जो कमज़ोर हो गईं और उन रायों पर जो बेईमानी की ओर झुक गईं और उन तामसिक इच्छाओं पर जिन्होंने आक्रमण

शेष हाशिया :- पूर्ण प्रयोग और पूर्ण अधिकार ख़ुदा तआला के अतिरिक्त अन्य किसी के लिए मान्य नहीं। और सय्यद अरबी शब्द कोश में उसे कहते हैं जिसके अधीन एक ऐसी बड़ी संख्या हो जो अपने हार्दिक जोश और अपने स्वभाविक आज्ञापालन से उसके अधीन हों। अत: बादशाह और सय्यद में अन्तर यह है कि बादशाह बलपूर्वक राजनीति और कठोर क़ानूनों द्वारा लोगों को आज्ञाकारी बनाता है और सय्यद के अनुयायी अपने हार्दिक प्रेम, हार्दिक जोश और हार्दिक प्रेरणा से स्वयं आज्ञापालन करते हैं और सच्चे प्रेम से उसे सय्यदना कह कर पुकारते हैं। ऐसा आज्ञापालन बादशाह का उस समय किया जाता है जब वे भी लोगों की दृष्टि में सय्यद ठहरे। तो सय्यद का शब्द भी वास्तविक तौर पर उसके अर्थों की दृष्टि से ख़ुदा तआला के अतिरिक्त किसी अन्य पर नहीं बोला जाता। क्योंकि वास्तविक और निश्चित जोश से आज्ञापालन जिसके साथ तामसिक इच्छाओं की कोई मिलावट न हो ख़ुदा तआला के अतिरिक्त किसी के लिए संभव नहीं। वही एक है जिसकी रूहें सच्चा आज्ञापालन करती हैं, क्योंकि वह उनकी पैदायश का वास्तविक उद्‌गम है इसलिए प्रत्येक रूह स्वभाविक तौर पर उसे सज्दा करती है। मूर्तिपूजक और मनुष्य पूजक भी उसके आज्ञापालन के लिए ऐसा ही जोश रखते हैं जैसा कि एक एकेश्वरवादी ईमानदार। परन्तु उन्होंने अपनी ग़लती और ग़लत अभिलाषा से जीवन के उस सच्चे झरने को नहीं पहचाना अपितु अंधेपन के कारण उस आन्तरिक जोश को ग़लत स्थान पर रख दिया। तब किसी ने पत्थरों को, किसी ने रामचन्द्र जी को और किसी ने कृष्ण जी को और किसी ने नऊज़ुबिल्लाह इब्ने मरयम को ख़ुदा बना लिया। किन्तु इस धोखे से बनाया कि शायद वह जो अभीष्ट है यह वही है। तो ये लोग सृष्टि (मख़्लूक़) को अल्लाह का अधिकार (हक़) देकर तबाह हो गए। ऐसा ही उस वास्तविक प्रियतम और सय्यद की रूहानी मांग में नफ़्स परस्तों ने धोखे खाए हैं, क्योंकि उनके हृदयों में भी एक प्रियतम तथा एक वास्तविक सय्यद

و آراءٍ مالت و اهواء صالت و اوباء شاعت من افساد المفسدين و رأيت ان الناس اكبو على الدنيا و زينتها فلا يصغون الى الملّة و ادلّتها و لا ينظرون الى نضارها و نُضرتها

किया और उन विपदाओं पर जो उपद्रवियों के उपद्रव से फैल गईं और मैंने देखा कि लोग संसार और उसकी सजावट पर गिरे पड़े हैं और सच्चे धर्म और उसके तर्कोंकी ओर ध्यान नहीं देते और उसके शुद्ध सोने तथा ताज़गी को नहीं देखते और इस प्रकार किनारा करते हैं कि मानो की ओर ध्यान नहीं देते और उसके शुद्ध सोने तथा

शेष हाशिया :- की चाहत थी, परन्तु उन्होंने अपने हार्दिक विचारों को भली-भांति न पहचान कर यह समझ लिया कि वह वास्तविक प्रियतम और सय्यद जिसे रूहें मांग रही हैं और जिसकी आज्ञापालन के लिए रूहें उछल रही हैं वे संसार के माल, सम्पत्तियां तथा संसार के आनंद ही हैं, परन्तु यह उनकी ग़लती थी अपितु रूहानी इच्छाओं का प्रेरक और पवित्र भावनाओं का कारण वही एक अस्तित्व है जिसने फ़रमाया है

وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْإِنْسَ إِلَّا لِيَعْبُدُونِ (अज़्ज़ारियात-51/57)

अर्थात् जिन्नों और इन्सानों की पैदायश और उनकी समस्त शक्तियों का अभीष्ट मैं ही हूँ। उनको मैंने इसलिए पैदा किया ताकि मुझे पहचानें और मेरी इबादत (उपासना) करें। तो उसने इस आयत में संकेत किया कि जिन्न और इन्सान की पैदायश में उस (अर्थात् ख़ुदा) की चाहत, मारिफ़त और आज्ञापालन का **तत्व** रखा गया है। यदि इन्सान में यह तत्व न होता तो न संसार में अवसरवाद होता न मूर्तिपूजा न मनुष्य पूजा। क्योंकि प्रत्येक ग़लती सही की खोज में पैदा हुई है। इसलिए वास्तविक सियादत (सरदारी) उसी अस्तित्व के लिए मान्य है और वही निश्चित तौर पर सय्यद है। और उन तीन नामों में से जो ख़ुदा तआला की श्रेष्ठता की ओर मार्ग दर्शन करते हैं मुदब्बिर भी है और तद्बीर के अर्थ हैं कि किसी कार्य के करने के समय ऐसा सम्पूर्ण सिलसिला नज़र के सामने उपस्थित हो जो बीती घटनाओं के बारे में या भावी परिणामों के बारे में है। और इस सिलसिले की दृष्टि से वस्तु को यथास्थान रखना हो और कोई कार्रवाई युक्ति से बाहर न हो। और यह नाम भी अपने वास्तविक मायनों के अनुसार ख़ुदा तआला के अतिरिक्त किसी अन्य पर चरितार्थ नहीं हो सकता, क्योंकि पूर्ण तदबीर परोक्ष की बातें जानने पर निर्भर है और वह ख़ुदा तआला के अतिरिक्त किसी के लिए सिद्ध नहीं।

और शेष चार नाम अर्थात् मुरब्बी, क़य्यिम, मुन्इम, मुतम्मिम। ख़ुदा तआला की उन आध्यात्मिक लाभ पर संकेत करते हैं जो उसके पूर्ण स्वामित्व और पूर्ण सियादत (सरदारी) तथा

و يعرضون كانهم مرتابون و ليسوا بمرتابين۔ ولكنهم آثروا الدنيا على الدّين۔ لا يقبلون لِعَمْيِهِمْ دقائق العرفانِ ولا يرون علاء البراهين۔ و كيف و انهم يؤثرون سبل

ताज़गी को नहीं देखते और इस प्रकार किनारा करते हैं कि मानो सन्देह में हैं और वास्तव में वे सन्देह में नहीं अपितु उन्होंने दुनिया को दीन (धर्म) पर ग्रहण कर लिया है अपने अंधेपन के कारण मारिफ़त की बारीक बातों को स्वीकार नहीं करते और तर्कों के ऊंचे स्थान को देख नहीं सकते और क्योंकर देखें उन्होंने तो शैतान के मार्ग

शेष हाशिया :- पूर्ण तदबीर की दृष्टि से उसके बन्दों पर जारी हैं। अतः **मुरब्बी** प्रत्यक्षतया पोषण करने वाले को कहते हैं और पूर्ण रूप से तर्बियत (प्रशिक्षण) की वास्तविकता यह है कि मनुष्य की उत्पत्ति के जितने विभाग शरीर और रूह और समस्त शक्तियों और ताक़तों के दृष्टिकोण से पाए जाते हैं उन समस्त शाख़ाओं का पोषण हो और जहां तक मनुष्यता की शारीरिक एवं रूहानी उन्नति उस पोषण की पूर्णता को चाहते हैं उन समस्त श्रेणियों तक पोषण का सिलसिला फैला हुआ हो। ऐसा ही जिस बिन्दु से मनुष्य होने का नाम या उसकी प्रारंभिक बातें आरंभ होती हैं और जहां से मनुष्यता का नक़्श या किसी अन्य मख़लूक़ (सृष्टि) के अस्तित्व का नक़्श नास्ति से आस्ति की ओर गति करता है उस अभिव्यक्ति और प्रकटन का नाम भी प्रतिपालन (पोषण) है। तो इस से ज्ञात हुआ कि अरबी शब्दकोश के अनुसार रबूबियत के मायने बहुत ही व्यापक हैं और नास्ति के बिन्दु से मख़लूक़ (सृष्टि) की सर्वांगपूर्णता के बिन्दु तक रबूबियत का शब्द ही बोला जाता है और ख़ालिक़ (सृष्टा) इत्यादि शब्द रब्ब के नाम की शाखा हैं। और क़य्यिम के मायने हैं व्यवस्था को सुरक्षित रखने वाला और मुन्इम के ये मायने हैं कि प्रत्येक प्रकार का ईनाम और सम्मान जो मनुष्य या अन्य कोई मख़लूक़ अपनी योग्यतानुसार पा सकती है और स्वभाविक तौर पर उस नेमत के इच्छुक हैं वह ईनाम उनको दे ताकि प्रत्येक मख़लूक़ अपने पूर्ण कमाल तक पहुँच जाए। जैसा कि अल्लाह तआला एक स्थान में फ़रमाता है-

رَبُّنَا الَّذِىٓ أَعۡطٰى كُلَّ شَيۡىٍٔ خَلۡقَهٗ ثُمَّ هَدٰى (ताहा-20/51)

अर्थात् वह ख़ुदा जिसने प्रत्येक वस्तु को उसके यथायोग्य पूर्ण उत्पत्ति प्रदान की। और फिर उसकी अन्य अभीष्ट ख़ूबियों के लिए मार्ग-दर्शन किया। तो यह ईनाम है कि हर चीज़ को पहले उसके अस्तित्व के अनुसार वे समस्त शक्तियां इत्यादि प्रदान हों जिनकी वह वस्तु मुहताज है। फिर उनकी प्रत्याशित स्थितियों की प्राप्ति के लिए उसके मार्ग दर्शन किए जाएं।

الشيطان و يصرّون على التكذيب والعدوان ولا يسلكون محجة الصّادقين فطفقتُ ادعو الله ليؤتيني حجة تفحم كفرة هذا الزمان و تناسب طبائع الحدثان لأُبكّت سفهائهم و

अपना रखे हैं और अत्याचार तथा झुठलाने पर आग्रह कर रहे हैं और सच्चों के मार्ग पर चलना नहीं चाहते। तो मैंने ख़ुदा के दरबार में इस उद्देश्य से दुआ करना आरंभ किया ताकि वह मुझे ऐसी हुज्जत प्रदान करे जो इस युग के काफ़िरों को निरुत्तर कर दे और जो इस युग के युवाओं की स्वभावों के यथायोग्य हो ताकि मैं उनके अल्प

शेष हाशिया :- तथा मुतम्मिम के मायने ये हैं कि दानशीलता के सिलसिले को किसी पहलू से भी अपूर्ण न छोड़ा जाए और हर पहलू से उसे पूर्णता तक पहुँचाया जाए।

अत: रब्ब का नाम जो पवित्र क़ुर्आन में आया है जिसे हम उद्धरण के तौर पर इस ख़ुत्बे के आरंभ में लाए हैं उन विस्तृत अर्थों पर आधारित है जिन को हमने संक्षिप्त तौर पर इस निबंध में वर्णन किया है।

अब हम नितान्त अफ़सोस के साथ लिखते हैं कि एक नासमझ **अंग्रेज़ ईसाई** ने अपनी एक पुस्तक में लिखा है कि इस्लाम पर ईसाई धर्म की यह श्रेष्ठता है कि उसमें ख़ुदा तआला का नाम **बाप** भी आया है। और यह नाम नितान्त प्रिय और मनमोहक है। और **क़ुर्आन** में यह नाम नहीं आया। परन्तु हमें आश्चर्य है कि आपत्तिकर्ता ने यह लिखते समय यह नहीं सोचा कि शब्दकोष★ ने कहां तक इस शब्द का सम्मान और श्रेष्ठता व्यक्त की है। क्योंकि प्रत्येक शब्द को वास्तविक सम्मान और महत्ता शब्दकोष से ही मिलती है। और किसी मनुष्य को यह अधिकार नहीं कि अपनी ओर से किसी शब्द को वह सम्मान दे जो शब्दकोश उसे दे नहीं सके। इसी कारण ख़ुदा तआला का कलाम भी शब्दकोष की अनिवार्यता से बाहर नहीं जाता। और समस्त बुद्धिमान और पुस्तकीय ज्ञान रखने वालों की सहमति से किसी शब्द का सम्मान और श्रेष्ठता प्रकट करने के समय सर्वप्रथम शब्दकोष की ओर जाना चाहिए कि उस भाषा ने

★हाशिए का हाशिया - स्मरण रहे कि शब्द "अब" या बाप, या फ़ादर के शब्द भाव में कदापि प्रेम का अर्थ नहीं लिया गया। जिस कर्म के प्रारम्भ से इन्सान या अन्य कोई प्राणी बाप कहलाता है उस समय यह विचार कदापि नहीं होता, क्योंकि प्रेम तो देखने और प्यार करने के बाद में धीरे-धीरे पैदा होता है किन्तु रबूबियत के लिए प्रेम प्रारंभ से ही व्यक्तिगत आवश्यक है। इसी से

عقلاء هم باحسن البيان و تتم الحجة على المجرمين۔ فاستجاب ربّی دعوتی و حقّقی لی مُنیتی و فتح علی بابها کما کانت مسئلتی و مراد مهجتی و آعْطانی الدلائل الجدیدة

बुद्धि वालों तथा बुद्धिमानों को एक उत्तम वर्णन के साथ निरुत्तर करूँ और ताकि दोषियों पर समझाने का अन्तिम प्रयास पूरा हो। तो मेरे रब्ब ने मेरी दुआ को स्वीकार किया और मेरी इच्छा को मेरे लिए पूरा कर दिया और मुझ पर मेरी इच्छा का दरवाज़ा इस प्रकार खोल दिया जो मेरा उद्देश्य था और मुझे नए और खुले-खुले तर्क प्रदान

शेष हाशिया :- जिस का वह शब्द है यह सम्मान उसे कहां तक दिया है। अब इस नियम को अपने सम्मुख रख कर जब सोचें कि 'अब' (اب) अर्थात् बाप का शब्द शब्दकोष के अनुसार किस स्तर का शब्द है तो इसके अतिरिक्त कुछ नहीं कह सकते कि जब उदाहरणतया एक मनुष्य वास्तव में दूसरे मनुष्य के वीर्य से पैदा हो परन्तु पैदा करने में उस वीर्य डालने वाले इन्सान का कुछ भी हस्तक्षेप न हो, तब उस हालत में कहेंगे कि मनुष्य अमुक मनुष्य का 'अब' अर्थात् बाप है और यदि ऐसी स्थिति हो कि **सर्वशक्तिमान ख़ुदा** की यह तारीफ़ करना अभीष्ट हो जो सृष्टि को अपने विशेष इरादे से स्वयं पैदा करने वाला, स्वयं ख़ूबियों तक पहुंचाने वाला और स्वयं महान दया से उसके यथायोग्य ईनाम देने वाला और स्वयं **रक्षा करने वाला** और स्वयं **स्थापित** रखने वाला है। तो शब्दकोष कदापि अनुमति नहीं देता कि इस अर्थ को **'अब'** अर्थात् बाप के शब्द से अदा किया जाए अपितु शब्दकोष ने इसके लिए एक अन्य शब्द रखा है जिसे **'रब्ब'** कहते हैं जिसकी असल परिभाषा हम अभी शब्दकोष के अनुसार वर्णन कर चुके हैं और हम हरगिज़ अधिकार नहीं रखते कि अपनी ओर से शब्दकोष बनाएं अपितु हमें उन्हीं शब्दों का अनुकरण अनिवार्य है जो हमेशा से ख़ुदा की ओर से चले आए हैं। अत: इस सम्बन्ध से स्पष्ट है कि 'अब' अर्थात् बाप का शब्द ख़ुदा तआला के लिए प्रयोग करना एक गुस्ताख़ी और निन्दा में सम्मिलित है। और जिन लोगों ने हज़रत मसीह के बारे में यह आरोप बनाया है कि जैसे वे ख़ुदा तआला को 'अब' कह कर पुकारते थे और वास्तव में ख़ुदा तआला को अपना बाप ही विश्वास करते थे, उन्होंने अत्यन्त घृणित और झूठा आरोप **इब्ने मरयम** पर लगाया है। क्या कोई बुद्धि प्रस्तावित कर सकती है कि नऊज़ुबिल्लाह हज़रत मसीह ने ऐसी मूर्खता की कि जो शब्द अपने शब्दकोषीय अर्थों के अनुसार ऐसा तिरस्कृत और निकृष्ट हो जिसमें प्रत्येक पहलू से शक्ति हीनता, कमज़ोरी और विवशता पाई जाए वही शब्द हज़रत मसीह अल्लाह तआला के बारे में ग्रहण करें। इब्ने मरयम अलैहिस्सलाम को यह

البینة والحجج القاطعة الیقینیة فالحمد اللّٰہ المولی المعین
وتفصیل ذٰلك انّه صرف قلبی الیٰ تحقیق الألْسِنة واعان
نظری فی تنقید اللغات المتفرقة وعلمنی ان العربیة اُمُّهَا

किए और विश्वसनीय तथा ठोस तर्क प्रदान किए इसलिए समस्त प्रशंसा अल्लाह के लिए जो सहायक मौला है। और इस संक्षिप्त का विवरण यह है कि उसने भाषाओं के अन्वेषण की ओर मेरे हृदय को फेर दिया और मेरी नज़र को विभिन्न भाषाओं को परखने के लिए सहायता की और मुझे सिखाया कि अरबी समस्त भाषाओं की

शेष हाशिया :- अधिकार कदापि नहीं था कि अपनी ओर से शब्दकोष बनाएं और शब्दकोष भी ऐसा व्यर्थ जिससे सर्वथा अनभिज्ञता सिद्ध हो। तो जिस हालत में शब्दकोश ने 'अब' अर्थात् बाप के शब्द को इस से अधिक विस्तार नहीं दिया कि किसी नर का वीर्य मादा के गर्भाशय में गिरे और फिर वह वीर्य न गिराने वाले की किसी शक्ति से अपितु एक और अस्तित्व की क़ुदरत से धीरे-धीरे एक जानदार जीव बन जाए तो वह व्यक्ति जिसने वह वीर्य गिराया था शब्दकोश के अनुसार 'अब' या बाप के नाम से नामित होगा। और 'अब' का शब्द एक ऐसा तिरस्कृत और निकृष्ट शब्द है कि उसमें कोई भाग प्रतिपालन, इरादे या प्रेम का शर्त नहीं। उदाहरणतया एक बकरा जो बकरी पर उछल कर वीर्य डाल देता है या एक सांड बैल जो गाय पर उछल कर और अपनी कामवासना का काम पूरा करके फिर उस से अलग होकर भाग जाता है जिसके विचार में भी यह नहीं होता है कि कोई बच्चा पैदा हो या एक सुअर जिसे कामवासना का बड़ा ज़ोर होता है और बार-बार उसी काम में लगा रहता है और कभी उसके विचार में भी नहीं होता कि इस बार-बार के कामवासना के जोश से यह मतलब है कि बहुत से बच्चे पैदा हों और सुअर के बच्चे पृथ्वी पर प्रचुरता से फैल जाएं और न उसको स्वभाविक तौर पर यह समझ दी गई है, तथापि यदि बच्चे पैदा हो जाएं तो नि:सन्देह सुअर इत्यादि अपने-अपने बच्चों के बाप कहलाएंगे। अब जबकि 'अब' के शब्द अर्थात् बाप के शब्द में संसार के समस्त शब्दकोषों के अनुसार यह अर्थ हरगिज़ अभिप्राय नहीं कि वह बाप वीर्य डालने के बाद फिर भी वीर्य के बारे में कुछ कारनामा करता रहे ताकि बच्चा पैदा हो जाए या ऐसे काम के समय में उसके हृदय में यह इरादा भी हो। और न किसी मख़लूक़ को ऐसा अधिकार दिया गया है। अपितु बाप के शब्द में बच्चा पैदा होने का विचार भी शर्त नहीं और उसके अर्थ में इससे अधिक कोई बात नहीं ली गई कि वह वीर्य डाल दे। अपितु वह इसी एक ही दृष्टिकोण से जो वीर्य डालता है शब्दकोष के अनुसार 'अब' अर्थात् बाप

وجامع كيفها و كمَها وانها لسانُ اصلِي لنوع الانسان و
لغث الهامية من حضرة الرحمان و تتمة الخلقة البشر من
احسن الخالقين ثم عُلّمت من كالم الله ذی القدرة ان العربية

माँ और उनकी गुणवत्ता तथा मात्रा की संग्रहीता है और वह मानवजाति के लिए एक मूल भाषा और अल्लाह तआला की ओर से एक इल्हामी शब्दकोश है, मानवीय पैदायश का परिशिष्ट है जो सर्वश्रेष्ठ उत्पत्तिकर्ता ने प्रकट किया है। फिर मुझे शक्तिमान ख़ुदा के कलाम से ज्ञात हुआ कि अरबी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की

शेष हाशिया :- कहलाता है तो कैसे वैध हो कि ऐसा बेकार शब्द जिसे समस्त भाषाओं की सहमति बेकार ठहराती है उस सर्वशक्तिमान पर बोला जाए जिस के समस्त कार्य पूर्ण इरादों, पूर्ण ज्ञान और पूर्ण क़ुदरत से प्रकटन में आते हैं और क्योंकर दुरुस्त हो कि वही एक शब्द जो बकरे पर बोला गया, बैल पर बोला गया, सुअर पर बोला गया वह ख़ुदा तआला पर भी बोला जाए। यह कैसी असभ्यता है जिससे **अज्ञानी ईसाई** नहीं रुकते। न उनको शर्म शेष रही न लज्जा शेष रही, न इन्सानियत की समझ शेष रही। **कफ़्फ़ार:** की आस्था उनकी इन्सानी शक्तियों पर ऐसी फ़ालिज की तरह गिरी कि बिलकुल निकम्मा और संवेदनहीन कर दिया अब इस क़ौम के कफ़्फ़ार: के भरोसे पर यहां तक नौबत पहुंच गई है कि अच्छा चाल-चलन भी उनके नज़दीक बेहूदा है। वर्तमान में अर्थात् 21 जून 1895 ई. को नूर अफ़्शां अख़बार लुधियाना में जो ईसाई धर्म का एक सिद्धान्त कफ़्फ़ार: के बारे में छपा है वह ऐसा भयावह है जो अपराधी लोगों को बहुत ही मदद देता है उसका सारांश यही है कि एक सच्चे ईसाई को किसी नेक चलनी की आवश्यकता नहीं। क्योंकि लिखा है कि शुभ कर्मों का मुक्ति में कुछ भी हस्तक्षेप नहीं। जिस से स्पष्ट तौर पर यह परिणाम निकलता है कि ख़ुदा की सहमति का कोई भाग जो मुक्ति की जड़ है कर्मों से प्राप्त नहीं हो सकती अपितु कफ़्फ़ार: ही पर्याप्त है। अब सोचने वाले सोच सकते हैं कि जब कर्मों का ख़ुदा की सहमति में कुछ भी हस्तक्षेप नहीं तो फिर ईसाइयों का चाल-चलन कैसे सही रह सकता है जबकि चोरी और व्याभिचार से बचना पुण्य का कारण नहीं। तो फिर ये दोनों कार्य गिरफ्त का कारण भी नहीं। अब ज्ञात हुआ कि ईसाइयों का घृष्ट होकर दुष्कर्मों में पड़ना इसी सिद्धान्त की प्रेरणा से है अपितु इस सिद्धान्त के आधार पर क़त्ल और झूठी क़समें सब कुछ कर सकते हैं। कफ़्फ़ार: पर्याप्त और प्रत्येक बुराई का मिटाने वाला जो हुआ। अफ़सोस है ऐसे दीन और धर्म पर।

अब समझना चाहिए कि 'अब' या बाप का शब्द जिसे अकारण असभ्यतापूर्वक मूर्ख

مخزن دلائل النبوّت و مجمع شواهد عظمة هذه السريعة
فخررت ساجدًا الخير المنعمين و قادنى داعى الشوق الى
التوغل فى العربية و التبحر فى هذه اللهجة فوردت لجّتها

नुबुव्वत के तर्कों का एक भण्डार है और इस शरीअत के लिए बड़ी-बड़ी गवाहियों का संग्रह है तो मैं उस नेमतों को देने वालों में से सर्वश्रेष्ठ (अर्थात् ख़ुदा) के आगे सज्दे में गिर पड़ा और मुहब्बत के आकर्षण करने वालों ने मुझे इस ओर खींचा कि मैं अरबी में अभ्यास करूँ और इस भाषा में महारत प्राप्त करूँ तो मैं इन्सानी शक्ति

शेष हाशिया :- ईसाई ख़ुदा तआला पर चरितार्थ करते हैं **समानता रखने वाले शब्दकोषों** में से है। अर्थात् उन अरबी शब्दों में से है जो उन समस्त भाषाओं में पाए जाते हैं जो अरबी की शाख़ाएं हैं और थोड़े से परिवर्तन से उनमें मौजूद हैं। अत: **फ़ादर** और **पिता** तथा **बाप** और **पिदर** इत्यादि इसी अरबी शब्द के बिगड़े हुए रूप हैं जिसे हम इन्शाअल्लाह यथास्थान वर्णन करेंगे। शब्दकोष के अनुसार यह शब्द चार तत्वों की दृष्टि से बनाया गया है-

(1) اباء (अबा) से, क्योंकि अबा उस पानी को कहते हैं जो समाप्त न हो। चूंकि वीर्य का पानी लम्बे समय तक पुरुष में पैदा होता रहता है और उसी पानी से महाप्रतापी हकीम (ख़ुदा) बच्चा पैदा करता है। इसलिए उस पानी का स्रोत 'अब' के नाम से नामित हुआ। इस दृष्टि से अरब के लोग औरत के गुप्तांग (योनि) को अबू-दारिस कहते हैं। और दारिस हैज़ (मासिक धर्म) का नाम है अर्थात् हैज़ का बाप। चूंकि हैज़ भी एक लम्बे समय तक समाप्त नहीं होता इसलिए उसे भी अवास्तविक तौर पर एक पानी मान कर औरत की योनि का नाम अबू दारिस रखा गया है। मानो वह भी एक कुंआ है जिस का पानी समाप्त नहीं होता और दूसरे '**अबी**' के शब्द से निकाला गया है क्योंकि '**अबी**' के मायने शब्दकोश में रुक जाने और बस कर जाने के भी हैं। चूंकि इस कार्य में नर जो बाप कहलाता है केवल वीर्य डाल कर बस कर जाता है और आगे उसका कोई कार्य नहीं अपितु 'उम्म' जिसके मायने 'अब' की अपेक्षा बहुत विस्तृत हैं अपने गर्भाशय में उस वीर्य को लेती है और उसी के रक्त से वह वीर्य पोषण पाता है। तो 'अब' नाम रखने के कारण में यह बात भी दृष्टिगत है। तीसरे अबा (اباء) के शब्द से निकला है, क्योंकि اباء सरकण्डे को कहते हैं। चूंकि नर का लिंग सरकण्डे से समानता रखता है इसलिए उसका नाम अब अर्थात् बाप हुआ। **चौथे अबी** के शब्द से जो कामवासना की इच्छा के गिरने को कहते हैं। चूंकि निवृत्त होने के पश्चात् पुरुष की इच्छा समाप्त हो जाती है इसलिए यह भाग भी 'अब' के नामकरण में सम्मिलित है।

بحسب الطاقة البشيرة و دخلت مدينتها بالنصرة الالٰهية
و شرعت الاختراق فى سبلها و مسالكها والانصلات فى
طرقها و سككها لا ستعرف ربيبة خدرها و اذوق عصيدة

के अनुकूल गहरे पानी में घुसा और ख़ुदा तआला की सहायता से उसके शहर में प्रवेश किया और मैंने उस के मार्गों और सड़कों पर चलना आरम्भ किया और उसके मार्गों और कूचों में चलने लगा ताकि मैं उसके घर में पोषण पाए पर्दे में बैठे हुए को पहचान लूं और उसकी हांडी के भोजन को चख लूं और उसी के

शेष हाशिया :- अतः ये चार भाग हैं जो उस क़ानून-ए-क़ुदरत में पाए जाते हैं जो बाप के संबंध में है। इसलिए इन्हीं के आधार पर 'अब' का नाम 'अब' रखा गया है। और जबकि 'अब' के नाम रखने का कारण ज्ञात हो चुका तो अन्य भाषाओं में उसके बदले में जो-जो नाम बोला जाता है जैसा कि बाप या फ़ादर या पिदर या पिता इत्यादि इनके नाम रखने का कारण भी साथ ही ज्ञात हो गया क्योंकि वे सब इसी भाषा से निकले हैं और वे शब्द भी वास्तव में बिगड़ी हुई अरबी है। अब थोड़ा शर्म और लज्जापूर्वक सोचना चाहिए कि क्या ऐसा शब्द जिसके नामकरण के कारण ये हैं, ख़ुदा तआला के बारे में बोले जा सकते हैं?

और यदि यह प्रश्न हो कि फिर पहली किताबों ने क्यों बोला। तो इसका उत्तर यह है कि सर्वप्रथम तो वे समस्त पुस्तकें अक्षरांतरित और परिवर्तित हैं और उनका ऐसा वर्णन जो सच्चाई और वास्तविकता के विरुद्ध है कदापि स्वीकार करने योग्य नहीं। क्योंकि अब वे पुस्तकें एक गंदे कीचड़ के समान हैं जिस से पवित्र प्रकृति वाले मनुष्य को बचना चाहिए। और यदि मान भी लें कि तौरात में कुछ स्थानों पर ऐसे शब्द मौजूद थे तो संभव है कि उनके और भी अर्थ हों जो बाप के अर्थ से सर्वथा विपरीत हों। क्योंकि शब्दों के अर्थों में विस्तार हुआ करता है। फिर यदि स्वीकार भी कर लें कि इस शब्दकोश के एक ही अर्थ हैं। तो उस समय यह उत्तर हो सकता है कि चूंकि बनी इस्राईल और बाद में उनकी अन्य शाखाएं उस युग में अत्यन्त पतन की अवस्था में थीं और वहशियों की तरह जीवन व्यतीत करती थीं और उस पवित्र और पूर्ण अर्थ को नहीं समझती थीं जो रब्ब के भीतर है। इसलिए ख़ुदा के इल्हाम ने उनकी अधम हालत के अनुसार उन्हें ऐसे शब्दों से समझाया जिन्हें वे भली भांति समझ सकते थे। और उसका उदाहरण ऐसा ही है जैसा कि तौरात में परलोक की अच्छी तरह व्याख्या नहीं की गई और संसार के आरामों की लालसा दी गई और संसार की आपदाओं से भयभीत किया गया। क्योंकि उस समय वे क़ौमें परलोक के विवरणों को समझ नहीं सकती थीं। तो जैसा कि

قدرها و اجتنی ثمار اشجارها و اخرج درد بحارها فصرت
بفضل اللّٰہ من الفائزین۔ و لم یَفُتنی بها مطلع و لا خلا منی
مرتع و رأیت نضرتها و رعیت خضرتها واعطیت من ربِّی

वृक्षों का फल चुन लूं और उसके दरियाओं में से मोती निकाल लूं। अत: मैं ख़ुदा तआला की कृपा से सफ़लता प्राप्त लोगों में से हो गया और किसी चढ़ाई में विफल न रहा, और किसी चरागाह से मैं ख़ाली हाथ न लौटा। मैंने उसकी ताज़गी को देखा और मैंने उसकी हरियाली को चरा और मुझे मेरे रब्ब की ओर

शेष हाशिया :- उस संक्षेप का परिणाम यह हुआ कि एक क़ौम क़यामत की इन्कारी यहूदियों में पैदा हो गई। इसी प्रकार बाप के शब्द का परिणाम अन्तत: यह हुआ कि एक मूर्ख क़ौम अर्थात ईसाइयों ने एक **असहाय बन्दे को ख़ुदा बना दिया।** परन्तु ये समस्त मुहावरे कमी के तौर पर थे। चूंकि उन किताबों की शिक्षा सीमित थी और ख़ुदा तआला के ज्ञान में वे समस्त शिक्षाएं शीघ्र निरस्त होने वाली थीं, इसलिए ऐसे मुहावरे एक अधम और संकीर्ण विचारधारा वाली क़ौम के लिए वैध रखे गए। और फिर जब वह किताब संसार में आई जो वास्तविक प्रकाश दिखाती है तो उस प्रकाश की कुछ आवश्यकता न रही जो अन्धकार से मिश्रित था और युग अपनी असली हालत की ओर लौट आया और समस्त शब्द अपनी असली हालत पर आ गए। यही भेद था कि पवित्र क़ुरआन सरसता एवं सुबोधता का चमत्कार लेकर आया। क्योंकि संसार को अत्यन्त आवश्यकता थी कि भाषा की असल बनावट का ज्ञान प्राप्त हो। तो **पवित्र क़ुर्आन ने प्रत्येक शब्द को** यथास्थान रख कर दिखा दिया और सरसता एवं सुबोधता को इस प्रकार से खोल दिया कि वह सरसता एवं सुबोधता धर्म की दो आंखें बन गईं। पहली क़ौमें इस बात से बहुत ही लापरवाह रहीं कि वे भाषा को धार्मिक रहस्यों के हल करने के लिए सेवक बनातीं। परन्तु वे इसमें विवश और मजबूर भी थीं, क्योंकि उनके पास केवल बिगड़ी हुईं और ख़राब हालत की भाषाएँ थीं जो मुफ़रदों तथा नामों के नामकरण के कारणों को वर्णन करने में गूंगी थीं। मुफ़रदों की कुछ व्यवस्था न थी **अतराद-ए-मवाद (धातुओं या मस्दरों)** की कुछ भी पूँजी न थी। एक **ध्वस्त इमारत** की तरह **ईंटें** पड़ी थीं जिनके प्राकृतिक अनुक्रम का कोई भी निशान शेष न था। तो उनको ऐसी अयोग्य भाषाएँ दर्शन शास्त्र में कैसे सहायता दे सकती थीं। इसलिए वे समस्त क़ौमें तबाह हो गईं। फिर पवित्र क़ुरआन एक ऐसी पूर्ण भाषा में उतरा जिसमें व्यवस्था का यह समस्त सामान मौजूद था। इसलिए इस्लाम धर्म बिगड़ने से सुरक्षित रहा

حظّاً کثیرًا و دخلًا کبیرًا فی عربیّ مبین۔ حتی اذا حصلت
لی دُرُرها و درّها و کشف علی مَعْدنها و مقرها و ارانی ربی
انها وحی کریم و اصل عظیم لمعرفت الدّین۔ و ان شهبها

से अरबी भाषा में बहुत सा भाग और एक भारी अधिकार दिया गया यहां तक कि जब मुझे उस के मोती और उस का दूध मिल गया और मुझ पर उसकी खानें और स्थान खोले गए और मेरे ख़ुदा ने मुझे दिखा दिया कि वह एक कृपा वाली वह्यी और धर्म को पहचानने के लिए महान जड़ है और उसकी आग का

शेष हाशिया :- और शक्तिमान ख़ुदा का स्थान सृष्टि ने नहीं लिया।

अब इसके बाद यद्यपि हमारा इरादा था कि कुछ और वाक्यों की भी व्याख्या की जाए और दिखाया जाए कि अरबी के मुफ़रद कितनी उच्च वास्तविकताएं अपने अन्दर रखते हैं। परन्तु अफ़सोस कि लम्बाई के भय से क्रियात्मक तौर पर इस निबंध को हम यही पर छोड़ते हैं। परन्तु ये तीन सौ शब्द जो हम लिख चुके हैं ये इसी उद्देश्य से लिखे गए हैं ताकि हमारे विरोधी भी अपनी-अपनी भाषाओं में ऐसी ही इबारतें बना कर उदाहरणतया ऐसा ही ख़ुत्बा और उसके पश्चात ऐसी ही प्रस्तावना मुफ़रदों के वाक्यों में हमें लिख कर दिखा दें ताकि हम भी देख लें कि उनके पास कितने मुफ़रद हैं। और वे अपने मुफ़रदों को किसी बात के वर्णन करने में निभा सकते हैं और मुफ़रदों की व्यवस्था अपने पास रखते हैं या यों ही डींगे मारते हैं।

यहां हम मेक्समूलर के कुछ संदेहों और भ्रमों को भी दूर करना समय और अवस्था के अनुसार हितकारी समझते हैं। उसने अपनी पुस्तक लेक्चर जिल्द इल्मुल्लिसान (भाषा विज्ञान) की बहस के अन्तर्गत लिखे हैं। अत: उसका कथन और मेरा कथन की शैली में निम्नलिखित हैं:-

उसका कथन- ज्ञान की उन्नति के अवरोधकों में से एक यह भी है कि कुछ क़ौमों ने दूसरी क़ौमों को हीन और तिरस्कार की नज़र से देखने के लिए उनके बारे में तिरस्कारपूर्ण नाम बनाए। इसलिए वे इन तिरस्कृत क़ौमों के शब्दकोशों के सीखने से असमर्थ रहे और जब तक ये शब्द जंगली और अजमी (गूंगी) कहने के मानवता के शब्दकोशों और डिक्शनरियों से न निकाले गए और इसके स्थान पर शब्द बिरादर स्थापित न हुआ, ऐसा ही जब तक समस्त क़ौमों का यह अधिकार स्वीकार न किया गया कि वह एक ही प्रकार या प्रजाति के हैं उस समय तक हमारे भाषा इस विज्ञान का प्रारम्भ न हुआ।

ترجم الشياطين و مع ذٰلك رأيت لغاتٍ اُخرى كخضراء
الدمن و وجدت دارها خربة و اهلها فى المحن و وجدتها
شادة الرحال للطعن كالمتغربين۔ فاُلقى فى روعى ان اُؤلّف

प्रकाश शैतानों को संगसार (पत्थरों द्वारा मारना) करता है और इसी के अनुसार मैंने दूसरी भाषाओं को देखा कि गन्दगी की हरियाली की तरह हैं और मैंने उनके घरों को वीरान पाया और उनके घर वालों को संकटों में देखा और यह देखा कि वे भाषाएं यात्रियों की तरह कूच करने के लिए तैयार हैं। तो मेरे दिल में डाला गया कि इस बारे में एक

शेष हाशिया :- मेरा कथन- लेखक के इस लेख से ज्ञात होता है कि वास्तव में उनको अरब वालों पर ऐतराज़ है और वह समझते हैं कि अरब के लोग जो दूसरी भाषा वालों को अजमी बोलते हैं यह शब्द केवल संकीर्णता और पक्षपात से दूसरी क़ौमों के तिरस्कार के उद्देश्य से बनाया गया है। परन्तु यह ग़लती केवल इस कारण पैदा हुई है कि उनकी ईसाइयत की संकीर्णता उन को इस बात के मालूम करने से रोक बन गई कि क्या अजम और अरब का शब्द मनुष्य की ओर से है या ख़ुदा तआला की ओर से है। हालांकि वह अपनी पुस्तक में स्वयं इकरार कर चुके हैं कि भाषा के मुफ़रदों का अपनी ओर से बना लेना किसी मनुष्य का कार्य नहीं। अब हम उन पर और उनके जैसी विचारधारा रखने वालों पर स्पष्ट करते हैं कि अरबी भाषा में दो शब्द हैं जो एक दूसरे के मुक़ाबिल (विपरीत) हैं। एक तो अरब जिस के अर्थ सरस और सुबोध के हैं और दूसरा अजम जो इसके मुक़ाबले पर है जिस के अर्थ सरसविहीन और बंधी हुई भाषा है। यदि मैक्समूलर साहिब के विचार में ये दो शब्द प्राचीन नहीं हैं और इस्लाम ने ही संकीर्णता से उनका आविष्कार किया है तो उनको इन शब्दों का निशान देना चाहिए जो उनकी राय में असली शब्द थे। क्योंकि यह तो संभव नहीं कि किसी क़ौम का हमेशा से कोई भी नाम न हो, और जब प्राचीन मानना पड़ा तो सिद्ध हुआ कि यह इन्सानी बनावट नहीं अपितु वह शक्तिमान अन्तर्यामी जिसने विभिन्न योग्यताओं के साथ मनुष्य को पैदा किया है, उसने भिन्न-भिन्न योग्यताओं की दृष्टि से ये दो नाम स्वयं निर्धारित कर दिए हैं फिर दूसरा तर्क यह भी है कि यदि ये दो नाम अरब और अजम किसी मनुष्य ने केवल पक्षपात और तिरस्कार की दृष्टि से स्वयं ही बना लिए हैं तो निस्संदेह यह घटनाओं के विरुद्ध होंगे और केवल असफ़ल (झूठ) होगा। परन्तु हम इस पुस्तक में सिद्ध कर चुके हैं कि अरब का शब्द वास्तव में जैसा नाम वैसे गुण वाला है और निश्चित तौर पर यह बात सच है कि अरबी भाषा अपने मुफ़रदों की व्यवस्था और तरकीब

كتابا فى هٰذا الباب واضع الحق امام اعين الطلاب و
احسن الى الخلق كما احسن الىّ رب الارباب لعل اللّٰہ يهدى
به نفسًا الٰى امور الصواب و ما ابتغى به الا رضا الرب الوهاب

पुस्तक तैयार करूं। और सत्याभिलाषियों के सामने सच्चाई को रख दूं और ख़ुदा की सृष्टि पर उपकार करूं कि ख़ुदा तआला ने मुझ पर उपकार किया ताकि ऐसा हो कि कोई इस से सद्मार्ग को प्राप्त करे। और मैं इस सेवा से ख़ुदा तआला की प्रसन्नता के बिना और कुछ नहीं चाहता और वही मेरा अभीष्ट है न कि लोगों की प्रशंसा और

शेष हाशिया :- (बनावट) की उत्तमता तथा अन्य बड़ी विचित्र बातों की दृष्टि से ऐसे उच्चकोटि के स्थान पर है कि यही कहना पड़ता है कि दूसरी भाषाएँ उसके सामने गूंगे की तरह हैं और न केवल यही अपितु जब हम देखते हैं कि दूसरी समस्त भाषाएँ स्थूल पदार्थों की तरह जड़वत पड़ी हैं और धातु (मस्दर) की गति उन से ऐसी लुप्त है कि जैसे वह बिल्कुल निर्जीव हैं तो हमें विवश होकर यह मानना पड़ता है कि वास्तव में वे भाषाएँ बहुत ही पतन की अवस्था में हैं और अरबी भाषा में यह बात बहुत ही नर्म शब्दों में कही गई है कि अरब के मुक़ाबले के लोगों का नाम अजम है अन्यथा इस नाम का अधिकार भी उन भाषाओं तथा उन लोगों को प्राप्त न था और यदि उनके पतन का हाल ठीक-ठीक व्यक्त किया जाता तो यह शब्द अत्यन्त यथोचित था कि उन भाषाओं का नाम मुर्दा भाषाएँ रखा जाता। बहरहाल अब हम इस प्रस्तावना को केवल दावे के रूप में प्रस्तुत नहीं करते। हमने इस झगड़े के निर्णय के लिए पांच हज़ार रुपए का विज्ञापन इस पुस्तक के साथ प्रकाशित किया है। अत: यदि कोई इस वर्णन को झुठलाता है मैक्समूलर हों या कोई अन्य हो तो उनके लिए सीधा मार्ग यही है कि वह अपनी इस शेखी को संतोषजनक तर्कों के साथ सिद्ध करके दिखा दें और हमसे पांच हज़ार रुपया नक़द ले लें। हमें मैक्समूलर साहिब पर अत्यन्त खेद है कि उन्होंने ईसाई कहला कर अपनी पवित्र किताबों के विपरीत ऐतराज़ प्रस्तुत कर दिया है। क्योंकि उनकी पवित्र किताबों ने अरब के नाम को अरब के शब्द से ही वर्णन किया है।☆ क्या उनको इस पक्षपात के जोश के समय इंजील भी याद न रही। 'रसूलों के आमाल' को देखें कि उन के ख़ुदा ने अरब के शब्द को अरब के नाम से ही याद किया है। तो जब कि उनकी पवित्र किताबें भी अरब के शब्द का वह सम्मान यथावत रखती हैं जिसके मुक़ाबले पर अजम रखा है तो बड़ा अफ़सोस है कि उन्होंने ईसाई कहला

☆ हाशिया देखो यसिया 21 अध्याय - अन्नबुव्वत फ़िल अरब.

و ھو مقصودی لا مدح العالمین۔ و انی ما خرجت شیئًا من عیبتی
فبایّ حق اطلب محمدتی۔ و واللّٰہ ما خَرجَت من فمی کلمۃ و ما
انکشفت علیّ حقیقۃ الا بتفھیمہ و ما علمت شیئًا الا بتعلیمہ
واللّٰہ یعلم و ھو خیر الشاھدین۔ فلا تثن علی بصالح فی ھذہ الخُطۃ

के बिना और कुछ नहीं चाहता और वही मेरा अभीष्ट है न कि लोगों की प्रशंसा और मैंने अपनी योग्यता से कुछ नहीं निकाला। अत: मुझे यह अधिकार प्राप्त नहीं कि मैं अपनी प्रशंसा चाहूं और ख़ुदा की क़सम मेरे मुंह से कोई बात नहीं निकली और न कोई वास्तविकता मुझ पर खुली परन्तु इस प्रकार से कि ख़ुदा ही ने मुझे समझाया और ख़ुदा ने ही मुझे सिखलाया और इस घटना का ख़ुदा को ज्ञान है और वह सब गवाहों

शेष हाशिया :- कर इस नाम के सम्मान को स्वीकार करना अप्रिय समझा है और मुक़ाबले के नाम को भी स्वीकार नहीं किया। उनको सोचना चाहिए था कि उनकी पवित्र किताबों ने अरब के इस पवित्र अर्थ को सत्यापित कर लिया है तभी तो अरब को अरब के नाम से ही, जो सरसता की विशिष्टता की ओर संकेत कर रहा है, जगह-जगह नामित किया है। अत: इंजील के अस्तित्व से पहले बाइबल में भी जगह-जगह अरब का शब्द मौजूद है और जिन नबियों ने अरब के बारे में ख़बर दी है उन्होंने अरब का शब्द प्रयोग किया है। यदि अरब का शब्द ख़ुदा तआला की ओर से नहीं तो अनिवार्य होगा कि इंजील और वे समस्त किताबें जो पवित्र किताबें कहलाती हैं ख़ुदा तआला की ओर से नहीं। तो इस स्थिति में संकीर्णता के कारण इन समस्त किताबों को छोड़ना पड़ेगा।

उसका कथन- मेरे नज़दीक वास्तव में भाषा विज्ञान का आरम्भ पेंटेकोस्ट (Pentecost) के पहले दिन से हुआ।

मेरा कथन- चूंकि 'रसूलों के आमाल' में हवारियों का भिन्न-भिन्न प्रकार की बोली बोलना लिखा है। इसलिए मैक्समूलर साहिब इससे यह प्रमाण लेते हैं कि बोलियों के अन्वेषण की नींव ईसाई धर्म ने डाली है। अब बुद्धिमान लोग सोचें कि लेखक साहिब ऐसे निर्मूल वाक्यों के साथ कितने पक्षपात से काम ले रहे हैं। यह बात विचारणीय है कि 'आमाल' के दूसरे अध्याय में इस बात की व्याख्या की है कि हवारियों ने उस दिन वही बोलियाँ (भाषाएँ) बोलीं जो योरोशलम के यहूदी बोलते थे, यह नहीं लिखा कि उन्होंने उस समय चीनी भाषा या संस्कृत या जापान की भाषा में बातें करना आरम्भ कर दिया था। अपितु

واشكروا الله فان كلها من حضرة العزة هو الذى احسن الى وهو خير المحسنين۔ وانى رتّبتُ هذا الكتاب على مقدمة وابواب وخاتمة لطلاب ولا قوة الا بكريم ذى قوة ولا قدرة الا بقدير ذى عظمة نرجوا فضله ونطلب رحمه وهو ارحم الراحمين وانا

से अच्छा गवाह है। अत: हे पढ़ने वाले इस बारे में मेरी कुछ प्रशंसा न करना और ख़ुदा का धन्यवाद करो क्योंकि यह सब उसी की ओर से प्राप्त हुआ है। उसने मुझ पर उपकार किया और वह उन सबसे उत्तम है जो सदाचारी हैं और वह समस्त दयावानों से अधिक दयावान है। और मैंने इस पुस्तक को सत्याभिलाषियों के लिए एक प्रस्तावना और कई अध्यायों तथा एक उपसंहार पर विभाजित किया है और शक्तिमान कृपालु

शेष हाशिया :- साफ़ लिखा है कि उन समस्त बोलियों को यहूदी समझते थे क्योंकि योरोशलम में वे सब बोलियाँ बोली जाती थीं। तो इस स्थिति में हवारियों का चमत्कार क्या हुआ अपितु ऐसी बातों का उस युग में प्रस्तुत करना लज्जाजनक है। क्या यह संभव नहीं कि वे बोलियाँ जो उसी शहर में हवारियों की क़ौम और बिरादरी में बड़ी प्रचुरता से प्रयोग हो रही थीं हवारियों को भी याद हों। जबकि एक ही क़ौम, एक ही शहर, एक ही बिरादरी थी और साथ मिलकर रहने का सिलसिला चाहता था कि रिश्ता-नाता, दिन-रात की मुलाक़ातों के कारण कुछ लोग कुछ अन्य लोगों की बोलियों से परिचित हो जाएं तो इस बात में कौन सा आश्चर्य है कि हवारी भी अपने प्रिय भाइयों की बोलियों से परिचित हों। तो ऐसा चमत्कार उस चमत्कार से कुछ अधिक मालूम नहीं होता कि जो लाहौर के साधू भी दिखला दिया करते हैं। यहां यदि मैक्समूलर लिखते कि भाषा-विज्ञान का प्रारम्भ मसीह के कट्टर दुश्मनों से हुआ है और उन्होंने शुरू-शुरू में यह नींव डाली तो यह बात देखने में सच्ची प्रतीत हो सकती थी, क्योंकि 'आमाल' के इसी अध्याय में इस बात का इक़रार है कि यहूदी उसी शहर में जहां हवारी रहते थे लम्बे समय से यही बोलियाँ बोलते थे, तो प्राथमिकता यहूदियों की सिद्ध हुई और हवारियों को इतना सम्मान देना पर्याप्त है कि यह अनुमान करें कि बाज़ीगरों की तरह ये निकम्मे नहीं थे अपितु ये बोलियाँ उन्होंने अपनी बिरादरी से सीख ली थीं, क्योंकि उन्हीं में उन्होंने पालन-पोषण पाया था और असल बात यह है कि भाषाओं के अन्वेषण की ओर ध्यान दिलाने वाला पवित्र क़ुरआन के अतिरिक्त अन्य कोई संसार में प्रकट

شرعنا باسمه و نختم انشاء الله بفضله وهو خير المتفضلين۔ وهو المولَی المعین فایّاہ نعبد و ایاہ نستعین و نرید ان نری محامده علی راحلة قصیدة★ و نزیّنها بزهر اشعار جدیدة مع نعت رسول هادی کل نفس سعیدة لعل الله یقبل هذه الهدیة و یجعل فی کتابی البرکة والله یعطی من یطلب فبشرٰی للطالب۔

(ख़ुदा) की कृपा के अतिरिक्त कुछ भी शक्ति नहीं और उस सामर्थ्यवान प्रतिष्ठित की क़ुदरत के अतिरिक्त कुछ भी क़ुदरत नहीं। हम उसकी कृपा को ढूंढ़ते हैं और उसकी दया मांगते हैं वह सब दयावानों से अधिक दयावान है और हमने उसके नाम से आरंभ किया हैऔर इन्शाअल्लाह उस की कृपा से समाप्त करेंगे और वह सब कृपा करने वालों से उत्तम है और वह मौला मदद करने वाला है. अत: हम उसी की इबादत करते और उसी की सहायता चाहते हैं और हम इरादा करते हैं कि उसकी कीर्तियों को एक क़सीद:★ की सवारी पर दिखाएं और उन कीर्तियों को ताज़ा पद्यों के फूलों से रौशन करें अत: आशा से कि ख़ुदा तआला इस उपहार को स्वीकार करे और इस पुस्तक में बरकत रख दे। और जो ढूंढ़ता है ख़ुदा उसे देता है और ढूंढ़ने वालों को ख़ुशख़बरी हो।

★यह क़सीद: सोमवार के दिन 15 जुलाई 1898 ई. लगभग आठ बजे दिन के बाद आरंभ किया गया और उसी दिन अस्र के समय पांच बजे से पहले सौ शेर तैयार हो गए। और यह अल्लाह की अनुकम्पा तथा उसका विलक्षण रूप से दिया गया समर्थन है। इसी से।

शेष हाशिया:- नहीं हुआ। इसी पवित्र कलाम (वाणी) ने यह फ़रमाया-

وَ مِنۡ اٰیٰتِہٖ خَلۡقُ السَّمٰوٰتِ وَ الۡاَرۡضِ وَ اخۡتِلَافُ اَلۡسِنَتِکُمۡ وَ اَلۡوَانِکُمۡ ؕ اِنَّ فِیۡ ذٰلِکَ لَاٰیٰتٍ لِّلۡعٰلِمِیۡنَ۔ (अर्रूम-30/23)

अर्थात ख़ुदा तआला के अस्तित्व और तौहीद (एकेश्वरवाद) के निशानों में से पृथ्वी आकाश का पैदा करना और बोलियों तथा रंगों की भिन्नता है। वास्तव में ख़ुदा को पहचानने के लिए ये बड़े निशान हैं परन्तु उनके लिए जो विद्वान हैं। अब देखो कि भाषाओं के अन्वेषण की ओर कितना अधिक ध्यान दिलाया है कि उसे ख़ुदा को पहचानने का आधार ठहरा दिया है। क्या कोई ऐसी आयत इंजील में भी मौजूद है? मैं दावे से कहता हूं कि कदापि नहीं। अत: शर्म का स्थान है। इसी से

القصيدة فى حَمْد حضرة العزة و نعتِ خَيرِ البَرِيّة

ख़ुदा तआला की स्तुति और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की प्रशंसा में एक क़सीदः (काव्य)

يا من احاط الخلقَ بالاٰلائ   نُثنى عليك و ليس حولُ ثناءٍ

1. हे वह अस्तित्व जिसने (अपनी) नेमतों से सृष्टि को परिधि में लिया हुआ है। हम तेरी प्रशंसा करते हैं और (जबकि हमारे अंदर) प्रशंसा की शक्ति नहीं है।

انظر الىّ برحمة وعطوفةٍ   يا ملجئى يا كاشف الغمّاءٍ

2. मुझ पर दया और प्रेम की दृष्टि कर हे मेरी शरण! हे ग़म और बेचैनी को दूर करने वाले!

انت الملاذ و انت كهف نفوسنا   فى هذه الدنيا و بعد فناءٍ

3. तू ही शरण स्थली है और तू ही हमारे प्राणों का शरण-गृह है इस संसार में भी और मृत्यु के पश्चात् भी।

انا رئينا فى الظلام مصيبة   فارحم وانزلنا بدارضياءٍ

4. हम ने अंधकार के समय में मुसीबत देखी है। अतः तू दया कर और हमें प्रकाश के घर में पहुँचा दे।

تعفوا عن الذنب العظيم بتوبة   تنجى رقاب الناس مِن اعباءٍ

5. तू तौबः से बड़े गुनाहों को (भी) क्षमा कर देता है तू (ही) लोगों की गर्दनों को भारी बोझों से मुक्ति देता है।

انت المراد وانت مطلب مهجتى   و عليك كل توكلى و رَجَاءِى

6. तू ही मनोकामना है तू ही मेरी रूह का अभीष्ट है और तुझ पर ही मेरा पूरा भरोसा और आशा है।

اعطيتنى كاس المحبت ريقها   فشربت روحاءً علىٰ رَوْحاءٍ

7. तू ने मुझे प्रेम रूपी मदिरा का उत्तम प्याला प्रदान किया तो मैंने जाम पर जाम पिया।

انى اموت و لا يموت محبتى   يُدْرٰى بذكرك فى التراب نداءِى

8. मैं तो मर जाऊंगा परन्तु मेरा प्रेम नहीं मरेगा, (कब्र की) मिट्टी में भी तेरी चर्चा के साथ ही मेरी आवाज़ जानी जाएगी।

ما شاهدت عينى كمثلك محسِنًا   يا واسع المعروف ذا النعماءِ

9. मेरी आंख ने तुझ सा (कोई) उपकार करने वाला नहीं देखा। हे उपकारों में विशालता उत्पन्न करने वाले और हे नेमतों वाले!

انت الذى قد كان مقصد مهجتى   فى كلّ رشح القلم والاملاءِ

10. तू ही तो मेरे प्राण का अभीष्ट था। क़लम की हर बूंद (स्याही) में और लिखाए हुए लेख में।

لما رأيت كمال لطفك والندا   ذهب البلاء فما احس بلاءِى

11. जब मैंने तेरी कृपा की ख़ूबी और अनुदान देखे तो कष्ट दूर हो गए और (अब) मैं अपने कष्ट को महसूस ही नहीं करता।

انى تركت النفس مع جذباتها   لما اتانى طالب الطلباءِ

12. मैंने नफ़्स को उसकी भावनाओं सहित छोड़ दिया जब मेरे पास अभिलाषियों का अभिलाषी आया।

متنا بموت لا يراه عدوّنا   بعدت جنازتنا من الاحياء

13. हम ऐसी मृत्यु से मर चुके हैं जिसे हमारा शत्रु नहीं देख सकता। हमारा जनाज़ा जीवितों से बहुत दूर हो गया है।

لو لم يكن رحم المهيمن كافلى   كادت تعفينى سيُول بكائى

14. यदि मुहैमिन ख़ुदा की दया दृष्टि मेरी अभिभावक न होती तो निकट था कि मेरे रोने-धोने के सैलाब मेरे अस्तित्व को मिटा देते।

نتلوا ضياء الحق عند وضوحهٖ   لسنا بمبتاع الدجٰى ببراءِ

15. हम अल्लाह तआला के प्रकाश का उसके प्रकट होने के समय अनुकरण करते हैं। हम महीने की पहली रात के बदले अंधकार के ख़रीदने वाले नहीं हैं।

نفسى نأت عن كل ما هو مظلم   فانختُ عند منورى وجناءِى

16. मेरे प्राण हर उस चीज़ से दूर हैं जो अंधकारपूर्ण है, मैंने अपनी सुदृढ़ ऊंटनी को अपने रौशन करने वाले के पास बैठा दिया है।

لما رأيت النفس سدّ محجتى   اسلمتُها كالميت فى البيداء

17. जब मैंने देखा कि नफ़्स ने मेरा मार्ग रोक रखा है तो मैंने उसको (इस प्रकार) छोड़ दिया जैसे मुर्दा बियाबान में पड़ा हो।

انى شربت كُئوس موت للهُدٰى   فرأيتُ بعد الموت عين بقاءِى

18. मैंने हिदायत के लिए मौत के जाम पिए तो मैंने मौत के बाद (ही) अपनी अनश्वरता का झरना देखा।

فُقِدَت مراداتی بزمن لذاذة   فوجد تها فی فرقة وصلاء

19. आनन्द के समय में मेरी मनोकामनाएं गुम हो गईं। फिर मैंने उनको तन्हाई और जलन के समयों में पाया।

لو لا من الرحمن مصباح الهدی   کانت زجاجتنا بغیر صفاء

20. यदि दयालु ख़ुदा की ओर से हिदायत का दीपक न होता तो हमारा शीशा सफाई के बिना ही रह जाता।

انی ارٰی فضل الکریم احاطنی   فی النشأة الاخرٰی و فی الابداء

21. मैं देखता हूँ कि कृपालु ख़ुदा की कृपाओं ने मुझे अपने घेरे में ले रखा है। दूसरे जीवन में भी और प्रथम जीवन में भी।

اللّٰہ اعطانی حدایق علمه   لو لا العنایة کنت کالسفهاء

22. अल्लाह ने मुझे अपने ज्ञान के बाग़ प्रदान किए हैं यदि यह कृपा न होती तो मैं मूर्खों की तरह होता।

وقد اقتضت زفرات مرضٰی مقدمی   فحضرت حمالا کئوس شفاء

23. रोगियों की आंहों ने मेरे आगमन की मांग की है। इसलिए मैं शिफ़ा (रोग से मुक्ति) के जाम उठाकर उपस्थित हुआ हूँ।

اللّٰہ خلاقی و مهجة مهجتی   حِبٌّ فدته النفس کل فداء

24. अल्लाह ही मेरा सृष्टा और मेरे प्राण का प्राण है। वह ऐसा प्रियतम (माशूक़) है कि मेरी रूह उस पर पूर्णतया न्योछावर है।

و له التفرد فی المحامد کلها   وله علاء فوق کل علاء

25. उस को सम्पूर्ण प्रशंसनीय विशेषताओं में अद्वितीयता प्राप्त है तथा उसी को समस्त बुलन्दियों पर श्रेष्ठता प्राप्त है।

فانهض له ان کنت تعرف قدره   واسبق ببذل النفس والاِعْداء

26. यदि तू उसके महत्व को पहचानता है तो तू उसके लिए उठ खड़ा हो और अपनी जान को क़ुर्बान करके तथा तेज़ दौड़कर आगे बढ़।

ملکوته تبقی بقوة ذاته   و له التقدس والعلٰی بغناء

27. उस की मलकूत (फ़रिश्तों का स्थान) उसके अस्तित्व की शक्ति से स्थापित है और उसी को निस्पृहता के साथ पवित्रता और श्रेष्ठता

प्राप्त है।

غلبت علی قلبی محبت وجهه   حتی رمیتُ النفس بالالغاء

28. मेरे दिल पर उस के चेहरे का प्रेम विजयी हो गया यहां तक कि मैंने अपने नफ़्स को और उसकी इच्छाओं को खंडित और निष्क्रिय कर दिया।

و اری الوداد انار با طن باطنی   و اری التعشق لاح فی سیمائِی

29. मैं देखता हूँ कि प्रेम ने मेरे अन्तर्मन को प्रकाशमान कर दिया है और मैं देखता हूँ कि इश्क़ मेरे चेहरे पर प्रकट हो गया है।

ما بقی فی قلبی سواه تصور   غمرت ایادی اللّٰہ وجه رجائِی

30. मेरे हृदय में उसके अतिरिक्त (किसी) की कल्पना शेष नहीं रही। ख़ुदा तआला के उपकारों ने मेरी इच्छाओं के मुंह को ढक लिया है।

هوجاء الفته اثارت حُرّتی   ففدا جنانی صولت الهوجاء

31. उसके प्रेम की तेज़ हवाओं ने मेरी धूल उड़ा दी तो मेरा हृदय उन हवाओं की तीव्रता पर क़ुर्बान हो गया।

ابری الهموم بمشرفیة فضله   واللّٰہ کافٍ لی ونعم الراعی

32. मैं ग़मों का उपचार उसकी कृपा की तलवारों से करता हूँ और अल्लाह ही मेरे लिए पर्याप्त है और क्या ख़ूब निगरान है।

ماشم انفی مرغمًا فی مشهد   و اثرتُ نقع الموت فی الاعداء

33. मेरी नाक ने किसी स्थान पर भी अपमान की गंध नहीं सूंघी और मैंने दुश्मनों में मौत की धूल उड़ा दी है।

یا رب اٰمنا بانك واحد   رب السماء وخالق الغبرآء

34. हे मेरे रब्ब! हम ईमान लाए कि तू एक है, आकाश का प्रतिपालक और पृथ्वी का सृष्टा।

اٰمنتُ بالکتب التی انزلتها   و بکل ما اخبرتَ من انباء

35. मैं उन समस्त किताबों पर ईमान लाया जो तूने उतारीं और उन समस्त भविष्यवाणियों पर भी जिन की तूने सूचना दी है।

یا ملجائِی ادرك فانك موئلی   یا کهفی اعصمنی من الشغباء

36. हे मेरी शरण! मुझे संभाल कि तू ही मेरी ढाल है। हे मेरी शरण स्थली! मुझे (कमीनों के) शोर और बुराई से बचा ले।

یا رب ایّدنی بفضلك وانتقم   ممن یدس الدین تحت عفاء

37. हे मेरे प्रतिपालक! अपनी कृपा से मुझे शक्ति और ताक़त प्रदान कर और उससे प्रतिशोध ले जो धर्म को मिट्टी में दबाता है।

لا يعلمون نكات دين المصطفٰى   وتهالكوا فى بخلهم و رياءٍ

38. लोग मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के धर्म के रहस्यों को नहीं जानते और अपनी ही कृपणता और दिखावे में मर रहे हैं।

يؤذوننى قوم اضاعوا دينهم   نجس المقاصد مظلم الاٰراء

39. वे मुझे कष्ट देते हैं, वे ऐसी क़ौम हैं जिन्होंने अपना धर्म नष्ट कर दिया। अपवित्र उद्देश्यों और अंधकारपूर्ण रायें रखने वाले।

خشّوا و لا يُخشى الرجال شجاعة   فى نائبات الدهر والهيجاء

40. उन्होंने भयभीत किया परन्तु ख़ुदा के जवान अपनी बहादुरी के कारण समय के कष्टों और युद्ध में भयभीत नहीं होते।

زمع الاناس يحملقون كثعلب   يوذوننى بتحوب و مُواء

41. सामान्य लोगों में से कमीने लोग मुझे लोमड़ी की तरह घूरते हैं वे मुझे बिल्ली और लोमड़ी की आवाज़ों से कष्ट देते हैं।

حسدوا ۤ فسبوا حاسدين ولم يزل   ذوالفضل يحسده ذووالاهواء

42. उन्होंने ईर्ष्या की और ईर्ष्यालु बन कर गालियां दीं ऐसा हमेशा होता आया है कि श्रेष्ठ लोगों से तामसिक प्रवृत्ति वाले ईर्ष्या करते हैं।

صالوا بابداء النواجذ كالعدا   لمقالة ابن بطالة و وشاءٍ

43. उन्होंने शत्रुओं की तरह अपनी कुचलियां दिखाकर आक्रमण किया। चुग़ली करने और बेकार के कथनों से।

ان اللئام يكفرون و ذمّهم   ما زادنى الا مقام سناءٍ

44. कमीने लोग काफ़िर ठहराते हैं और उनकी निन्दा ने तो मुझे उच्च पद और श्रेष्ठता में और भी बढ़ा दिया है।

نضّواالسياب ثياب تقوٰى كلهم   ما بقى الا لبسة الاغواءٍ

45. इन सब ने अपने संयम के सम्पूर्ण वस्त्र उतार दिए हैं अब उनके पास कुछ नहीं रहा सिवाए गुमराह करने वाले लिबास के।

ما ان ارٰى غير العمائم واللحى   او اٰنفا زاغت بفرط مراءٍ

46. मैं पगड़ियों और दाढ़ियों के अतिरिक्त कुछ नहीं देखता या फिर ऐसी नाक जो उल्टे-सीधे वाद-विवाद की प्रचुरता से टेढ़ी हो गई हैं।

و اری تغیظھم یفور کلجّةٍ   موج کموج البحر فی الغلواءِ

47. मैं उनके क्रोध को देखता हूँ कि वह मंझधार की तरह जोश मार रहा है (अर्थात्) समुद्र की मौजों की तरह पथभ्रष्टता क्ी मौजें।

کلم اللیام اَسِنَّةٌ مذروبة   اعری بواطنھم لباس عواءِ

48. कमीनों की बातें तेज़ किए गए भाले हैं। भोंकने के लिबास ने उनके आन्तरिक को नंगा कर दिया है।

من مخبر عن ذلّتی و مصیبتی   مولای ختم الرسل اھل رباء

49. मेरे आक़ा, ख़ातुमुर्रसूल, उपकारी और श्रेष्ठ को मेरे अपमान और मेरे कष्ट की सूचना कौन देगा?

یا طیّب الاخلاق و الاسماءِ   جئناك مظلومین من جھلاءِ

50. हे पवित्र शिष्टाचार और पवित्र नामों वाले! हम असभ्य लोगों के अत्याचारों से पीड़ित होकर तेरे पास आए हैं।

ان المحبة لا تُضاع و تُشترٰی   انّا نحبّك یا ذُکاء سخاءِ

51. निस्संदेह प्रेम न तो नष्ट किया जा सकता है और न ख़रीदा जा सकता है। हे दान रुपी सूर्य! हम तुझ से प्रेम करते हैं।

انت الذی جمع المحاسن کلھا   انت الذی قد جاء للاحْیاءِ

52. तू ही है जिसने समस्त नेकियाँ जमा कर ली हैं। तू ही है जो जीवित करने के लिए आया है।

انت الذی ترك الھدون لربه   و تخیر المولی علی الحوباءِ

53. तू ही है जिसने अपने रब्ब के लिए (दुश्मनों से) सुलह नहीं की और अपने प्राणों पर अपने मौला को प्राथमिकता देकर ग्रहण कर लिया।

یا کنز نعم اللّٰہ و الا لاء   یسعی الیك الخلق للارکاءِ

54. हे अल्लाह तआला की नेमतों और अनुदानों के ख़ज़ाने! सृष्टि तेरी ओर शरण लेने के लिए दौड़ी आ रही है।

یا بدر نور اللّٰہ و العرفان   تھوی الیك قلوب اھل صفاءِ

55. हे अल्लाह के नूर और इरफ़ान के चन्द्रमा! नेक लोगों के दिल तेरी ओर टूटे पड़ते हैं।

یا شمسنا یا مبدء الانوار   نورت وجة المُدن و البیداء

56. हे हमारे सूर्य और हे प्रकाशों के स्त्रोत! तू ने शहरों और वीरानों

के चेहरे प्रकाशमान कर दिए।

انی اری فی وجهك المتهلل   شانًا يفوق شيون وجه ذکاء

57. मैं तेरे दमकते हुए चेहरे में ऐसी शान देखता हूं जो सूर्य के चेहरे की शानों से बढ़कर है।

ما جئتنا فی غیر وقت ضرورة   قد جئتَ مثل المزن فی الرمضاء

58. तू हमारे पास असमय और अनावश्यक नहीं आया। तू ऐसे आया है जैसे प्रचंड गर्मी में वर्षा आ जाए।

انی رأیت الوجه وجه محمد   وجه کبدرا اللیلة البلماءِ

59. मैंने वह चेहरा देखा है जो मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का चेहरा है ऐसा चेहरा मानो चौदहवीं रात का चंद्रमा हो।

شمس الهدی طلعت لنا مِن مکة   عین الندانبعت لنا بحراء

60. हिदायत का सूर्य हमारे लिए मक्का से उदय हुआ (और) बख़्शिशों का झरना हमारे लिए हिरा (पहाड़ी) से फूट पड़ा।

ضاهت اياةُ الشمس بعضَ ضيائه   فاذا رأيت فهاج منه بكائِ

61. सूर्य की किरणें उसके प्रकाश के एक भाग के समान हैं जब मैंने (उस सूर्य को) देखा तो उससे मेरे रोने में बेचैनी पैदा हो गई।

اعلی المهيمن هممنا فی دینهٖ   نبنی منازلنا علی الجَوزاء

62. मुहैमिन ख़ुदा ने अपने धर्म के बारे में हमारी हिम्मतों को बुलन्द किया (अत:) हम अपनी मंज़िलें तीसरे आकाशीय नक्षत्र मिथुन पर बना रहे हैं।

نسعٰی کفتیان بدین محمد   لسنا کرجل فاقد الاعضاءِ

63. हम मुहम्मद के धर्म के लिए जवानों की तरह प्रयास और यत्न करते हैं। हम उस आदमी की तरह नहीं जिसके अंग ही ग़ायब हो गए हैं।

نلنا ثريّاء السماء و سمکه   لنردّ ایمانا الی الصّیداءِ

64. हम आकाश के सुरैया सितारे और उस की बुलंदियों तक पहुँच गए ताकि हम ईमान को पृथ्वी पर वापस ले आएं।

انا جُعِلنا کالسیوف فندمغ   رأس اللئام و هامة الاعداءِ

65. हमें तलवारों की तरह बनाया गया है। अत: हम कमीनों के सर और दुश्मनों की खोपड़ियां तोड़ डालते हैं।

واها لاصحاب النبی و جنده   حفدوا الیه بشدة و رخاءِ

66. नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सहाबा और सेनाओं को बधाई हो जो दु:ख में भी और सुख में भी आपकी सेवा में उपस्थित रहते हैं।

غُمسوا ببركات النبى و فيضه   فى النور بعد تمزّق الاهواءٍ

67. वे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बरकतों तथा दानशीलता से तामसिक इच्छाओं को टुकड़े-टुकड़े करने के बाद प्रकाश में डूब गए।

قاموا باقدام الرسول بغزوه   حضروا جناب امامنا لفداءٍ

68. वे युद्धों में रसूल के क़दमों में खड़े रहे। वे हमारे इमाम के पास न्योछावर होने के लिए उपस्थित हुए।

فدمٓ الرجال لصدقهم فى حبهم   تحت السيوف اُريق كالاطلاءٍ

69. अपने प्रेम में उनकी सच्चाई के कारण उन मर्दों का रक्त तलवारों के नीचे इस प्रकार बहाया गया जैसे हिरण के नवजात बच्चे (को ज़िबह किया जाए)

بلغ القلوبُ الى الحناجر كربة   فتخيروا لِلّٰه كل عناءٍ

70. (जब) बेचैनी से उनके दिल हंसलियों (हलक़) तक पहुँच गए तो उन्होंने अल्लाह के लिए प्रत्येक संकट को अपना लिया।

دخلوا حديقة ملّة غرّاءٍ   عذب الموارد مثمر الشجراءٍ

71. वे प्रकाशमान मिल्लत के बाग़ में दाख़िल हो गए जो झरनों वाला और फलदार वृक्षों वाला है।

و فنوا بحبّ المصطفٰى فبحبهٖ   قطعوا من الاٰباء والابناءٍ

72. वे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के प्रेम में फ़ना हो गए और उसके प्रेम के कारण अपने बाप-दादों और बेटों से अलग हो गए।

قبلوا لدِين الله كل مصيبة   حتى رضوا بمصائب الاجلاءٍ

73. उन्होंने ख़ुदा के धर्म के लिए हर संकट को स्वीकार कर लिया। यहां तक कि वे प्रवास (हिजरत) के संकटों पर भी राज़ी हो गए।

قد اٰثروا وجه النبى و نوره   و تباعدوا من صحبة الرفقاءٍ

74. उन्होंने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के चेहरे और उसके नूर को प्राथमिकता दी और अपने साथियों की संगत से दूर चले गए।

فى وقت ظلمات المفاسد نوّروا   وجدوا السنا فى الليلة الليلاءٍ

75. उत्पातों के अंधकारों के समय उनको प्रकाशमान किया गया। उन्होंने अत्यन्त अंधकारमय रात में प्रकाश को पा लिया।

نهب اللئام نشوبهم فمليكهم   اعطى جواهر حكمة وضياءٍ

76. कमीने लोगों ने उनकी जायदादें छीन लीं तो उनके (आकाशीय बादशाह ने उन को) हिकमत और प्रकाश के जवाहिरात प्रदान किए।

واهًا لهم قُتلوا لعزّة ربهم   ماتوا له بصداقتٍ وصفاءٍ

77. बधाई हो उन को वे अपने रब्ब के सम्मान के लिए क़त्ल किए गए। उन्होंने उसके लिए सच्चाई और निश्छलतापूर्वक प्राण दे दिए।

شهدوا المعارك كلها حتى قضوا   لرضا المهيمن نحبهم بوفاء

78. वे समस्त युद्धों में उपस्थित रहे यहां तक कि उन्होंने मुहैमिन ख़ुदा की प्रसन्नता के लिए पूर्ण वफ़ादारी के साथ अपनी प्रतिज्ञा को पूरा कर दिया।

ما فارقوا سبل الهُدٰی و تخيروا   جور العدا و بوائق الهيجاء

79. उन्होंने हिदायत के मार्गों को बिल्कुल न छोड़ा और शत्रुओं का अत्याचारों और बियाबानों के संकटों को ख़ुशी-ख़ुशी अपना लिया।

هٰذا رسول قد اتينا بابه   بمحبّةٍ و اطاعةٍ و رضاءٍ

80. यही वह रसूल है जिस के दरवाज़े पर हम प्रेम, आज्ञापालन और सहमती के साथ आए हैं,।

ياليت شُقّ جنانی المتموّج   لِاُرِی الخلايق بحرها كالماء

81. काश मेरा लहरें मारता हुआ हृदय चीरा जाता ताकि मैं लोगों को पानी की तरह उसका समुद्र दिखा देता।

انا قصدنا ظلّه بهواجر   كالطير اذ يأوی الی الدفواءٍ

82. हम ने दोपहरों की गर्मी में उसकी छाया का इरादा किया है उस पक्षी की तरह जब वह बरगद के वृक्ष की शरण लेता है।

يا من يكذب ديننا و نبيّنا   و تسبُّ وجه المصطفٰی بجفاء

83. हे वह व्यक्ति! जो हमारे धर्म और हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को झुठलाता है और मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पवित्र अस्तित्व को अन्याय पूर्वक गालियां देता है।

والله لست بباسل يوم الوغٰی   ان لم اشن عليك يا ابن بغاءٍ

84. ख़ुदा की कसम! मैं युद्ध के दिन बहादुर नहीं हूँगा यदि मैं तुझ

पर, हे उद्दण्ड इन्सान! सहसा आक्रमण न करूं।

انا نشاهد حسنه وجماله   وملاحة فی مقلةٍ کحلاءِ

85. हम तो उसकी सुन्दरता और खूबसूरती देख रहे हैं और सुर्मा लगी आँखों में लावण्य भी।

بدر من الله الکریم بفضله   والبدر لا یغسوا بلغی ضِراء

86. वह ख़ुदा वन्द करीम की ओर से चौदहवीं रात का चंद्रमा है और उसकी कृपा से। और चौदहवीं रात का चंद्रमा किसी अंधे की निरर्थक बातों से प्रकाशहीन नहीं हो जाता।

لا یبصر الکفار نور جماله   والموت خیر من حیات غشاءِ

87. काफ़िर उसके सौन्दर्य का प्रकाश नहीं देख सकते। बेहोशी के जीवन से तो मौत अच्छी है।

انا براء فی مناهج دینهٖ   من کل زندیق عدوّ دهاءِ

88. हम उसके धर्म के मार्गों में (चलते हुए) हर नास्तिक और बुद्धिहीन से विमुख हैं।

نختار آثار النبی وامره   نقفوا کتاب الله لا الاراءِ

89. हम नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आसार और आदेशों को ग्रहण करते हैं, हम अल्लाह की किताब का अनुकरण करते हैं न कि रायों का।

یا مُکفری ان العواقب للتقٰی   فانظر مآل الامر کالعقلاء

90. हे मुझे काफ़िर कहने वाले! अच्छा अंजाम तो संयमी का होता है। इसलिए बुद्धिमानों की तरह कामों के अंजाम पर नज़र रख।

انی اراك تمیس بالخیلاء   أ نسیت یوم الظعن والاسراء

91. मैं तुझे देखता हूं कि तू मटक कर गर्व से चलता है, क्या तू सफ़र का दिन और रात की रवानगी भूल गया।

تُب ایها الغالی و تأتی ساعة   تمسی تعض یمینك الشلّاء

92. हे हद से गुज़रने वाले! तौब: कर। वह घड़ी आती है कि तू अपने निष्क्रिय हाथ को दांतों से काटेगा।

افتضربنّ علی الصفات زجاجة   هوّن علیك و لا تمت بِاِباء

93. क्या तू पत्थर की सिल पर शीशे को मारता है, स्वयं पर दया

कर और अहंकारपूर्ण इन्कार से तबाह न कर।

غرّتك اقوال بغير بصيرة   سُترت عليك حقيقة الانباءٍ

94. विवेकहीन कथनों ने तुझे धोखा दिया है तुझ पर भविष्यवाणियों की सच्चाई छुपा दी गई है।

ان السموم لشر ما فی العالم   ومن السموم غوايل الآراء

95. निस्संदेह विष संसार में सब से बुरी चीज़ है और गुमराह रायें भी विषों में से एक विष हैं।

جاوزتَ بالتكفير عرصات التقٰی   اشققت قلبی او رأيت خفائی

96. तक्फ़ीर (मुसलमान पर कुफ़्र का फ़तवा लगा) करके तू संयम के मैदानों को फलांग गया है। क्या तूने मेरा दिल चीरा है या मेरा कोई गुप्त गुनाह देखा है।

تأتيك اٰياتی فتعرف وجهها   فاصبر و لا تترك طريق حياءٍ

97. तेरे पास मेरे निशान आएंगे और तू उनको पहचान लेगा। अत: सब्र कर और शर्म के मार्ग को न छोड़।

ان المقرب لا يضاع بفتنة   والاجر يكتب عند كل بلاء

98. सानिध्य प्राप्त (व्यक्ति को) आज़माइश से मना नहीं किया जाता और हर बला के समय उस का प्रतिफल लिखा जाता है।

يا ربّنا افتح بيننا بكرامةٍ   يا من يری قلبی و لُبَّ لحائِی

99. हे हमारे प्रतिपालक! तू हमारे मध्य सम्मानपूर्ण निर्णय कर। हे वह अस्तित्व जो मेरे हृदय को और मेरे बाह्य की आन्तरिक वास्तविकताओं को देख रहा है।

يا من اری ابوابه مفتوحة   للسائلين فلا ترد دعائی

100. हे वह अस्तित्व! जिस के द्वार को मैं मांगने वालों के लिए खुले देखता हूं, अत: तू मेरी दुआ को अस्वीकार न करना।

المقدمه

فی ذکر اسباب تالیف الکتاب وبیان ماعُلِّمنا من اللّٰهِ الوهاب

اعلم حفظك اللّٰه القیّوم و ایّدك فی خیرٍ تروم ان ھذا الزمان ھو الزمان الظلوم کانه الیوم المسموم او البلاد الجروم ضاعت فیه المعارف والعلوم وشاعت البدعات والرسوم وخلصت للدنیا الھمم والھموم و حمئت بئار الطبائع ونزح الجموم وحسبوا الزقّوم کانه الزقّوم و قلّ المؤمنون وکثر اللئام الخصوم وجعلوا المسِیْح الٰھا وقد رأو انه المسکین الجھوم و کذالك جاءت الایّام

भूमिका

इस पुस्तक के लिखने का कारण और जो कुछ प्रदान करने वाले ख़ुदा ने हमें सिखाया है उसका वर्णन

हे इस पुस्तक के पढ़ने वाले स्थापित रहने वाला ख़ुदा तुझे ग़लतियों से सुरक्षित रखे और प्रत्येक नेक उद्देश्य में तेरा सहायक हो जाए कि यह युग बहुत अत्याचारी युग है मानो वह एक अत्यन्त गर्म दिन है या ऐसा देश है जिसमें भीषण गर्मी पड़ती है। इस युग में (भौतिक) ज्ञान और अध्यात्म ज्ञान नष्ट हो गए। तथा रस्में और बिदअतें फैल गईं और समस्त गम तथा समस्त हिम्मतें सर्वथा संसार के लिए हो गईं और तबियतों के कोयलों में काली मिट्टी पड़ गई और बहुत पानी वाला कुआं सूख गया और इस युग के लोगों ने थूहर के वृक्ष को ऐसा समझ लिया कि जैसे वह खजूरें और मक्खन है। और मोमिन कम हो गए और कमीने झगड़ने वाले अधिक हो गए। और मसीह को ख़ुदा बना दिया, हालांकि जानते थे कि वह दरिद्र और असहाय है तथा इसी प्रकार ऐसे ही अशुभ दिन निरन्तर आ गए, तो हम यह शिकायत अल्लाह के सामने करते हैं जो सब

الحسوم فنشکوا الَی اللّٰہ ربّ العالمین والّذی نوّر الشّھَب وازجٰی للمطر السُّحب وخلق السّمٰوات طباقًا وطبّقھا اِشراقًا انّ الظلمت کثرت فی ھٰذا الزمان وحلَّتْ فی جذر قلوب الرّجالِ والنّسوان و مالتِ الطبائع الی الضّیم والزّور واخْتارت سُبُل الفسق والفجور وترك الناس طرق الدّیانة والامانة و رضوا بانواع الفریة والخیانة و قلّبوا امور الدین یتخذون الجدّ عبثًا و یحسبون التِبر خبثًا و لا یمشون الّا زائغین سُلب منھم الفھم الذی یصقل الخواطر و یدری الجھام والماطر فبرزوا کالانعام راتعین لا یعرفون الزمان والوقت الّذِی قد حان و لا یسلکون مسلك الحق والحقیقة ولا یستقرون مفتاح الطریقة

लोकों का रब्ब है। और उस ख़ुदा की क़सम है जिसने सितारों को प्रकाशित किया और वर्षा के लिए बादलों को चलाया और आकाशों की तह के बाद तह बनाईं और उनको प्रकाश से भर दिया कि यह बात वास्तव में सच है कि इस युग में अन्धकार बहुत अधिक हो गया है तथा पुरुषों एवं स्त्रियों के दिलों में बैठ गया है और स्वभाव अत्याचार और झूठ की ओर झुक गए और मक्कारी तथा झूठ और असंतुलन के तरीकों को ग्रहण कर लिया है और लोगों ने ईमानदारी एवं अमानत के तरीकों को छोड़ दिया है और झूठ तथा बेईमानी पर राज़ी हो गए हैं और धर्म के आदेशों को परिवर्तित कर डाला है। सच और हिकमत की बातों को बेकार समझते हैं और सोने को एक मैल बता रहे हैं और जब चलते हैं तो टेढ़े चलते हैं। उनकी वह समझ ही जाती रही जो हृदयों को साफ़ करती और बरसने वाले तथा न बरसने वाले बादल के निशान मालूम कर लेती है। तो वे चारपायों की तरह केवल चरने वाले ही सिद्ध हुए। वे युगों को नहीं पहचानते और न उस समय को जो आ गया। वे सच और सच्चाई के मार्गों पर नहीं चलते और उस मार्ग की कुंजी को नहीं ढूंढते और क़ुरआन में न्यायकर्ताओं की तरह विचार नहीं करते और ख़ुदा के वरदान की वर्षा का बरसना नहीं चाहते और

و لا یتدبّرون القراٰن منصفین و لا یستوکفون صیّب الفیضان
و یتیھون فی موماۃ الخسران کالعمین یؤذون بحدۃ الکلمات
و لا کحد الظباۃ و لا یبالون مکانۃ الصادقین و اذا قیل لھم لا
تفسدوا و اتقوا اللّٰہ و اھتدوا قالوا انما نحن اول المصلحین
فبما کانوا یکذبون و لا یترکون الفساد و یزوّرون ختم
اللّٰہ علی قلوبھم و سقاھم سمّ ذنوبھم فما وُفّقوا و صاروا من
الھالکین و قد نُصِحُوْا فا کدی النصیحۃ و وُعِظُوْا فما نفع
الموعظۃ و ما اروا الا عنادا و ما زادوا الا فسادا و تراھم یعثون
فی الارض مفسدین نسلوا من کل حدبٍ و صاروا سبب کل
ندبٍ و ساروا علی نحب صایدین و اشاعوا الفسق و الفجور

क्षति के ऐसे जंगलों में फिरते हैं जिन में न दाना है न पानी है और कटाक्ष पूर्ण बातों के साथ दु:ख देते हैं और वे बातें इतनी तेज़ नहीं जैसा कि तलवारें बल्कि उन से बढ़कर हैं। और ये लोग सच्चों की शान की कुछ परवाह नहीं रखते और जब कहा जाए कि फ़साद मत करो और ख़ुदा से डरो तथा हिदायत पा जाओ तो उनका उत्तर यह है कि हम तो प्रथम श्रेणी के सुधारक हैं। तो इसलिए कि वे झूठ बोलते हैं और फ़साद को नहीं छोड़ते और झूठ के प्रतिबंधों में व्यस्त हैं। ख़ुदा ने उनके हृदयों पर मुहर लगा दी और उन्हीं के पापों का ज़हर उन्हें पिला दिया तो वे सामर्थ्य प्राप्त न हुए और मर गए और उनको नसीहत की गई तो नसीहत ने उन्हें कुछ लाभ न दिया और उन्हें उपदेश किया गया परन्तु उपदेश ने कुछ (उन्हें) फ़ायदा न दिया और उन्होंने वैर के अतिरिक्त कुछ न दिखाया और फ़साद के अतिरिक्त कुछ अधिक न किया और तू देखता है कि वे पृथ्वी पर फ़साद करते फिरते हैं। वे प्रत्येक बुलंदी से दौड़े और वे प्रत्येक मातम का कारण हो गए और शिकार मारने के लिए उन्होंने जल्दी-जल्दी क़दम उठाए और उन्होंने व्यभिचार तथा निर्लज्जता और झूठ को फैलाया क्योंकि वे स्वयं व्यभिचारी थे और इसीलिए तू देखता है कि अमानत कम हो गई और बेईमानी बहुत हो गई

والكذب والزور بما كانوا فاسقين فلذٰلك ترٰی ان الامانت قلّت والخيانت كثرت والوقاحت افظعت والضلالت ضنأت و كلبة الفسق اجعلت و نعیّ الشرّ نُسأت وحامل المواعظ ايتنت وهجان الهجر سُمِّنَت وعسبرة الحق عُبطَتٌ فمابكت عليها عينٌ و ما ذرفت بل دابة الباطل سُرِحتٌ فرعت حمی الحق حتی تضلّعت فما منعها احد بل ایدی المسلمین وُثئت و سيوف العدا انطلقت فاخذ الاحرار و لحومهم سُفّدت ثم نُدأت ثم خُضمت و قُضمت والقيامة قامت و هوجاء الفتن اشتدّت وسيل الشرور غلبت و انكسر السكر والمصيبة جلّت ونزلت النوازل وجبأت وارض التقوٰی بردت وسماء

और बेशर्मी सीमा से अधिक फैल गई और गुमराही के बहुत से बच्चे हो गए और व्यभिचार की कुतियाँ उठान में आई और शरारत की व्यभिचारिणी के मामूली दिन टल गए और नसीहतों की गर्भवती उल्टा जनीं और व्यर्थ बकवास के ऊंट भेंट किए गए और तेज़ तथा नजीब ऊंटनी सच्चाई, जवानी ताज़गी और स्वास्थ्य के बावजूद ज़िबह की गई तो उस पर कोई भी न रोया और न आंसू बहाए अपितु झूठ का टट्टू चारागाह में छोड़ा गया तो वह सच्चाई के घास की हरियाली को चर गया, यहां तक कि उसकी कोखें भर गईं तो उसको किसी ने मना न किया बल्कि मुसलमानों के हाथ तोड़े गए और शत्रुओं की तलवारें मियान से बाहर निकल गईं। अत: शालीन लोग पकड़े गए और उनके मांस सीखों (छड़ों) पर चढ़ाए गए फिर भूनने के लिये आग पर रखे गए फिर दांतों से चबाए गए और पीस कर खाए गए और क़यामत आ गई और शरारतों की बाढ़ विजयी हुई और बाँध टूट गया और संकट भारी हो गया और दुर्घटनाएं आईं और सहसा उन्होंने आपकड़ा और संयम की भूमि पर ओले पड़े और नेकी का आकाश बादल के नीचे छुप गया और दुष्कर्म बहुत लम्बे हो गए और उसकी रात आधी चली गई और पापों ने दहाड़ मारी और आक्रमण किया यहां तक कि नेकी की पसली तोड़

الصلاح تغيمت والمعصية امتدت وليلتها جثمت والذنوب اغارت وصالت حتى جنبت الصلاح واسعطت والنفوس ندت وعين الانصاف رُمدت وقروح الخبث تذيّأت و كل سليطة هَرَأتْ والفتنة تفاقمت وسهامها من كل جهة مطرت والخباثة تزوّجت فحملت و كمثلها اجزءت فجايأتها المتربة وتواردت والبلاد خربت ورهام المصائب تصوّبت فما نجت نفس اَيْمنت او اشأمت او عرضت و ما عصمت من الفقر و ان طهفلت و ما تركها العدا و ان بابأت و كم من نفسٍ ارتدت بعد ما هلهلت و كفرت بعد ما آمنت وحمدلت فرأينا فى هذه الليلة اللّيْلاءِ ما عرّفنا جهد البلاءِ وقصصنا قصص

डाली और उसके सीने पर भाला मारा और लोग आवारा, आज़ाद तथा अहंकारी हो गए और न्याय की आंखें नेत्रानिष्यन्द (आंख आने) के रोग से ग्रस्त हो गईं और गंदगी के ज़ख्म बहुत खराब हो गए और प्रत्येक गुस्ताख ने गालियां दीं और उपद्रव बहुत बढ़ गया और हर तरफ से उसके तीर बरसे और गंदगी से निकाह कर लिया तो उसे गर्भ ठहर गया और उसने अपने रूप जैसी लड़कियां जनीं तो वे गरीबी और भूख साथ लाईं और देश वीरान हो गया और संकटों की बारिश बरसी तो उन संकटों से कोई व्यक्ति मुक्ति न पा सका चाहे वह यमन की ओर गया या शाम की ओर या मक्का, मदीना और उनके आस-पास के देहात को देख कर वापस आया और कोई भूख से न बचा। यद्यपि वह चना या मकई का अनाज खाता रहा और उसी अनाज पर हमेशा के लिए संतोष किया और अहद के तौर पर उसी का खाना दस्तूर रखा और दुश्मनों ने उसे न छोड़ा यद्यपि उसने कहा कि मेरा बाप तुम पर कुर्बान हो और बहुत से मुर्तद हो गए और इसके बाद वे कहते थे कि ला इलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदु र्रसूलुल्लाह, धर्म से फिर गए और ईमान लाने तथा अल्हम्दोलिल्लाह कहने के बाद काफ़िर हो गए तो हमने अँधेरी रात में वे संकट देखे जिन्होंने हमें समझा दिया कि अत्यन्त कठोर विपत्ति

الاعداء مسترجعين محوقلين۔

والذين يقولون انا نحن علماء الاسلام و فحول ملّت خير الانام فنراهم الكسالى الاٰكلين كالانعام لا ينصرون الحق بالاقوال والاقلام الا قليل من عباد الله ذى الاكرام و ترٰى اكثرهم فى حقد اهل الحق كاللئام ما يجيئهم حق الا يستعير بينهم الاصطخاب ولا يدرون ما الحقّ والصواب لا يمتنعون من الفتنة و يلبسون الحق بغوائل الزخرفة ليفتنوا من ازرائهم قومًا جاهلين والذى اقامه الله لاصلاح الناس يحسبونه كالخناس ويكفرون المؤمنين لا تنقل خطواتهم الا الى التزوير ولا تميلُ السنهم الا الى التكفير ولا يعلمون ما خدمة الدين

इसे कहते हैं और हम ने ये सब किस्से शत्रुओं के इस हालत में लिखे जब कि हम इन्ना लिल्लाह व इन्ना इलैहि राजिऊन कहते थे और ला हौला वला कुव्वता इल्ला बिल्लाह पढ़ते थे।

और वे लोग जो कहते हैं कि हम इस्लाम के उलेमा हैं और नबी के धर्म के एक प्रकाण्ड विद्वान हैं तो हम उनको एक आलसी अस्तित्व और पशुओं की भांति खाने पीने वाले देखते हैं वे अपनी बातों और कलमों से सच की कुछ भी सहायता नहीं करते और अल्लाह तआला के इन विशेष बन्दों के अतिरिक्त जो थोड़े हैं अधिकतर को तू ऐसा पाएगा कि अल्लाह वालों से वैर रखते होंगे। कभी ऐसा नहीं हुआ कि कोई सच्चाई की बात सुनकर उनमें शोर तथा कोलाहल पैदा न हो। वे नहीं जानते कि सच और सही क्या चीज़ है। वे फित्ना से नहीं रुकते और सच के साथ झूठी बातों को मिलाते हैं ताकि अपनी नुक्ता: चीनी से मूर्खों को धोखे में डालें। और वह व्यक्ति जिसे ख़ुदा तआला ने लोगों के सुधार के लिए खड़ा किया है उसे एक खन्नास (शैतान) समझते हैं और मोमिनों को काफ़िर ठहराते हैं। उनके क़दम झूठ बोलने के अतिरिक्त किसी दिशा में हरकत नहीं करते और उनकी जीभें काफ़िर बनाने के अतिरिक्त किसी ओर नहीं झुकती

لبسوا الحق بالباطل و كذٰلك عبطوا علينا الكذب متعمّدين فهذا اعظم المصائب علٰى دين خير البرية ان العلماء خرجوا من التّديّن والامانة و فعلوا افعال اعداء الملّة واجناؤا على الكذب والفرية ليحفظوها مِن صول الحق والحكمة و لا يبالون ديانا ذا العظمة و ينصرون الكفرة كالمعاندين واحتكاؤا فى انفسهم انهم على الصّواب و ما يسلكون الا مسلك التباب و لا يعلمون الا الامانى و لا يبتغون المعانى و ما كانوا ممعنين يسمعون الحق فيأبون كأنهم الى الموت يُدْعَوْن و يرون ان الدنيا غدور والدهر عثور ثم يكبّون عليها كالعاشقين و لهم عمل يعملون فى الدار و عمل اٰخر للانظار فويل للمرائين و قد رأوا فساد

और नहीं जानते कि धर्म की सेवा क्या चीज़ है। उन्होंने सच को झूठ के साथ मिलाया और जान-बूझ कर हम पर झूठ बाँधा। अत: ये नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के धर्म पर एक बड़ा संकट है कि इस युग के अधिकतर उलेमा ईमानदारी और अमानत से बाहर निकल गए हैं और धार्मिक शत्रुओं की भांति काम कर रहे हैं और झूठ पर गिर जाते हैं ताकि उसे सच के आक्रमण से बचा लें और महा-तेजस्वी ख़ुदा की कुछ भी परवाह नहीं करते और वैर रखने वालों की तरह काफ़िरों को सहायता दे रहे हैं और अपने दिलों में यह बात बिठा ली है कि वही सच पर हैं। हालांकि सर्वथा तबाही के मार्ग पर चलते हैं। वे केवल अपनी कामवासनाओं की इच्छाओं को जानते हैं और माफ़ी को नहीं ढूंढते और न विचार करते हैं। सच्ची बात सुनकर फिर उद्दंडता करते हैं जैसे वे मौत की ओर बुलाए जाते हैं और देखते हैं कि दुनिया बड़ी बेवफ़ा है और युग मूंह के बल गिरने वाला है फिर दुनिया पर प्रेमियों की भांति गिरते हैं और उनके कुछ काम वे हैं जो घर में करते हैं तथा कुछ वे काम हैं जो दिखाने के लिए हैं। तो दिखावा करने वालों पर तबाही है। उन्होंने ख़ूब देख लिया कि काफ़िरों का फ़साद कैसा बढ़ गया है और वे खूब जानते हैं कि धर्म उपद्रवियों का निशाना बन गया

الکفار و علموا انّ الدّین صار غرض الاشرار و دیس الحق تحت ارجل الفجار ثم ینومون نوم الغافلین و لا یلتفتون الیٰ مواسات الدین یسمعون کل صیحةٍ موذیة ثم لا یبالون قول کفرة فجرة و لا یقومون کذی غیرة بل یثقلون کالحبالیٰ و ما ھم بحبالیٰ۔ و اذا قاموا الیٰ خیر قاموا کسالیٰ و ما تجد فیھم صفة الجاھدین و اذا رأو حظ انفسھم فتراھم یھرعون الیه واثبین

ھذا حال علماءنا الکرام واما الکفار فیجاھدون لاطفاء الاسلام و ما کان نجواھم الا لھذا المرام و ما کانوا مُنتھین حرفوا کتبا و اخبارًا و مکروا مکرًا کُبّارًا و زوّرُوا اطوارًا و اھلکوا خلقًا کثیرًا من الجاھلین قتلوا زُمرا کثیرة

और सच व्यभिचारियों के पैरों के नीचे कुचला गया फिर लापरवाहों की भांति पड़े सोते हैं और धर्म की हमदर्दी के लिए कुछ भी ध्यान नहीं देते। प्रत्येक दु:ख देने वाली आवाज़ को सुनते हैं फिर काफ़िरों, अपवित्रों की बातों की कुछ भी परवाह नहीं रखते और एक स्वाभिमानी इन्सान की तरह नहीं उठते बल्कि गर्भिणी स्त्रियों की तरह स्वयं को बोझल बना लेते हैं हालांकि वे गर्भिणी नहीं। जब किसी नेकी की ओर उठते हैं तो सुस्त और ढीले उठते हैं और तू उनमें श्रमजीवियों के लक्षण नहीं पाएगा और जब कोई कामवासना संबंधी आनन्द देखें तो तू देखेगा कि उसकी ओर दौड़ते बल्कि उछलते चले जाते हैं।

यह तो हमारे बुज़ुर्ग उलेमा का हाल है परन्तु काफ़िर तो इस्लाम के मिटाने के लिए बहुत कोशिश कर रहे हैं और उनके समस्त मशवरे इसी उद्देश्य के लिए हैं तथा अपनी हरकतों से नहीं रुकते। किताबों और अखबारों को बदल डाला और एक बड़ा छल किया और कई प्रकार से झूठ को सुसज्जित किया और एक दुनिया को मूर्खों में से तबाह किया बहुत से लोगों को क़त्ल किया और एक विचित्र छल प्रकट किया तो उनकी तलवार कभी नहीं झुकी और वे इस नीयत से देशों में गए कि यदि अपनी इच्छा अनुसार पाएं तो वहीं डेरे डाल दें और फ़साद

و ابدوا مكيدة كبيرة فما نبأ سيفهم نبوة و وردوا الديار
متبوّءين و ما تركوا دقيقة الفساد و جهروا بالذحل من
العناد و قلبوا امور الحق و السداد و صافوا الشيطان مثافنين
و ما نكّبوا عنهم بغض الصادقين بل نجد كل فردٍ ذا حنقٍ و
مُصرًّا علٰى نجس و رهق و ما نجدهم الا مفترين لا يعلمون
الا الاكل و النيك و لا يؤثرون الا الزينة و الصَّيِّك و لا يمشون
الا مستكبرين فحملنا بهم انواع الاحمال لو حُمِّلَتْ مثلها
راسخات الجبال لخرّت و انهدّت فى الحال و ناء بها باس الاثقال
و سقطت كالساجدين و لكنّا كنّا محفوظين

و كان قلبي يقلق و كادت نفسي تزهق لو لم يكن معي

का कोई अवसर नहीं छोड़ा और शत्रुता के कारण अपने वैर को खुले-खुले तौर पर प्रकट कर दिया और सच तथा योग्यता की बातों को परिवर्तित कर दिया और शैतान के साथ बैठकर उस से सुलह कर ली और स्वयं को सच्चों के वैर से अलग न कर सके बल्कि उनमें से हम प्रत्येक को झगड़ालू और क्रोधित पाते हैं और उन्हें सच पर पर्दा डालने और हानि पहुंचाने पर हठधर्मी देखते हैं और हमने उनमें झूठ गढ़ने के अतिरिक्त और कुछ नहीं पाया। वे खाने और सहवास करने के अतिरिक्त और कुछ नहीं जानते और श्रृंगार तथा सुगन्ध के अतिरिक्त कुछ ग्रहण नहीं करते और अहंकार की चाल के अतिरिक्त और कोई चाल नहीं चलते। तो हमने उन से भिन्न-भिन्न प्रकार के बोझ उठाए और ऐसे बोझ उठाए कि यदि उन के समान सुदृढ़ पर्वतों पर बोझ पड़ते तो वे तुरन्त गिर पड़ते और बोझ उनको गिरा देता और ऐसे गिरते जैसा कि कोई सज्दा करता है। किन्तु हम सुरक्षित किए गए थे।

और मेरा हृदय बेचैन था और करीब था कि मेरी जान निकल जाती यदि शक्तिशाली ख़ुदा मेरे साथ न होता और वही हमारा मौला है और काफ़िरों का कोई मौला नहीं और वही है जो हमारी दुआ को स्वीकार करता है और हमारे

قـوىٌّ متـين وانـه مولانـا و لا مـولىٰ للكافريـن و انّـهٗ يجيـب دعـاءنـا و يسـمع بـكاء نـا و يأتينـا اذا أتينـاه مضطريـن و كذالـك اذا خوفـنى هجـوم الاٰفـات وارعـدنى ضعـف المسـلمين والمسـلمات فبكيـت فى وقـت مـن الاَوْقات ودعـوت ربى قاضـى الحاجـات ونادَيـتُ مـولاى كالمتضرّعـين و قلـتُ يـا رب انـت ملجأنـا فى كلّ حـين ونحـن اليـك نشـكو وانـت احكـم الحا كمـين فـلا تؤاخذنـا ان نسـينا او اخطانـا ولا تحمـل علينـا اصـرا كمـا حملتـه عـلى الذيـن مـن قبلنـا و لا تحملنـا مـا لا طاقـه لنـا بـه واعـف عنـا واغفـر لنـا وارحمنـا انت مولانـا فانصرنـا عـلى القـوم الكافريـن فاسـتجاب لى ربى واعطـانى اربى ونصـرنى وهـو خـير الناصريـن فكنـت يومًـا

रोने को सुनता है और जब हम बेचैन होकर उसके पास आते हैं तो वह हमारी ओर आता है। और इसी प्रकार जब आपदाओं की भीड़ ने मुझे डराया और मुसलमानों की कमज़ोरी ने मेरे शरीर को कपकपा दिया तो मैं एक विशेष समय में रोया और अपने रब्ब के दरबार में जो आवश्यकताओं को पूरा करने वाला है दुआ की और अपने मौला को गिड़गिड़ाने वालों की तरह पुकारा और मैंने कहा कि हे मेरे माबूद! तू हर समय हमारी शरण है और हम तेरी ओर शिकायत करते हैं और तू सब फैसला करने वालों से उत्तम फैसला करने वाला है। अत: हमारे भूलने और ग़लती करने पर मत पकड़ और हम पर बोझ मत डाल, जैसा कि तूने उन पर बोझ डाला जो हम से पहले थे और हमारे सिर पर वह बोझ न रख जिस के उठाने की हमें शक्ति नहीं और हमें क्षमा कर और हमें ढ़ांक ले तथा हम पर दया कर तू हमारा स्वामी है। अत: हमें काफ़िरों पर सहायता दे। तो मेरे ख़ुदा ने मेरी दुआ स्वीकार की और मेरी आवश्यकता पूर्ण की और मुझे सहायता दी और वह उत्तम सहायता देने वाला है। अत: मैं एक दिन अपनी पूंजी की कमी को याद कर रहा था और नर्म तथा नए सब्ज़े की तरह कांपता था और इन्हीं ग़मों में बेचैन हो रहा था और पवित्र क़ुर्आन की आयतें पढ़ता था तथा

اتذكر قِلّة البعاع وارتعد كاللُّعاع واقلق فی هذه الاحزان واقرء
اٰیات القراٰن وأفكر فیها بجهد الجنان وازجی نضو التدبر
والامعان وادعوا اللّٰه ان یهدینی طرق العرفان ویتم حجتی علی
اهل العدوان ویتلافی ماسلف من جور المعتدین فبینما انا افتش
كالكمیش وقد حمی وطیس التفتیش وانظر بعض الاٰیات۔ واتو
سّم فحواء البینات۔ اذا تلالات امام عینی اٰیة من اٰیات الفرقان
ولا كتلالؤ دُرر العمان فاذا فكرت فی فحوائها واتبعت انواع
ضیاءها واجزت حمٰی ارجائها وافضیت الی فضائها وجدتها
خزینة من خزائن العلوم ودفینة من السرّ المكتوم فهزت
عطفی رؤیتها وتجلّت لی كجمرة قوتها واصبی قلبی نضارها

हार्दिक प्रयास से विचार कर रहा था और सोच-विचार की दुबली ऊंटनी को चला रहा था और ख़ुदा तआला से मांग रहा था कि मुझे मारिफ़त (अध्यात्म ज्ञान) का मार्ग दिखाए और अत्याचारियों पर मेरे समझाने के अन्तिम प्रयास को पूर्ण करे और उस अत्याचार का निवारण करे जो अत्याचार करने वालों से हो चुका है तो इसी बीच जो मैं एक जल्द हरकत करने वाले इन्सान की तरह विचार कर रहा था और जांच-पड़ताल का तन्दूर गर्म था तथा मैं कुछ आयतों को देखता और उनके स्पष्ट आदेशों में विचार करता था कि अचानक मेरी आंखों के सामने पवित्र क़ुर्आन की एक आयत चमकी और वह ऐसी चमक न थी जैसी कि अम्मान के मोतियों की अपितु उससे बढ़कर थी। तो जब कि मैंने उन आयतों के विषय पर विचार किया और उन के प्रकाश का अनुकरण किया और उनके मैदान तक पहुंचा तो मैंने उन आयतों को विद्याओं का ख़ज़ाना पाया और छुपे हुए रहस्यों का गड़ा हुआ ख़ज़ाना देखा। तो उसके देखने ने मेरे बाज़ू को हिला दिया और उसकी शक्ति मुझ पर हज़ार सवार की तरह प्रकट हुई और उसकी सब्ज़ी और ताज़गी ने मेरे हृदय को खींच लिया और उसकी लड़ाई ने सहसा शत्रुओं को मार डाला और उसकी जमाअत ने मेरे हृदय को प्रसन्न किया तो मैंने

ونضرتها واغتالت العدا كريهتها وسرت مهجتی صرّتها فحمدلت وشكرت للّٰه ربّ العالمين و رأيت بها ما يملأ العين قرة و يعطی من المعارف دولة ويُسرّ قلوب المسلمين وعلّمت من سرّ اللغات ومثواها وزُودت من فَصّ الكلمات ونجواها و كذلكا عطيت من اسرارٍ عُليا ونكاتٍ عظمٰی ليزيد يقينی ربّی الاَعلٰی وليقطع دابر المعتدين وانكنت تحب ان تعرف الاٰية وصولها فاقرء لِتُنْذِرَ اُمَّ الْقُرٰی وَمَنْ حَوْلَهَا وان فيها مدح القراٰن وعربی مبين فتدبرها كالعاقلين ولا تمرّ بها مرور الغافلين واعلم انّ هذه الاٰية تعظّم القراٰن والعربية ومكة و فيها نور مزّق الاعدآء وبكّت فاقرءها بتمامها وانظر الٰی

अलहम्दुलिल्लाह कहा और अल्लाह तआला का धन्यवाद किया और मैंने उन आयतों में वे चमत्कार देखे जो आंखों को शीतलता से भर देते हैं और अध्यात्म ज्ञानों की दौलत प्रदान करते हैं और मुसलमानों के दिलों को प्रसन्न कर देते हैं और मुझ को शब्दकोषों का भेद और उन का मूल स्थान बताया गया और वाक्यों के पैबन्द और उनके राज़ से मुझे सिखाए गए और इसी प्रकार मुझे गूढ़ रहस्य प्रदान किए गए और मुझे बड़े-बड़े नुक़्ते दिए गए ताकि ख़ुदा तआला मेरा विश्वास बढ़ाए और ताकि सीमा से बाहर निकलने वालों का पीछा काट डाले और यदि तू चाहता है कि कथित आयत और उसके आक्रमण से मुक्ति हो तो क़ुर्आन के उस स्थान को जहां यह लिखा है لِتُنْذِرَ أُمَّ الْقُرَىٰ وَمَنْ حَوْلَهَا (अल-अन्आम-93) जिसके अर्थ यह हैं कि हम ने क़ुरआन को अरबी भाषा में भेजा ताकि तू उस क़ौम को डराए जो समस्त आबादियों की माँ है और उन आबादियों को जो उसके चारों ओर हैं अर्थात् सम्पूर्ण विश्व को। और उसमें क़ुरआन की प्रशंसा तथा अरबी की प्रशंसा है। अत: बुद्धिमानों के समान विचार कर और लापरवाहों के समान उन पर से न गुज़र और जान ले कि क़ुरआन की यह आयत अरबी तथा मक्का की श्रेष्ठता व्यक्त करती है और इसमें एक प्रकाश है जिसने

نظامها و فتّش کالمستبصرین و انی تدبرتها فوجدت فیها اسرارًا ثم امعنتُ فرأیت انوارا ثم عمقت فشاهدت مُنزّلًا قهّارًا ربّ العالمین و کُشف علیّ ان الاٰیة الموصوفة والاشارات الملفوفة تهدی الی فضائل العربیة وتشیر الی انها اُمّ الالسنة وان القراٰن اُمّ الکتب السابقة وانّ مکة اُمّ الارضین فاقتادنی بروق هذه الاٰیة الی انواع التنطس والدرایة وفهمتُ سرّ نزول القراٰن فی هذا اللسان وسرّ ختم النبوة علی خیر البریّة و ختم المرسلین ثم ظهرت علی اٰیات اخرٰی و ایّد بعضها بعضا تترًا حتّی جرّنی ربّی الی حق الیقین وادخلنی فی المستیقنین وظهر علیّ انّ القراٰن هو اُمّ الکتُب الاولٰی والعربیة امّ الالسنة من اللّٰه

दुश्मनों को टुकड़े-टुकड़े और निरुत्तर कर दिया। अत: समस्त आयत को पढ़ और उसकी व्यवस्था की ओर देख और बुद्धिमानों की भांति पड़ताल कर। और मैंने इन आयतों पर विचार किया तो उनमें कई भेद पाए फिर एक गहराई से विचार किया तो उनमें कई प्रकाश पाए फिर एक बहुत ही गहरी दृष्टि से देखा तो उतारने वाले प्रकोपी का मुझे अवलोकन हुआ जो समस्त लोकों का प्रतिपालाक है और मुझ पर स्पष्ट किया गया कि कथित आयत तथा लिपटे हुए संकेत अरबी की ख़ूबियों की ओर मार्ग-दर्शन करते हैं और इस बात की ओर संकेत करते हैं कि वह समस्त भाषाओं की माँ है और क़ुरआन पहली किताबों की मां अर्थात असल है और मक्का समस्त पृथ्वी की मां है। अत: मुझे इस आयत के प्रकाश ने भिन्न-भिन्न प्रकार की समझ और जानकारी की ओर खींचा और मुझे यह भेद समझ आ गया कि क़ुरआन अरबी भाषा में क्यों उतरा और यह कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर जो नबुव्वत समाप्त हुई उसमें रहस्य क्या है। फिर मुझ पर अन्य आयतें प्रकट हुईं और कुछ ने कुछ की निरुत्तर सहायता की यहां तक कि मेरे ख़ुदा ने मुझे अटल विश्वास तक खींच लिया और मुझे विश्वास करने वालों में सम्मिलित किया और मुझ पर प्रकट हो गया कि क़ुरआन ही पहली समस्त किताबों की मां है और इसी

الاعلٰی و اما الباقیة من اللغات فهی لها کالبنین او البنات و لا شك انّها کمثل ولدها او ولا یدها و کلّ یا کل من اعشارها و موایدها و کل یجتنون فاکهة هذه اللّهجة و یملأون البطون بتلك المائدة و یشربون من تلك اللّجة و یتخذون لباسًا من هذه الحُلّة فهی مربیة اعارها الدَّسْت و اختار لنفسها الدَّست و اما اختلاف الالسنة فی صور الترکیب فلیس من العجیب وکذٰلك الاختلاف فی التصریف و اطراد المواد لیس من دلایل عدم الاتحاد و لولا اختلاف بهذا القدر فی الترکیبات لامتنع تغایر یوجب کثرة اللغات فان وجود التراکیب المختلفة هو الذی غیّر صور الالسنة و هو السبب الاول للتفرقة فلا یسوغ

प्रकार अरबी समस्त भाषाओं की मां और ख़ुदा तआला की ओर से है और शेष भाषाएँ उसके बेटे, बेटियों की तरह हैं और कोई सन्देह नहीं कि वे समस्त भाषाएँ उसके बेटों या घर में मौजूद दासियों की तरह हैं और प्रत्येक उसी की देगों (हांडियों) और उसी के दस्तरख़्वान से खा रहा है और प्रत्येक उसी के फल चख रहा है और उसी दस्तरख़्वान से अपने पेट भर रहे हैं और उसी दरिया से पानी पी रहे हैं और उसी चादर से उन्होंने अपना लिबास बनाया है और वह उनकी सहायक है जिसने अस्थायी तौर पर उनको लिबास दिया और अपने लिए मस्नद (तख़्त) बनाया और यह बात कि यदि अरबी समस्त भाषाओं की जननी है तो भाषाओं की बनावट में मतभेद क्यों है? तो यह कुछ विचित्र बात नहीं और इसी प्रकार जो मतभेद गर्दानों और मस्दरों (रूपों तथा धातुओं) में है वह भी प्रतिकूलता के अभाव का तर्क नहीं ठहर सकता और यदि यह थोड़ा सा मतभेद भी जो बनावटों का मतभेद है शब्दावली में शेष न रहे तो मध्य से वह भिन्नता उठ जाएगी जो शब्दावलियों की प्रचुरता का कारण है क्योंकि भाषाओं में विभिन्न बनावटों का पाया जाना ही तो वह बात है जिसने भाषाओं के रूप को परिवर्तित कर रखा है और वही तो भाषाओं की भिन्नता का प्रथम कारण है। अत: किसी आपत्तिकर्ता के लिए वैध नहीं कि ऐसे वाक्य मुंह

لمعترض ان يتكلّم بمثل هٰذه الكلمات و اين منتدحة هذه
الاعتراضات فانها مصادرة و من الممنوعات و كفاك ان الالسنة
كلها مشتركة فى كثير منالمفردات و ما اوغلتُ بل ساُريك
كاجلى البديهيات فاستقم كما سمعت و لا تكن من المخطين
وانى لما وجدت الدلائل من الفرقان و اطمئن قلبى بكتاب اللّٰه
الرّحمان اردت ان اطلب الشهادة من الاٰثار فاذا فيها كثيرٌ من
الاسرار ففرحت بها فرحة النشوان بالطلاء و وجدت وجد
الثمل بالصهباء وشكرت اللّٰه نصير الصادقين ثم بدء لى ان اثبت
هذا الامر بالدلايل العقليه لاتم الحجة على كل جموح شديد
الخصومة وابكت قومًا مرتابين فلم تزل الاشواق تهيج فكرى

पर लाए। और ऐसे ऐतराज़ों की गुंजायश कहां है क्योंकि यह वांछित की ओर प्रत्यागमन (वापस आना) है जो शास्त्रार्थों में वर्जित है। और तेरे लिए यह बात पर्याप्त है कि समस्त भाषाएँ बहुत से एकांकी शब्दों में भागीदार हैं और मैंने यह अतिशयोक्ति नहीं की बल्कि शीघ्र ही मैं तुझे अत्यन्त स्पष्ट बातों की तरह दिखाऊंगा। अत: तू स्थापित और दृढ़ प्रतिज्ञ हो जैसा कि तूने सुन लिया और तू ग़लती करने वालों में से न हो और मैंने जब पवित्र क़ुरआन से तर्कों को पाया और ख़ुदा की किताब की गवाही से मेरा दिल संतुष्ट हो गया तो मैंने इरादा किया कि हदीसों से भी कुछ तर्क लूं। तो जब मैंने हदीस को देखा तो उसमें बहुत से भेद पाए तो मैं ऐसा प्रसन्न हुआ जैसा कि नशा पीने वाला, शराब से प्रसन्न होता है और जिस प्रकार मस्त (व्यक्ति) को शराब से प्रसन्नता मिलती है। और मैंने ख़ुदा तआला का धन्यवाद किया जो सच्चों का सहायक है। फिर मुझे यह विचार आया कि इस बात को तर्कों द्वारा सिद्ध करूं ताकि अवसरवादी और झगड़ालू पर समझाने का अन्तिम प्रयास पूर्ण कर दूं और सन्देह करने वालों को निरुत्तर कर दूं। तो मेरी इच्छा मेरे चिंतन को सदैव प्रेरणा देती थी और उसके मैदानों में मेरी बुद्धि को उफान देते थे यहां तक कि मुझ पर तर्कों के दरवाज़े खोले गए और मैं पथ-भ्रष्टों के झूठे गुमान

وتُجیل فی عرصاتها حجری حتی فتحت علیّ ابواب الاستدلال و وُقّفت لامضاض زعم اهل الضلال وقوم ضالین و واللّٰہ ما عانا بالی فی هذا السبیل وما اخرجت شیئا من الزنبیل وما فارقتُ کأس الکرٰی وما نصصتُ رکاب السُّرٰی بل رُزِقتُ کلها من حضرة الکبریاء وقُصِر منه طول لیلتی اللّیلاء وانقضت من حُسن قضائه منیتی وما ارقت فی لیل مقلتی وما تخبشت غیر امتعتی حتی ازلفت لی روضتی واثمرت شجرتی وذلّلت علیّ قطوفها من رب العالمین وواللّٰہ انّ فوزی هذا من ید ربّی فاحمده واصلّی علی نبی عربیّ منه نزلت البرکات ومنه اللحمة و السداة وهو هیّأ لی اصلی وفرعی و انبت کلّ بذری و زرعی وهو خیر

को जलाने के लिए खड़ा किया गया और ख़ुदा की कसम इस मार्ग में मेरे दिल ने कुछ भी कष्ट नहीं उठाया और मैंने अपने थैले में से कुछ भी नहीं निकाला और मैं अपने मीठे स्वप्न से अलग नहीं हुआ और मैंने रात के समय गहन चिन्तन का कष्ट नहीं उठाया अपितु ये सब नेमतें मुझे ख़ुदा तआला की ओर से मिलीं और उसने मेरी अंधकारमय रात की लम्बाई को कम कर दिया और मेरी अभिलाषा उसके पूरा करने से पूर्ण हुई और किसी रात में मेरी आंख जागती नहीं रही और मैंने अपनी पूँजी को कुछ इधर-उधर से इकट्ठा नहीं किया, यहां तक कि मेरा बाग़ मेरे लिए क़रीब किया गया और मेरा वृक्ष फलदार हो गया और उसके गुच्छे ख़ुदा तआला की ओर से मुझ पर झुकाए गए और ख़ुदा की क़सम यह मेरी सफलता मेरे रब्ब की ओर से है। अत: मैं उसकी प्रशंसा करता हूं और अरबी नबी (मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) पर दुरूद भेजता हूं उसी से समस्त बरकतें उतरीं और उसी से सब ताना-बाना है, उसी ने मेरे लिए असल और अंश को उपलब्ध किया और उसने मेरे बीज और खेत को उगाया और वह उत्तम है सब उगाने वालों से। और मेरी कहां शक्ति थी कि मैं शत्रुओं को मिट्टी में मिलाऊँ और मैंने यह डंडा नहीं चलाया जबकि चलाया बल्कि ख़ुदा ने चलाया

المنبتین وما کان لی حول اَنْ اعفّر العدا وما ھروتُ اِذْ ھروت
ولکن اللّٰہ ھدٰی وما رأیت رائحة شق النفس وما اشتدت لی
حاجة الی انضاء العنس وما اعدیت ھیاکل الانظار وما جریت
طلقا مع الافکار وما رأیت ذات کسورٍ بل طُرت کطیورٍ او
کراکب عیدھورٍ و وجدت ما تشتھی الانفس وتلذّ الاعین و
اُرضعت من غیر بکاءٍ وأنین فتألیفی ھٰذا امر من لدیه و کل
امر یعود الیه وھو احسن المحمودین واذا ازمعت لھذه الخطة
و فکرت فی تلک الاٰیة و کذٰلک فی اٰیاتٍ عُلّمت من حضرة
الاحدیة فاحسستُ ان قارعًا یقرع باب بالی و یعلمنی من علم
عالی وینفخ روح التفھیم والتلقین فسمیت الکتاب منن

और मैंने नफ्स के परिश्रम की गंध नहीं देखी और मुझे कुछ आवश्यकता भी नहीं पड़ी कि मैं कठोर परिश्रम से स्वयं को कमज़ोर करूं और मैंने आँखों के शक्तिशाली घोड़े नहीं दौड़ाए और मैं एक पल भी विचारों के साथ नहीं चला और मैंने ऊँची-नीची भूमि को नहीं देखा बल्कि में पक्षियों की भांति उड़ा या ऐसे सवार की तरह जो शक्तिशाली ऊंट पर सवार हो। और मैंने प्रत्येक बात को जो मन चाहता है और आंखें उस से आनन्द प्राप्त करती हैं पा लिया और मुझे बिना रोने के दूध पिलाया गया। अत: मेरी यह पुस्तक उसी की ओर से है और प्रत्येक बात उसी की ओर लौटती है और वह उन सब लोगों से जिनकी प्रशंसा की जाती है उत्तम है। और जब मैंने इस महान कार्य के लिए इरादा किया और इस आयत पर विचार किया तथा इसी प्रकार उन समस्त आयतों पर जो मुझे ख़ुदा तआला की ओर से सिखाई गईं तो मुझे अहसास हुआ कि मानो एक खटखटाने वाला मेरे दिल के दरवाज़े को खटखटाता है और अत्यन्त उत्कृष्ट ज्ञान मुझे सिखाता है और समझ तथा सदुपदेश की रूह फूंकता है। अत: मैंने किताब का नाम **मिननुर् रहमान** रखा क्योंकि कई प्रकार की कृपा और उपकार से ख़ुदा तआला ने मुझ पर ईनाम किया और वह सबसे उत्तम उपकार करने वाला है। और यह

الرحمان بما انعم علی ربّی بانواع الفضل والاحسان وھو خیر المحسنین وما کان ھذا اوّل آلائه بل انی نشأت فی نعمائه وانه والانی وربانی واتانی و تولانی و کفّلنی وصافانی ونجانی وعافانی وجعلنی من المحدّثین المامورین۔

وامّا تفصیل اٰیات تؤیّد اٰیة امّ القرٰی وتبیّن أنّ العربیة امّ الالسنة والھام اللّٰہ الاعلی فمنھا اٰیة من اللّٰہ المنّان فی سورة الرّحمٰن اعنی قوله خَلَقَ الْاِنْسَانَ عَلَّمَهُ الْبَیَان فالمراد من البیان اللّغةالعربیة کما تشیر الیه الاٰیة الثانیة اعنی قوله تعالی عَرَبِیٌّ مُّبِیْنٌ فجعل لفظ المبین وصفًا خاصًا للعربیة و اشار الٰی انّه من صفاته الذاتیة و لا یشترك فیه احد من الالسنة کما لا یخفی علی

उसकी कुछ पहली ही ने'मत नहीं बल्कि मैंने तो उसकी ने'मतों में ही पोषण पाया है और उसने मुझे मित्र रखा, मेरा पोषण किया, मुझे प्रदान किया और मेरा अभिभावक और प्रतिपालक हुआ और मुझे मुक्ति दी तथा मुझे मुहद्दिसों, मामूरों में से किया।

और इन आयतों का विवरण जो आयत उम्मुल क़ुरा की समर्थक हैं और जो प्रकट करती हैं कि अरबी समस्त भाषाओं की जननी और ख़ुदा का इल्हाम है तो यह विवरण इस प्रकार है। अत: उनमें से एक वह आयत है जो सूरह अर्रहमान में है अर्थात् خَلَقَ الْإِنسَانَ عَلَّمَهُ الْبَيَانَ (अर्रहमान-55/4,5) जिसके मायने यह हैं कि ख़ुदा तआला ने इन्सान को पैदा किया और उसे बोलना सिखाया। तो बयान से अभिप्राय जिसके मायने बोलना है 'अरबी भाषा' है जैसा कि दूसरी आयत इसी की ओर संकेत करती है अर्थात عربیٌ مبینٌ (अरबी मुबीन)। तो ख़ुदा ने मुबीन के शब्द को अरबी के लिए एक विशेष गुण ठहराया और इस बात की ओर संकेत किया कि यह शब्द 'बयान' का अरबी के विशेष गुणों में से है और कोई अन्य भाषा इस गुण में उसकी भागीदार नहीं जैसा कि विचारकों पर स्पष्ट है। और बयान शब्द के साथ इस भाषा की

المتفكّرين واشار بلفظ البيان الٰى بلاغة هذا اللّسان والٰى انها هى اللسان الكاملة وانها احاطتكلما اشتدت اليه الحاجة و تصوّبت مطرها بقدر ما اقتضت البلدة وفاقت كل لغت فى ابراز ما فى الضمائر و ساوى الفطرة البشرية كتساوى الدوائر و كل ما اقتضته القوى الانسانية وابتغته التصورات الانسية و كل ما طلبه حوائج فطرة الانسان فيحاذيها مفردات هذه اللسان مع تيسير النطق والقاء الاثر على الجنان فاتبع ماجاءك من اليقين ثم سياق هذه الاٰية يزيدك فى الدراية فانه يدل بالدلالة القطعية على ما قلنا من الاسرار الخفية لتكون من الموقنين۔ فتفكر فى اٰية۔ الرَّحْمٰن عَلَّمَ الْقُرْاٰنَ۔ فان الغرض فيها ذكر الفرقان والحث

सरसता की ओर इसी प्रकार संकेत किया और इस बात की ओर संकेत कि यह भाषा पूर्ण तथा प्रत्येक आवश्यक बात पर हावी है और उसकी बारिश इतनी बरसी है जितनी भूमि को आवश्यकता थी और दिलों के विचार व्यक्त करने के लिए प्रत्येक भाषा पर प्राथमिकता रखती है और मानवीय प्रकृति से ऐसी समान है जैसे एक दायरा दूसरे दायरे से समान हो और वे समस्त मामले जिन्हें मानव शक्तियां चाहती हैं। और मानवीय कल्पनाएँ उनकी इच्छुक हैं और समस्त मामले जिनकी मानव प्रकृति की आवश्यकताएं मांग करती हैं तो उस भाषा के मुफ़रदात (अकेले शब्द) उनके मुकाबले पर मौजूद हैं इसके साथ यह खूबी है कि बोलने के तरीके को आसान किया गया है ऐसा कि हृदय पर प्रभाव पड़े। फिर इस आयत का पिछला प्रसंग जानकारी में वृद्धि करता है क्योंकि वह पिछला प्रसंग उन गुप्त रहस्यों की ओर मार्ग-दर्शन करता है जो हम वर्णन कर चुके हैं ताकि तू विश्वास करने वालों में से हो जाए। अत: इस आयत पर विचार कर अर्थात् الرَّحْمٰن عَلَّمَ الْقُرْاٰنَ (अर्रहमान 55/2,3) क्योंकि इस आयत में अभीष्ट दो बातें हैं क़ुरआन की श्रेष्ठता का वर्णन और उसकी तिलावत तथा विचार करने की प्रेरणा और यह उद्देश्य इसके अतिरिक्त

علی التلاوة والامعان ولا یحصل ھذا الغرض الابعد تعلم العربیة والمهارة التامة فی ھٰذه اللّهجة۔ فلأجل ھذه الاشارة قدم اللّٰه اٰیة عَلَّمَ الْقُرْاٰنَ۔ ؎ ثم قفاه اٰیة۔ عَلَّمَهُ الْبَیَانَ۔ کانه قال المنة منتان۔ تنزیلالقراٰن و تخصیص العربیة بأحسن البیان۔ وتعلیمها لاٰدم لینتفع به نوع الانسان۔ فانها مخزن علومٍ عالیة وهدایاتٍ ابدیة من المنّان کما لا یخفٰی علی المتدبّرین۔

فالحاصل انه ذکر اوّلًا نعمة القراٰن ثم ذکر نعمة اُخرٰی التی هی لها کالبنیان واشار الیها بلفظ البیان لیعلم انّها هو العربی المبین فان القراٰن ما جعل البیان صفة احد من الالسنة من دون ھٰذه اللّهجة فایّ قرینة اقوٰی و ادلّ من هذه القرینة لو کنتم متفکّرین

प्राप्त नहीं हो सकता कि अरबी को सीखें और उसमें पूर्ण महारत प्राप्त करें। तो इसी संकेत के उद्‌देश्य से ख़ुदा तआला ने आयत عَلَّمَ الْقُرْاٰن को पहले रखा, फिर इसके बाद आयत علمه البیان को लाया तो जैसे उसने यह कहा कि उपकार दो उपकार हैं (1)- क़ुरआन का उतारना (2)- और अरबी को सरसता एवं सुबोधता के साथ विशिष्ट करना और आदम को अरबी की शिक्षा देना ताकि मानव जाति उस से लाभान्वित हो क्योंकि अरबी उच्च विद्याओं का खज़ाना है और उसमें ख़ुदा तआला की ओर से सदैव रहने वाले निर्देश हैं जैसा कि विचार करने वालों पर छुपी नहीं।

तो सारांश यह है कि सर्वप्रथम ख़ुदा तआला ने क़ुरआन की नेमत का वर्णन किया है फिर उस दूसरी नेमत का वर्णन किया जो उसके लिए बुनियाद के समान है और इस बात की ओर बयान के शब्द के साथ संकेत किया ताकि मालूम हो कि इस विशेषता से प्रशंसित अरबी भाषा है क्योंकि क़ुरआन ने बयान के शब्द को अरबी के अतिरिक्त किसी भाषा की विशेषता नहीं ठहराया। तो कौन सा संदर्भ इस संदर्भ से अधिक सुदृढ़ तथा अधिक मार्ग-दर्शन करने वाला है यदि तुम विचार करने वाले हो। क्या तू नहीं जानता कि क़ुरआन ने

اَلا ترٰی أنّ القراٰن سمی غیر العربیۃ اعجمیا فمن الغباوۃ ان تجعلھا للعربیۃ سمیّا فافھم ان کنت زکیا و لا تکن من المعرضین و النّص صریح وما ینکرہ الا وقیح من المعاندین

و منھا ما قال ذوالمجد و العزّۃ فی اٰیۃ بعد ھٰذہ الاٰیۃ اعنی قول اللّٰہ الحنّان اَلشَّمۡسُ وَالۡقَمَرُ بِحُسۡبَانٍ فانظر الیٰ ماقال الرحمان وفکر کذی العقل والامعان وتذکّر کالمسترشدین فانّ ھذہ الاٰیۃ تؤیّد اٰیۃً اولیٰ و یفسّر معناھا بتفسیر اجلیٰ کما لا یخفٰی علی المفکّرین و بیانہ ان الشمس والقمر یجریان متعاقبین ویحملان نورًا واحدًا فی اللونین و کذٰلک العربیۃ والقراٰن فانّھما تعاقبا واتّحدا البروق واللمعان اما القران فھو کالشارق المنیر

ग़ैर अरबी भाषाओं का नाम अजमी रखा है। तो मूर्खता होगी कि इन भाषाओं को अरबी का सहनाम और समान स्तर का ठहराया जाए। अत: यदि तू विवेकवान है तो समझ ले और विमुख होने वालों में से मत हो और यह स्पष्ट आदेश है और कोई इस से इन्कार नहीं करेगा सिवाए निर्लज्ज व्यक्ति के जो शत्रुओं में से होगा।

और इन आयतों में से एक वह आयत है जो बुज़ुर्गी वाले तथा सम्माननीय ख़ुदा ने इस आयत के बाद वर्णन की है। अर्थात बुज़ुर्ग मेहरबान ख़ुदा का यह कथन कि اَلشَّمۡسُ وَالۡقَمَرُ بِحُسۡبَانٍ۔ (अर्रहमान-55/6) तो इस विषय पर सोच जो ख़ुदा तआला ने फ़रमाया तथा बुद्धिमानों और विचारकों की तरह विचार कर और हिदायत के अभिलाषियों की तरह स्मरण कर क्योंकि यह आयत पहली आयत का समर्थन करती है और एक खुली-खुली तफ़सीर के साथ उसके अर्थ वर्णन करती है। जैसा कि सोचने वालों पर गुप्त नहीं। और उसका बयान यह है कि सूर्य और चन्द्रमा एक दूसरे के पीछे चलते हैं और एक ही प्रकाश को दो रंगों में उठाए फिरते हैं और यही उदाहरण अरबी तथा क़ुरआन का है क्योंकि वे एक दूसरे के बाद चल रहे हैं और प्रकाश एवं चमक में समानता रखते हैं। तो क़ुरआन तो चमकते सूर्य के समान है और अरबी

والعربية كالبدر المستنير ومعذٰلك تری العربية اسرع فی المسير واجرٰی علی لسان الصالح والشرير وما كانت شمس القرٰان ان تدرك هذا القمر وكذٰلك قدر اللّٰه هذا الامر وانهما بحسبان ويجريان كما اُجريا ولا يبغيان بحساب مقدر من الرحمٰن فتری ان القرٰان يجری برعاية انواع الاستعداد ويكشف علی الطالب اسرار المعاد ويُربّی الحكماء كما يربّی السفهاء ويعلم العقلاء كما يعلم الجهلاء وفيه بلاغ لكل مرتبة الفهم وتسلية لكل ارباب الدّهاء والوهم وساوی جميع انواع الادراك من اهل الارض الٰی اهل الافلاك وانه احاط دوائر فهم الانسان مع التزام الحق واقامة البرهان وانه نور تام مبين وامّا اللغة العربية فحسبانها

चन्द्रमा के समान। इसके साथ अरबी सैर में तीव्र गामी है और अच्छे और बुरे के जीभ पर अधिक जारी हो गई है और क़ुरआन का सूर्य उसकी गति को नहीं पहुँचा और ख़ुदा तआला ने इस बात को इसी प्रकार निश्चित किया और वे दोनों एक हिसाब पर चल रहे हैं और जैसा कि चलाया गया वैसा ही चल रहे हैं और अपने-अपने अनुमान से कम या अधिक नहीं होते। अत: क़ुरआन तो योग्यताओं के अनुसार चलता है और अभिलाषी पर परलोक के भेद खोलता है और दार्शनिकों का पोषण ऐसा करता है जैसा कि मूर्खों का पोषण करता है और बुद्धिमानों को इसी प्रकार सिखाता है जैसा कि जाहिलों को और इसमें प्रत्येक स्तर की समझ रखने वाले के लिए पैग़ाम मौजूद है और प्रत्येक बुद्धि और भ्रम के लिए तसल्ली का मार्ग है और समझ-बूझ के समस्त प्रकारों से वह बराबर है यद्यपि पृथ्वी से आकाश तक कितने ही प्रकार हों और वह मानवीय समझ के सम्पूर्ण दायरे पर छाया है और वह सच्चाई तथा प्रमाण का प्रबंध अपने साथ रखता है और वह प्रकाश और खुली-खुली रोशनी है। रही अरबी भाषा तो उसके चलने का तरीक़ा यह है कि वह क़ुरआन के उद्देश्य के अन्तर्गत चलती है और अपने मुफ़रदों के साथ धर्म के समस्त दायरों को पूरा

انها تجری تحت مقاصد القراٰن و تتم بمفرداتهٖ جميع دوائر دين
الرحمان و تخدم سائر انواع التعليم و التلقين و انها من اعظم
مجالی القدرة الربانية و خصّها الله بنظامٍ فطری من جميع الالسنة
و اودعها محاسن الصنعة الالٰهية فاحاطت جميع لطائف البيان و
ابدی الجمال كأحسن اشياء صدرت من الرحمان و هذا هو الدليل
علی انها ليست من الانسان و فيها صبغة حِكميةٌ من اللّٰه المنّان
و فيها حسن و بهاء و انواع اللمعان و فيها عجائب صانع عظيم
الشان تلمع وجهها بين صفوف السنة شتّٰی كأنّها كوكب درّیّ فی
الدّجٰی و انها كروضةٍ طيبةٍ علٰی نهر جار مثمرة بانواع ثمار و اما
الاَلْسن الاُخرٰی فقد غير وجهها قتر تصرّف النوكٰی و ما بقيت

करती है तथा शिक्षा और सदुपदेशों के समस्त प्रकारों की सेवा करती है और यह बोली (भाषा) ख़ुदा की क़ुदरत की महान जल्वागाहों में से है और ख़ुदा तआला ने उसको समस्त भाषाओं में से स्वाभाविक व्यवस्था के साथ विशिष्ट किया है और इसमें भिन्न-भिन्न प्रकार की ख़ुदाई कारीगरी की अच्छाइयां रखी हैं। अतएव यह भाषा वर्णन के समस्त विशेषताओं पर छाई हुई है और अपने सौन्दर्य को इस प्रकार से प्रकट किया है जो उन समस्त चीज़ों से उत्तम है। जो ख़ुदा तआला से जारी हुई हैं और इस बात पर यही तर्क है कि यह भाषा मनुष्य की ओर से नहीं। और इसमें ख़ुदा तआला की ओर से एक दार्शनिकतापूर्ण रंग है और सुन्दरता तथा खूबसूरती तथा नाना प्रकार की चमक है और ख़ुदा की कारीगरी के महान चमत्कार हैं। उसका मुंह कई भाषाओं की पंक्तियों के अन्दर चमक रहा है मानो यह अन्धकार में चमकता हुआ एक मोती है। और यह उस पवित्र बाग़ की तरह है जो जारी नहर पर हो जो फलों से लदा हुआ हो परन्तु अन्य भाषाओं का यह हाल है कि मूर्खों के हस्तक्षेप की धूल ने उनका बहुत सा भाग परिवर्तित कर दिया है और वे अपने पहले रूप पर शेष नहीं रही। अत: वे उन वृक्षों के समान हैं जो अपने स्थान से उखाड़े गए और

علٰى صورتها الاولٰى فهى كاشجار اجتُثّت من مغارسها و بعدت من نواظر حارسها و نبذت فى موماةٍ وقفر و فلاة فاصفرت اوراقها ويسبت ساقها و سقطت اثمارها و ذهبت نضرتها و اخضرارها وترٰى وجهها كالمجذومين

فواهًا للعربية ما احسن وجهها فى الحُلل المنيرة الكاملة أشرقت الارض بانوارها التامة وتحقّق بها كمال الهوية البشرية توجد فيها عجائب الصانع الحكيم القدير كما توجد فى كل شىء صدر من البديع الكبير و اكمل اللّٰه جميع اعضائها و ما غادر شيئًا من حُسنها و بهائها فلا جرم تجدها كاملة فى البيان محيطة علٰى اغراض نوع الانسان فما من عمل يبدو الى انقراض الزمان و

अपने निगरान की आंखों से दूर किए गए और ऐसे जंगल में डाले गए जहां पानी नहीं और ऐसे जंगल में जहां कोई हरा वृक्ष नहीं। तो उनके पत्ते पीले हो गए और उनके फल गिर गए और उनकी ताज़गी और हरियाली जाती रही और तू देखता है कि उनका चेहरा कोढ़ियों की तरह हो गया।

अत: अरबी भाषा क्या ही उत्तम है और कितना अच्छा उसका चेहरा है जो चमकीले और पूर्ण सौन्दर्य में दिखाई देता है। पृथ्वी उसके प्रकाशों से चमक उठी है और मानवीय वास्तविकता की ख़ूबी उस से सिद्ध हो गई है, उसमें रचयिता, दूरदर्शी, सामर्थ्यवान ख़ुदा के अद्‌भुत कार्य प्रकट हैं जैसा कि उन समस्त वस्तुओं में पाए जाते हैं जो उस महान अद्वितीय सृष्टा ने पैदा की हैं और ख़ुदा तआला ने उसके समस्त अंगों को पूर्ण किया है और उसकी सुन्दरता और ख़ूबी से कोई कमी नहीं छोड़ी तो इसी कारण से तू उसको वर्णन में पूर्ण पाएगा और देखेगा कि वह इन्सान की समस्त आवश्यकताओं पर छाई हुई है। तो उन कार्यों में से ऐसा कोई भी कार्य नहीं कि जो युग के अन्त तक प्रकट हों और न ख़ुदा तआला में ऐसी कोई विशेषता पाई जाती है और न ऐसी कोई आस्था लोगों की आस्थाओं में से है जिस के लिए अरबी में कोई

لا من صفةٍ من صفات اللّٰه الدّيّان و ما من عقيدةٍ من عقايد البريّة اّلا ولها لفظ مفرد فى العربية فاختبر ان كنت من المرتابين و ان كنت تقوم للخبرة كطالب الحق و الحقيقة فو اللّٰه ما تجد امرًّا من امور صحيفة الفطرة و لا سرًّا من مكتوبات قانون القدرة الّا و تجد بحذائه لفظا مفردا فى هٰذه اللّهجة فدقق النظر هل تجد قولى كالمتصلّفين كلا بل انّ العربية احاطت جميع اغراضنا كالدائرة و تجدها و صحيفة الفطرة كالمرايا المتقابلة و ما تجد من اخلاق و افعال و عقائد و اعمال و دعوات و عبادات و جذبات و شهوات الا و تجد فيها بحذائها مفردات و لا تجد هٰذا الكمال فى غير العربية فاختبر ان كنت لا تومن بهٰذه الحقيقة و لا تستعجل كالمعاندين

अकेला शब्द यथोचित न हो। यदि तुझे सन्देह है तो परख ले। और यदि तू परखने के लिए उठे जैसा कि सच और सच्चाई के अभिलाषी उठते हैं तो ख़ुदा की क़सम तू सहीफ़-ए-फ़ितरत (प्रकृति के ग्रन्थ) में से कोई ऐसी बात नहीं देखेगा और न कोई ऐसा रहस्य क़ानून-ए-क़ुदरत (प्रकृति के नियमों) के गुप्त रहस्यों में से देखेगा जिसकी तुलना में कोई अकेला (मुफ़रद) शब्द इस भाषा में न हो। अत: एक बारीक नज़र से देख क्या तू मेरी बात को डींगे मारने वाले लोगों की तरह पाता है। ऐसा कदापि नहीं बल्कि सच बात यह है कि अरबी भाषा एक दायरे की तरह हमारी समस्त आवश्यकताओं पर छाई हुई है और तू अरबी भाषा तथा प्रकृति के ग्रन्थ को उन दो दर्पणों के समान पाएगा जो एक दूसरे के सामने हों और तू ऐसा आचरण नहीं पाएगा और न कोई ऐसी आस्था और न ऐसी कोई दुआएं और न ऐसी इबादतें और न ऐसी भावनाएं और न ऐसी कामुक इच्छाएं जिनके मुकाबले पर अरबी भाषा में मुफ़रद शब्द न पाए जाएं और यह खूबी तू (अरबी) के अतिरिक्त अन्य किसी भाषा में नहीं पाएगा। अत: तू इस बात को परख ले यदि तू उस सच्चाई को याद नहीं करता और दुश्मनों की तरह जल्दी मत कर।

و اعلم أنّ لِلعربية و صحيفة القدرة تعلقات طبعية وانعكاسات ابدية كانهما مرايا متقابلة من الرحمان او توامان متماثلان او عينان من منبع تخرجان وتصدغان فانظر و لا تكن كالعمين فهٰذه نصوص قاطعة وحجج يقينية علٰى ان العربية هى اللسان والفرقان هو النور التامّ الفرقان ففكّر و لا تكن من الغافلين ومن فكّر فى القراٰن وتدبّر كلمات الفرقان ففهم ان هٰذا قد ثبت من البرهان وما كتبناه كالظانين بل اُوتينا علمًا كنورٍ مبين

ثم اعلم يا طالب الرشد والسدادان التوحيد لا يتم اّلا بهٰذا الاعتقاد ولا بد من ان نؤمن بكمال الوثوق والاعتماد بان كلّ خير صدر من رب العباد وهو مبدء كل فيض للعالمين ومن المعلوم

और यह बात जान ले कि अरबी (भाषा) और प्रकृति में स्वाभाविक संबंध हैं और अनश्वर प्रतिबिम्ब हैं मानो वे दोनों ख़ुदा की ओर से एक-दूसरे के सामने दर्पण हैं या जुड़वां हैं जो एक-दूसरे से समरूपता रखते हैं या एक ही स्त्रोत में से दो झरने निकल रहे हैं और एक-दूसरे के बराबर चले जाते हैं अत: तू विचार कर और अंधों की तरह मत हो। तो यह अटल स्पष्ट आदेश और निश्चित तर्क है जो इस बात पर मार्ग दर्शन करता है कि वास्तविक भाषा अरबी है और ख़ुदा की सच्ची किताब क़ुरआन है जो पूर्ण प्रकाश तथा सत्य और असत्य में अन्तर करती है। अत: तू विचार कर और लापरवाहों में से न हो। और जो व्यक्ति क़ुरआन पर विचार और चिन्तन-मनन करे वह समझ लेगा कि ये समस्त बातें प्रमाण से सिद्ध हो गई हैं और हमने अनुमान करने वालों की तरह नहीं लिखा अपितु हमें एक खुले-खुले प्रकाश की तरह ज्ञान मिला है।

फिर हे सन्मार्ग और अच्छाई के अभिलाषी इस बात को जान ले कि तौहीद (एकेश्वरवाद) इस आस्था के अतिरिक्त पूरी नहीं होती और हमारे लिए आवश्यक है कि हम पूर्ण दृढ़ता और विश्वास से इस बात पर ईमान लाएं कि प्रत्येक भलाई ख़ुदा तआला से ही जारी होती है और सम्पूर्ण सृष्टि के लिये वही प्रत्येक दानशीलता

عند ذوي العرفان انّ طاقة النطق والبيان من اعظم كمالات نوع الانسان بل هي كالارواح للابدان فكيف يتصور انّها ما اعطيت من يد المنان كلا بل هي تتمة الخلقة البشرية وحقيقة الارواح الانسيّة وانّها من اعظم نعم حضرة الاحدية ولا يتم التوحيد الا بعد هذه العقيدة أيرضى موحد بامرٍ فيه نقص حضرة العزّة او فيه شرك كعقائد المشركين وان الذين يعرفون اللّٰه حق العرفان يعلمون انه في كل خير مبدء الفيضان وانه موجد الموجودين ولا يتكلمون كالدهريِين والطبيعيين اولئك الذين اوتوا حظا من المعرفة وسقوا من كاس توحيد الحضرة وجعلوا من الفائزين وان ربّنا كامل من جميع الجهات ولا يُعزٰى اليه نقص في الذات والصفات

का उद्गम है और जो लोग अध्यात्म ज्ञानी हैं वे इस बात को जानते हैं कि बोलने और वर्णन करने की शक्ति मानव जाति की महान ख़ूबियों में से है बल्कि वह मनुष्य के लिए ऐसी है जैसे शरीरों के लिए आत्मा। तो कैसे गुमान करें कि वह इन्सान को ख़ुदा तआला के हाथ से नहीं मिली यह बात कदापि नहीं अपितु भाषा मनुष्य के पैदा होने का पूरक है और मानवीय रूह की वास्तविकता है और ख़ुदा तआला की ओर से एक बड़ी ने'मत है और तौहीद इस आस्था के अतिरिक्त पूर्ण नहीं हो सकती। क्या कोई एकेश्वरवादी किसी ऐसी बात पर राज़ी हो सकता है जिससे ख़ुदा तआला के बारे में कोई दोष मानना पड़े या उसमें मुश्रिकों की आस्था की तरह शिर्क हो और जो लोग ख़ुदा तआला को यथायोग्य पहचानते हैं वे जानते हैं कि वह प्रत्येक भलाई का उद्गम है और प्रत्येक मौजूद का अविष्कारक है और नास्तिकों तथा नेचरियों की तरह बातें नहीं करते। ये लोग वही हैं जिन को अध्यात्म ज्ञान से हिस्सा दिया गया है और तौहीद के प्याले पिलाए गए हैं और सफलता प्राप्त लोगों में से किए गए हैं और हमारा ख़ुदा हर प्रकार से पूर्ण है और उसके अस्तित्व एवं विशेषताओं पर कोई दोष नहीं लगाया जा सकता और वह प्रशंसा किया गया है कोई बुराई उसकी ओर नहीं जा सकती और वह अत्यन्त पवित्र है

وانه حميد لا يفرط اليه ذمّ و قدوس لا يلحقه وَصْم و هذا هو محجّة الاهتداء ومشرب الاولياء والاصفياء وصراطُ الذين انعم الله عليهم وسبيل الّذين نوّر عينيهم غير المغضوب عليهم ولا الضالين فوالله الّذى هو ذوالجلال والاكرام ان البشر ما وجد كمالًا الّا من فيضه التّام وهو خير المنعمين ام يقولون انّ نعمة النطق ما جاءت من الرحمان و ما كان معطيها خالق الانسان فهٰذا ظلم و زور وغلو فيالعدوان كالشياطين وتلك قوم ما قدروا الله حق قدره وما نظروا الى شمسه و بدره و ما فكروا انه هو رافع كل الدّجىٰ وانه خالق الارض والسمٰوات العُلىٰ خلق الانسان ثم انطقه ثم هدٰى وما من نعمةٍ الا اعطىٰ فهذا هو ربّنا الاَعلىٰ وخالقنا الاغنىٰ وسعت

कोई दोष उसके साथ संलग्न नहीं हो सकता। यही हिदायत प्राप्ति का मार्ग है तथा वलियों और सूफ़ियों का यही मत है तथा उन लोगों का मार्ग है जिनको आंखें दी गईं परन्तु जिन लोगों पर ख़ुदा का प्रकोप है और (जो) गुमराह हैं उन का यह मार्ग नहीं। अत: उस ख़ुदा की कसम जो महा प्रतापी तथा सम्मान वाला है कि मनुष्य ने प्रत्येक कमाल (ख़ूबी) उसी की दानशीलता से पाया है और वह उत्तम ईनाम करने वाला है। क्या लोग यह कहते हैं कि इन्सान को बोलने की नेमत ख़ुदा तआला की ओर से नहीं मिली और वह मनुष्य का सृष्टा इस नेमत का देने वाला नहीं, तो यह अन्याय और झूठ है और अन्याय में शैतान के समान अतिशयोक्ति है और ये वे लोग हैं जिन्होंने ख़ुदा तआला की वह क़द्र नहीं की जो क़द्र करने का हक़ था (यथा योग्य महत्त्व नहीं दिया) और उसके सूर्य एवं चंद्रमा की ओर नज़र उठा कर नहीं देखा और यह नहीं सोचा कि ख़ुदा वह ख़ुदा है जो प्रत्येक अन्धकार को दूर करता और बुलन्द आकाशों तथा पृथ्वी को पैदा करने वाला है, उसने मनुष्य को पैदा किया फिर उसे बोलना सिखाया और फिर मार्ग-दर्शन दिया और कोई ऐसी ने'मत नहीं जो उसने प्रदान नहीं की। अत: यही हमारा सर्वश्रेष्ठ ख़ुदा है हमारा सृष्टा और अत्यन्त नि:स्पृह है। उसकी ने'मतें हमारे बाह्य और आन्तरिक पर छा रही हैं

نعمه ظاهرنا و باطننا و احاطت آلائه ابداننا و انفسناهو الذى خلق الانسان و أتمّ الخلق و زان و اكمل الاحسان فكيف يظنّ انه ما علّم البيان اتظن انّه قدر علىٰ خلق البشر و ما قدر على الانطاق و ازالة الحصر او كان من الغافلين افانت تعجب هٰهنا من قدرة رب العالمين و ترى انه قوى متين و انه خالق الجوهر و العرض و منور السمٰوات و الارض و مجيب دعوة الداعين فهل لك ان تتوب اليه و تميل و تتحامى القال و القيل و الله يحب الصالحين۔

فلما ثبت ان ربنا هو نور كل شئ مِن الاشياء و منير ما فى الارض و السماء ثبت انه المفيض من جميع الانحاءٍ و خالق الرقيع و الغبراء و هو احسن الخالقين و انه اعطى العينين و خلق اللسان

और उसकी कृपाएं हमारे शरीरों और प्राणों का घेराव कर रही हैं। वही है जिसने मनुष्य को पैदा किया और उसकी पैदायश को पूरा किया और शोभा प्रदान की और अपने उपकारों को चरम सीमा तक पहुंचाया। तो ऐसे उपकारों के बारे में क्योंकर गुमान किया जाए कि उसने इन्सान को बोलना न सिखाया। क्या तेरा यह गुमान है कि वह मनुष्य को पैदा करने पर तो समर्थ हुआ परन्तु उसको बुलाने और उसकी ज़ुबान खोलने पर समर्थ न हो सका और लापरवाहों में से था। क्या तू यहां समस्त लोकों के प्रतिपालक की क़ुदरत से आश्चर्य करेगा। और तू देखता है कि वह ज़बरदस्त शक्ति वाला है और वह जौहर तथा अर्ज़ का स्रष्टा है और पृथ्वी तथा आकाशों को प्रकाशमान करने वाला है और दुआओं को स्वीकार करने वाला है। क्या तू इस बात की रुचि रखता है कि उसकी ओर ध्यान करे और तर्क-वितर्क को छोड़ दे। और ख़ुदा नेक बन्दों से प्रेम रखता है

और जबकि सिद्ध हुआ कि हमारा ख़ुदा प्रत्येक चीज़ का प्रकाश और पृथ्वी तथा आकाशों का रोशन करने वाला है तो सिद्ध हो गया कि वही हर प्रकार से समस्त वरदानों का उद्गम है और वही पृथ्वी और आकाश का स्रष्टा और समस्त पैदा करने वालों से उत्तम पैदा करने वाला है और उसने दो आँखें दीं और जीभ

و الشفتین و ھدی الرضیع الی النجدین و ما غادر من کمال مطلوب الا اعطاھا باحسن اسلوب فمن الغباوۃ ان تظن ان النطق الذی ھو نور حقیقۃ الانسان و مناط العبادۃ و الذکر و الایمان ما اعطی مع الخلقۃ من الرحمان بل وجدہ البشر بشقّ النّفس و جھد الجنان بعد تطاول امد و امتداد الزمان و ھل ھذا الا افتراء الکاذبین و من اٰمن بالّذی لہ کمال تام فی الذات و الصفات و فیوض متنوعۃٌ لاھل الارض و السموات و عرف انہ مبدء الفیوض من جمیع الجھات یومن بالضرورۃ بانہ اعطی کلّ شیء خلقہ و ما غادر شیئًا من الکمالات و ھو مفیض کل فیض احتاجت الیہ طبائع المخلوقات بحسب الاستعدادات و ما نعب غراب الا بتعلیمہ و ما زئر اسدٌ

दी और होंठ दिए और बच्चों को स्तनों की ओर मार्ग-दर्शन किया और कोई ऐसा इन्सानी कमाल नहीं छोड़ा जिसकी इन्सान को आवश्यकता है और प्रत्येक अभीष्ट उत्तम तौर पर अदा किया। तो यह मूर्खता होगी कि ऐसा गुमान किया जाए कि बोलना जो मानवीय वास्तविकता का प्रकाश है और ज़िक्र, ईमान तथा उपासना का आधार है ख़ुदा तआला की ओर से इन्सान को वही नहीं मिला अपितु इन्सान ने उसको अपनी मेहनत और परिश्रम से एक लम्बी अवधि के पश्चात् तथा लम्बे समय के बाद पाया और यह विचार खुला-खुला झूठ बोलने वाले लोगों का मन गढ़त झूठ है और जो व्यक्ति उस हस्ती पर ईमान लाया हो जो अपने अस्तित्व तथा विशेषताओं में सर्वांगपूर्ण है जो भिन्न-भिन्न प्रकार के वरदान पृथ्वी और आकाश पर रहने वालों के लिए रखता है और उसने ज्ञात कर लिया हो कि ख़ुदा तआला प्रत्येक प्रकार से वरदान का उद्‌गम है वह आवश्यकतानुसार इस बात पर अवश्य ईमान लाएगा कि उसने प्रत्येक चीज़ को उसके यथायोग्य पैदा किया है और कोई अभीष्ट शेष नहीं छोड़ा। और वह प्रत्येक दानशीलता का उद्‌गम है और सृष्टि के स्वभाव योग्यतानुसार उसके मुहताज हैं और कोई कौवा कां-कां नहीं करता और न शेर गरजता है परन्तु उसी के सिखाने और समझाने से, और वह प्रत्येक भलाई

الا بتفهيمه هو منبع كل خير و فيضان و معلم كل نطق و بيان و كذلك كان شان رب العالمين اتزعم انه رَبّى الانسان كرجل عاجز من اكمال التربية لا بل ربّاه بأيدى القدرة التامة حتى وهب له لقب الخليفة و كمله بكمال الفضل و الرحمة و اعطى له مالم يعط احدًا من المخلوقين و انه هو الله الذى يربّى الاشجار بتربية كاملة حتى يجعلها دوحا ذات عظمة و يزيّنها بزهر و انواع ثمرة و اظلال باردة ممدودة تسُرّ النّاظرين فما زعمك انه خلق الانسان خلقا غير تامٍ و ما بلّغه الى مقام فيه كمال نظام و تركه ناقصا كاللاغبين ثم العلوم التى توجد فى مفردات اللسان العربية تشهد بالشهادة الجليلة انها ليست فعل احد من البريّة و انها من

और वरदान का उद्गम और प्रत्येक बोली और बयान का शिक्षक है और ऐसी ही रब्बुल आलमीन की शान होनी चाहिए थी। क्या तेरा यह गुमान है कि उसने मनुष्य का पोषण उस मनुष्य की तरह किया जो पूर्ण पोषण करने से असमर्थ हो। यह कदापि सही नहीं। बल्कि उसने पूर्ण क़ुदरत के दोनों हाथों से पोषण किया है यहां तक कि उसको ख़लीफ़ा की उपाधि प्रदान की और पूर्ण कृपा और दया से उसे पूर्ण किया और उसे वे ने'मतें दीं जो किसी प्रजाति को नहीं दीं और वह वही ख़ुदा है जो पूर्ण प्रशिक्षण के साथ वृक्षों का पोषण करता है यहां तक कि उनको बड़े-बड़े वृक्ष कर देता है और उन्हें फूल तथा भिन्न-भिन्न प्रकार के फलों और शीतल तथा फैली हुई छायाओं से सजाता है और ऐसा सजाता है कि दर्शक प्रसन्न होते हैं। तो तेरा क्या गुमान है कि उस ख़ुदा ने मनुष्य को दोषपूर्ण पैदा किया है और ऐसी पूर्णता तक नहीं पहुंचाया जिसमें व्यवस्था की पूर्णता है और थकने वालों की तरह उसे दोषपूर्ण छोड़ दिया। फिर वे विद्याएं जो अरबी भाषा के मुफ़रद शब्दों में पाई जाती हैं वे खुले-खुले तौर पर गवाही देती हैं कि वह सृष्टि का कार्य नहीं हैं और उसका कार्य हैं जिसने आकाश और पृथ्वी को पैदा किया है। और तेरे दिल में यह बात दुविधा पैदा न करे कि मनुष्य बोलता और

خالق السماء والارضين و لا يختلج فی قلبك ان الانسان لا يتولد ناطقا متكلمًا بل يجد هذا الكمال متعلّما كما نشاهد بالحق واليقين فان هذا الا يراد عليك لا لك فاصلح حالك ولا يغفل بالك كالنائمين فانك اذا قبلت ان النطق لا يحصل الّا بالتعليم فلزمك ان تقبل ان البشر الاول مَا فهم الا بالتفهيم فاقررت بما انكرت ان كنت من المتفكرين وقد جرب الناس و تظاهر الخبرة والقياس ان الاطفال المتولّدين لو يتركون غير متعلمين ولا يعلمهم لسانهم احد من المعلّمين فلا يقدرون علىٰ نطق ولا يجيبون المنطقين بل يبقون كبكم صامتين فایّ دليل اوضح من هذا لمن طلب الحق وهو امين و ما اتبع سبل الضالين فجاهد حق

बातें करता हुआ पैदा नहीं होता अपितु उस पूर्णता को शिक्षा द्वारा पाता है जैसा कि हम निश्चित तौर पर देख रहे हैं क्योंकि यह आरोप वास्तव में तुझ पर है न तेरे लिए। अत: अपने हाल को ठीक कर और अपने दिल को सोए हुए लोगों की तरह लापरवाह मत कर क्योंकि जब तूने स्वीकार कर लिया कि बोलना केवल शिक्षा द्वारा ही प्राप्त होता है तो तुझे इस बात का स्वीकार करना भी अनिवार्य हो गया कि पहला मनुष्य भी समझाने के बिना स्वयं नहीं समझ सका। अत: इस रंग में तो तूने इस बात का इकरार कर लिया जिसका इन्कार कर दिया था। तो यही सही है यदि तू सोचे और विचार करे। यही बात प्रमाणित है कि लोग परख चुके और परखने तथा अनुमान से सहमत होकर यह गवाही दी कि बच्चे जो पैदा होते हैं यदि वे बिना शिक्षा के छोड़े जाएं और कोई सिखाने वाला उनको उनकी भाषा न सिखाए तो वे बोलने पर समर्थ नहीं हो सकते और न बुलाने वालों को उत्तर दे सकते हैं यही नहीं बल्कि गूंगों की तरह चुप रहते हैं। तो इस से बढ़कर उस व्यक्ति के लिए कौन सा स्पष्ट तर्क होगा जो सत्याभिलाशी और अमीन है जो गुमराहों के मार्ग पर नहीं चलता। अत: कोशिश कर जैसा कि कोशिश करने का हक़ है, और विचार कर जैसा कि सन्मार्ग प्राप्त विचार किया करते हैं और

الجهاد وفكر كاهل الرشاد ولا تستعجل كالمعرضين و من اجلى البديهيات ان اٰدم خلق من يدربّ الكائنات و ما كان احد معه من المعلمين و المعلمات فثبت ان معلمه كان خالق المخلوقات أفلا تؤمن بقدرة قوى متين افلا تعلم ان وجود البرية ظل لصفة الربوبية وبها كان ظهورهم فى هذه النشأة و كان النطق من تتمة خلق الانسان فكيف يجوز الخداج للذى ظهر من يدى الرحمان اتزعم ان اللّٰه الذى نفخ روحه فيه ما كان قادرًا اَنْ ينطق فيه مالك لا تفكر كالمسترشدين اتظن ان اللّٰه غادر ربوبيته ناقصة اوو ثئت يده بعد ما ارٰى قدرة او كفأه رجل من الحاجزين وانْ كنت تقر بالتعليم ولكن لا تقر بتعليم الرب الكريم بل تسلك مسلك

विमुख होने वाले लोगों की तरह जल्दी मत कर और यह बात तो जग ज़ाहिर है कि आदम ख़ुदा तआला के हाथ से पैदा किया गया था और उस समय कोई सिखाने वाला या सिखाने वाली आदम के साथ मौजूद न थे। तो सिद्ध हुआ कि आदम का सिखाने वाला और बोली सिखाने वाला ख़ुदा तआला ही था। क्या तू सामर्थ्यवान, शक्तिशाली ख़ुदा की शक्ति पर ईमान नहीं रखता? क्या तुझे मालूम नहीं कि सृष्टियाँ प्रतिपालन की विशेषता का प्रतिबिम्ब है। और उसी प्रतिपालन की विशेषता के साथ समस्त सृष्टि का इस संसार में प्रकटन हुआ और बोलना मनुष्य के पैदा होने का एक परिशिष्ट (पूरक) है। तो इन चीज़ों को दोषपूर्ण कैसे समझा जाए जो ख़ुदा तआला के दोनों हाथों से पैदा हुई हैं। क्या तू यह सोचता है कि वह ख़ुदा जिसने मनुष्य में जीवन की रूह फूंकी वह इस बात पर समर्थ नहीं था कि उसके मुंह को बोलने पर समर्थ कर देता। तुझे क्या हो गया कि तू रशीद (अक्ल रखने वाले)लोगों की तरह नहीं सोचता। क्या तू यह गुमान करता है कि ख़ुदा तआला ने अपने प्रतिपालन को अधूरा छोड़ दिया या क़ुदरत दिखाने के बाद फिर उसके हाथ निकम्मे हो गए या किसी रोकने वाले ने उसे रोक दिया और यदि यह बात है कि बोली सिखाने का तो इक़रार करता है परन्तु यह इक़रार

فلاسفة هذا الزمان و تذهب الٰی قدم نوع الانسان فاعلم ان هذا باطل بالبداهة و العیان و ان ھو الا الدعوی کدعاوی الصبیان او ھذی کھذیان النشوان ما اتوا علیه بالبرھان و ما کانوا مثبتین و کیف و انّ تفرّد حضرۃ الاحدیة فی کمال الذات و الھویّة یقتضی اراءۃ نقصان البریة لیعلموا ان البقاء الذی ھو نوع من الکمال لا یوجد الا فی حی ذی العزۃ و الجلال و لیعلموا انه صمد غنیّ کفاہ وجودہ و لا حاجة ان یکون احدٌ ولیّه و ودودہ و لیس علیه ابقاء احد علی وجه الوجوب و لیس امر لذاته الغنی کالمطلوب و لیس له حاجة الی المخلوقین بل قد تقتضی ذاته تجلیات الربوبیة لیُعْرف انھا من صفاته الذاتیة فیخلق ما یشاء بالامر و الارادۃ

नहीं करता कि ख़ुदा ने सिखाई बल्कि इस युग के दार्शनिकों के पद-चिन्हों पर चलता है और मानव जाति के क़दम का काइल (मानने वाला) है। अत: जान ले कि यह विचार स्पष्ट तौर पर ग़लत है और यह केवल बच्चों के दावों की तरह दावा है और या मस्त लोगों की बकवास की तरह एक बकवास है। वे लोग इस बात पर कोई तर्क नहीं ला सके और अपने दावे को सिद्ध नहीं किया और यह कैसे सही हो जबकि ख़ुदा तआला का अपने व्यक्तिगत कमालों में अद्वितीय होना इस बात को चाहता है कि उसके मुकाबले पर समस्त सृष्टियाँ अपूर्ण हालत में हों ताकि सब लोग जान लें कि वह अनश्वरता जो पूर्णता की एक प्रकार है वह उस जीवित प्रतापी ख़ुदा के अतिरिक्त किसी में नहीं पाई जाती और ताकि जान लें कि वह निस्पृह है। उसका अस्तित्व उसके लिए पर्याप्त है कुछ आवश्यकता नहीं कि उसका कोई सहायक हो या दोस्त हो तथा उस पर अनिवार्य नहीं किसी को हमेशा के लिए शेष रखे तथा उसके नि:स्पृह अस्तित्व के लिए किसी बात की मांग उचित नहीं और उसे सृष्टि की ओर से कोई आवश्यकता नहीं अपितु उसका अस्तित्व प्रतिपालन की चमकारों को चाहता है ताकि जाना जाए कि प्रतिपालन उसकी व्यक्तिगत विशेषताओं में से है। अत: अपने आदेश और इरादे से जो

و قد يقتضى تجليات الاحدية ليعرف ان غيره هالكة الذات باطلة الحقيقة و ليس له اليه مثقال ذرة من الحاجة فيهلك كلمن على الارض من نوع الخلقة و لا يغادر فردًا من افراد البرية الا و يمحوا اثره بالاهلاك والاماتة و كذلك يدير صفاته الٰى ابد الاٰبدين و كل صفةٍ يقتضى ظهوره بعد حين فيخلق قرونا بعد ما اهلك قرونا اولٰى ليعرف بصفاتٍ عليها مدار نجات الورى و لا يحتاج الى قدم نوع كما هو زعم النوكىٰ وهو غنى عن العالمين ولا تنفك صفات الرحمٰن من ذات الرحمٰن وترى دور صفات اللّٰه القهّار كدور الليل والنهار ولا تتعطل صفاته كما هو زعم الغافلين بل يقتضى ذاته وقت الافناء كما يقتضى وقت الانشاء ليتحقق

चाहता है पैदा करता है। और कभी उसका अस्तित्व चमकारों एवं एकेश्वरवाद की मांग करता है ताकि जाना जाए कि उसके बिना सब मरने वाली चीज़े हैं और उनकी लेशमात्र भी (उसको) आवश्यकता नहीं। तब वह प्रत्येक को जो पृथ्वी पर है मार देता है और एक व्यक्ति को भी नहीं छोड़ता बल्कि उसका निशान मिटा देता है और इसी प्रकार अपनी विशेषताओं को घुमाता रहता है और कभी अन्त नहीं और प्रत्येक विशेषता अपने समय पर प्रकट होना चाहती है। तो कुछ युगों को तबाह करने के बाद दूसरे युग पैदा कर देता है ताकि वह अपनी उन विशेषताओं से पहचाना जाए जो मुक्ति का आधार हैं और वह किसी प्रकार की अनश्वरता का मुहताज नहीं जैसा कि मूर्खों का विचार है और वह समस्त संसार में नि:स्पृह है और ख़ुदा तआला की विशेषताएं उसके अस्तित्व से पृथक नहीं हो सकतीं और ख़ुदा तआला की विशेषताओं का दौर तू ऐसा पाएगा जैसा कि रात और दिन का दौर है और उसकी विशेषताएं निरर्थक नहीं होतीं जैसा कि लापरवाहों का विचार है। अपितु उसका अस्तित्व मारने के समय को ऐसा ही चाहता है जैसा कि पैदा करने के समय को चाहता है ताकि उसकी समस्त विशेषताएं सिद्ध हो जाएं और ताकि लोग उसके एकत्व को समझ लें

كل صفة من صفاته الغرّاء وليعرف الناس تفرد ذاته ولا يعتقدوا بنقص كمالاته كالمشركين وليبرق توحيده ويتجلى تمجيده ويعرف دين الله بالدائرة الابدية والسنن القديمة المستمرة و يبطل كفارة الكفرة الفجرة و يمحو طريق الشرك والبدعة و ليستبين سبيل المجرمين فهذا امر اقتضته ذاته لتعرف به صفاته ولينقطع دابر المفترين فقد يأتى وقت علٰى هذه النشأة لا يبقى وجود الا وجود الحضرة ويحفش السيل على كل تلعة الخلقة و تدرس اطلال الكينونة ولا ينفع خبط احدا من الخابطين ثم ياتى وقت تبدو سلسلة المخلوقات فهذا ان اثران متعاقبان من رب الكائنات لئلا يلزم تعطل الصفات فاذا ثبت هذا الدور فى صفات

और यह आस्था न रखें कि उसकी ख़ूबियों में कुछ कमी है और ताकि उसका एकेश्वरवाद (तौहीद) चमके और उसकी महानता प्रकट हो और ख़ुदा का धर्म शाश्वत दायरे के साथ पहचाना जाए और अनादि नियमों के साथ उसका ज्ञान हो और ईसाइयों के कफ़्फ़ारे का झूठा होना सिद्ध हो और शिर्क तथा बिद्अत के तरीक़े मिट जाएं और स्पष्ट हो जाए कि अपराधियों का मार्ग यह है। अत: यह वह बात है जिसको ख़ुदा तआला के अस्तित्व ने चाहा ताकि उसके साथी उसका अस्तित्व पहचानें। और ताकि झूठ गढ़ने वालों की जड़ काटी जाए। अत: इस संसार पर कभी वह समय आ जाता है कि ख़ुदा तआला के अतिरिक्त एक व्यक्ति भी शेष नहीं रहता और मौत का सैलाब (बाढ़) प्रत्येक आबादी वाली ऊंची-नीची भूमि पर चढ़ जाता है और अस्तित्व के निशान समाप्त हो जाते हैं और किसी को हाथ-पैर मारना लाभ नहीं देता। फिर एक दूसरा समय आता है कि सृष्टियों का सिलसिला आरम्भ हो जाता है। तो ये दोनों निशान ख़ुदा तआला की ओर से एक दूसरे के पीछे चलते हैं ताकि विशेषताएं स्थगित न हों। अत: जब कि यह दौर ख़ुदा तआला की विशेषताओं में सिद्ध हुआ और पैदा करना तथा मारना ख़ुदा तआला की अनादि आदतें सिद्ध हुईं तो इस से मानव जाति

الرحمٰن وثبت الافناء والانشاء من سنن المنان من قديم الزمان فقد بطل منه راى قدم نوع الانسان و كيف القدم مع ازمنة العدم والفقدان و اٰوان الفناء والبطلان فانظر كالمجدين ولاتتكلم كالمستعجلين۔

واعلم ان القدم الحقيقى لا يوجد الا فى ذى الجلال والاكرام ويدور رحى الفناء على الارواح والاجسام واحديته تقتضى فناء الغير فى بعض الايام الا الذين دخلوا فى دار الله وغسلوا بجار الله وحقّت بهم انوار الله وازيل اثر الغير بآثار الله و ماتوا وهم كانوا فانين فى حُبّ ربّ العالمين فاولئك الذين لا يذوقون الموت بعد موتتهم الاولٰى رحمة من ربّهم الاَعلٰى فلا يرون أَلما ولا بَلْوٰى

के अनादि होने का मामला झूठा हो गया और नास्ति, समाप्ति और मौत के बावजूद अनश्वरता कैसे शेष रह सकती है तो कोशिश करने वालों की तरह सोच और जल्दी करने वालों की तरह मत बोल।

और यह बात जान ले कि वास्तविक अनश्वरता प्रतापवान ख़ुदा के अस्तित्व के अतिरिक्त किसी चीज़ में भी नहीं पाई जाती, तथा रूहों और शरीरों पर मृत्यु की चक्की चल रही है और ख़ुदा तआला का व्यक्तिगत एकत्व कुछ ज़मानों में अपने अतिरिक्त अन्यों की समाप्ति को चाहता है सिवाए उन लोगों के जो ईमान पर मृत्यु पाकर ख़ुदा तआला के घर में प्रवेश कर गए और ख़ुदा तआला के दरियाओं से स्नान कराए गए और ख़ुदा का प्रकाश उन पर छा गया और ख़ुदा तआला के निशानों से ग़ैर के निशान मिटाए गए और ख़ुदा में लीन होकर ख़ुदा तआला की मुहब्बत में मर गए। तो ये वही लोग हैं जो अपनी पहली मृत्यु के पश्चात् फिर मृत्यु का स्वाद नहीं चखेंगे। यह समस्त रहमत (दया) उनके महान रब की ओर से है। अत: वे न कोई दर्द और न कठोरता देखते हैं और ख़ुदा तआला के स्वर्ग में हमेशा रहते हैं और ख़ुदा तआला उनको अपने जीवन में से जीवन प्रदान करता है और अपनी ख़ूबियों में

و یبقون فی جنة اللّٰہ خالدین و یعطیھم اللّٰہ حیاتًا من حیاته و کمالات من کمالاته ولا تفنیھم غیرته بما احاطت علیھم احدیته فطوبٰی للّذین ضلّوا فی حُبّ مولٰی قویّ متین۔

ثم نعود الی کلمتنا الاُوْلٰی و نقولُ ان اللّٰہ الاتقٰی جعل کل شیءٍ من الماء حیًّا و الماء نزل من السّماء بانواع البرکات و العطاء فالنتیجة ان کل فیض جاء من حضرة الکبریاء و ھو مبدء کل خیر لجمیع الاشیاء و ھٰذا ردًّا اٰخر علی المنکرین الذین یقولون ان اللّٰہ خلق الانسان کابکم و ما فھّم و ما علّم و خلقه کالناقصین ھٰذا ما کتبنا لِلْمُلحدین و الطبیعین الذین لا یؤمنون بدین اللّٰہ و یقولون ما یقولون مُجترئین و اما الذین یومنون بما جاء به رسول اللّٰہ خاتم

से ख़ूबी प्रदान करता है और उसका स्वाभिमान उनको फ़ना नहीं करता क्योंकि उसका एकेश्वरवाद उन पर छा जाता है। अत: मुबारक वे लोग जो उसके प्रेम में खोए गए जो शक्तिशाली स्वामी है।

हम फिर अपनी पहली बात की ओर लौटते हुए कहते हैं कि नि:स्पृह ख़ुदा ने प्रत्येक वस्तु को पानी से जीवित किया है और पानी कई प्रकार की बरकतों तथा कृपाओं के साथ आकाश से उतरा है तो परिणाम यह निकलता है कि प्रत्येक फ़ैज़ ख़ुदा तआला की ओर से ही आया है और वह समस्त वस्तुओं के लिए भलाई का उद्गम है और यह इन्कार करने वालों का एक और खण्डन है अर्थात् उन पर जिन का यह कहना है कि मनुष्य गूंगे की तरह पैदा किया गया है और ख़ुदा ने उन्हें न कुछ सिखलाया और न समझाया और अपूर्ण की तरह उनको पैदा किया। यह तो हमने नास्तिकों और नेचरियों के लिए लिखा है जो ख़ुदा के धर्म पर ईमान नहीं लाते और निर्भीक होकर जो चाहते हैं बोल उठते हैं परन्तु वे लोग जो ख़ातमुल अंबिया सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ईमान लाए तो उनके लिए तो इतना ही पर्याप्त है जो हमने पवित्र क़ुर्आन से सिद्ध किया है। क्या उनका एकेश्वरवाद उनको यह अनुमति दे सकता

النبيين فيكفى لهم ما اثبتنا من كتاب مبين أيامرهم توحيدهم ان ينسبوا فعل الله الٰى غير الربّ القدير او يقسموا خلق الله بين الرب و العبد الحقير او يحسبوا خلقه الاشرف ناقصًا محتاجًا الى الناقصين كلا بل هى كلمة لا تخرج من افواه المؤمنين الموحّدين وللنطق شان خاص كشان الحيٰوة و قد خصّه الله بالبشر من جميع الحيوانات فكما ان البشر ما وجد الحيات الّا من الرحمان فكذٰلك ما وجد النطق الا من ذلك المنان و هذا هو الحق افانت من المرتابين و ان كنت تظنّ انّ امّك علمك اللسان فمن عَلّم اُمّك الاولٰى و علّمها البيان فلا تكوننّ من الجاهلين و ان الله اومٰى فى مقامات من الفرقان الٰى انّ العربية هى اُمّ الالسنة و وحى الرحمان

है कि ख़ुदा तआला के कार्य को उसके अतिरिक्त की ओर सम्बद्ध करें या ख़ुदा और बन्दे में पैदायश को विभाजित करें। या उसकी उत्तम सृष्टि को दोषपूर्ण तथा अपूर्णों के समान मुहताज समझें? कदापि नहीं, अपितु यह एक ऐसी बात है जो एकेश्वरवादी मोमिनों के मुख से नहीं निकल सकती और वाक् के लिए एक विशेष शान है जैसा कि जीवन के लिए एक विशेष शान है और ख़ुदा तआला ने समस्त प्राणियों में से बोली को मनुष्य के साथ विशिष्ट किया है। तो जैसा कि इन्सान ने जीवन को केवल ख़ुदा तआला से पाया है उसी प्रकार उसने बोलने को भी केवल उस वास्तविक उपकारी (अर्थात् ख़ुदा) से पाया है और यही सच्ची बात है। क्या तू उन लोगों में से है जो सन्देह करते हैं। और यदि तुझे यह गुमान है कि तेरी मां ने तुझे बोलना सिखाया तो तेरी पहली मां को किसने बोलना सिखाया था तथा किसने उसे सरसता का पाठ पढ़ाया था? अत: तू मूर्खों में से मत हो। और ख़ुदा तआला ने पवित्र क़ुरआन के कई स्थानों में इस बात की ओर संकेत किया है कि भाषाओं की मां और ख़ुदा की वह्यी केवल अरबी है और इसलिए उसने मक्का का नाम मक्का और 'उम्मुल क़ुरा' (अर्थात् बस्तियों की माँ) रखा क्योंकि लोगों ने उससे हिदायत

و لاجل ذٰلك سمّی مكة مكة و اُمّ القرٰی فان الناس ارضعوا منها لبان اللسان و الهدی فهٰذه اشارة الی انها هی منبع النطق و النّهٰی ففكر فی قول ربّ الورٰی لِتُنْذِرَ اُمَّ الْقُرٰی و فی ذٰلك اٰية للذی يتق اللّٰه و يخشی و يطلب الحق ولا يابی ولا يتبع سبل المعرضين ثم انت تعلم ان رسولنا خاتم النبيين كان نذيرًا لِلعَالَمين و كذٰلك سماه ربه وهو اصدق الصادقين فثبت ان مكة اُم الدُّنيا كلها و مولد كثرها و قلّها و مبدأ اصل اللغات و مركز الكائنات اجمعين و ثبّت معه انّ العربية ام الالسنة بما كانت مكة ام الامكنة من بدء الفطرة و ثبت انّ القراٰن اُمّ الصحف المطهرة و لذٰلك نزل فی اللغة الكاملة المحيطة و اقتضت حكم ارادات الالٰهية ان ينزل كتابه الكامل

और भाषा का दूध पिया। तो यह इस बात की ओर संकेत है कि केवल अरबी भाषा ही भाषा तथा बुद्धि का उद्गम है। तो ख़ुदा तआला के इस कथन में विचार कर कि यह क़ुरआन अरबी है ताकि तू मक्का को जो समस्त आबादियों की मां है डराए और इसमें उस मनुष्य के लिए निशान है जो ख़ुदा से डरे और सच की खोज करे तथा इन्कार न करे और विमुख होने वाले लोगों का अनुयायी न हो। फिर तू जानता है कि हमारा रसूल ख़ातमुल अंबिया सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम समस्त संसार के लिए नज़ीर (सचेत करने वाला) है और यही ख़ुदा तआला ने उसका नाम रखा है और वह समस्त सत्यानिष्ठों से अधिक सच्चा ख़ुदा है। तो इस से सिद्ध हुआ कि मक्का समस्त संसार की मां है और समस्त बहुसंख्यकों तथा अल्प संख्यकों का जन्म स्थल है और इसी के साथ यह भी सिद्ध हो गया कि अरबी समस्त भाषाओं की मां है, क्योंकि मक्का समस्त स्थानों की मां है और यह भी सिद्ध हो गया कि क़ुरआन समस्त ख़ुदाई किताबों की मां है और इसलिए पूर्ण भाषा में उतरा है जो सब पर छाया हुआ है और ख़ुदाई इरादों की हिक्मतों ने चाहा कि उसकी कामिल किताब जो ख़ातमुल कुतुब है उस भाषा में अवतरित हो जो भाषाओं की जड़ है और समस्त सृष्टि की मां है और

الخاتم فی اللھجة التی ھی اصل الالسنة و امّ کلّ لغت من لغات البریة
وھی عربی مبین و قد سمعت ان اللّٰہ جعل لفظ البیان صفة للعربیة
فی القراٰن و وصف العربیة بعربیّ مبین فھذہ اشارة الیٰ فصاحت ھذا
اللسان و علوّ مقامھا عند الرحمٰن و اما الالسنة الاخرٰی فما
وصفھا بھذا الشان بل ما عزاھا الیٰ نفسه لتعلیم الانسان و سمّا
غیر العربیة اعجمیا ففکر ان کنت زکیًّا و طوبیٰ للمتفکّرین و
ما نطق التورات بھذا الدعوٰی و لا وید الھنود و لا کتبٌ اُخرٰی و
ما اشار احد و ما اومٰی فلا تعز الی احدٍ منھا ما لا عزا او اخرج لنا
ھذا الدعوی ان کنت تزعم ان احدًا ادعٰی و لن تستطیع ان تخرجھا
فلا تتبع سبیل المفترین ثم اعلم ان العرب مشتق من الاعراب

वह अरबी है। और तू सुन चुका है कि अल्लाह तआला ने क़ुरआन में सरसता एवं सुबोधता को अरबी की विशेषता ठहराया है और अरबी को عربیٌّ مبینٌ (अरबी मुबीन) के शब्द का नाम दिया है। तो यह बयान इस भाषा की सरसता की ओर संकेत है और उसकी उच्च श्रेणी की ओर इशारा है परन्तु ख़ुदा तआला ने अन्य भाषाओं को इस विशेषता से प्रशंसित नहीं किया अपितु उनको अपनी ओर सम्बद्ध भी नहीं किया और उनका नाम अजमी रखा। अत: यदि तू बुद्धिमान है तो इस बात को सोच ले। सौभाग्यशाली हैं वे लोग जो इस बात को सोचते हैं। और तौरात ने कदापि यह दावा नहीं किया और न हिन्दुओं के वेद ने यह दावा किया और किसी ने इस ओर संकेत भी नहीं किया। तो तू इस दावे को उनकी ओर सम्बद्ध न कर जो उन्होंने नहीं किया या हमें दावा निकाल कर दिखा यदि यह तेरा गुमान है कि उन्होंने दावा किया है और तू कदापि नहीं निकाल सकेगा। अत: तू झूठ गढ़ने वालों का अनुयायी न बन। फिर तुझे मालूम हो कि अरब का शब्द आ'राब से बना है और वह सरस एवं सुबोध कलाम को कहते हैं। जैसा कि यह कहावत है اعرب الرجل (आरबुर-रजुलु) यह उस समय बोलते हैं कि जब किसी की भाषा सरस एवं सुबोध हो और बंधी

وهو الافصاح فی التکلم والسؤال والجواب یقال اعرب الرجل اذا کانت فی کلامه الابانة والایضاح والرزانة وما کان کرجل لا یکاد یبین و اما الاعجم فهو الذی لا یفصح کلامه ولا یحفظ نظامه ولا یری حلاوة اللسان ولا یرتب اعضاء البیان بل یا کل اکثرها و یری بعضها کعضین فهذان لفظان متقابلان و مفهومان متضادان وما اخترعهما احد من الشیوخ والشبان بل هما من خالق الانسان لقوم متدبّرین وقد جاء لفظ العرب فی کتبٍ اُوْلیٰ صُحف یسعیاه و موسٰی و فی الانجیل تقرء و ترٰی فثبت انّه من اللّٰه الاعلیٰ ولیس کهذا الاسم اسم لسان من الالسنة الاعجمیة ولن تجد نظیره فی العبرانیة وغیرها من اللهجة ففکّر هل تعلم لها سمیا

हुई न हो और اعجم (अजम) का शब्द उस पर बोला जाता है जो सरस एवं सुबोधता विहीन हो जिसकी वर्णन शैली उत्तम न हो भाषा में मिठास न हो, वर्णन के भागों में क्रम न हो अपितु कुछ शब्द खा जाए कुछ वर्णन करे और बात को तोड़-मरोड़ दे। तो ये दो शब्द परस्पर आमने-सामने हैं और दो परस्पर विपरीत अर्थ हैं और किसी ने युवाओं तथा बूढ़ों में से उनको अपनी ओर से नहीं बनाया बल्कि ये दोनों ख़ुदा की ओर से हैं उनके लिए जो सोचते हैं। और अरब का शब्द पहली किताब में भी आया है। अर्थात यसइयाह नबी की किताब, मूसा की किताब और इंजील में। तो सिद्ध हुआ कि यह शब्द ख़ुदा तआल की ओर से है तथा किसी अन्य भाषा में ऐसा नाम नहीं। और तू इसका उदाहरण विलायत में नहीं पाएगा। तू इब्रानी और दूसरी भाषाओं में विचार कर कि क्या अरबी का के समान किसी अन्य भाषा को पाता है? अत: सिद्ध हुआ कि वास्तविक भाषा अरबी भाषा ही है और उस के अतिरिक्त (भाषाओं) में यह शान नहीं पाई जाती। तो यदि तुझे कुछ सन्देह है तो शर्म करो। और यह बात बहुत स्पष्ट बातों में से है कि वह भाषा जो ख़ुदा तआला की ओर से है और वास्तव में उत्तम भाषा है वह वही भाषा है जिसका ख़ुदा तआला ने स्वयं प्रशंसा

فی تلک الالسنۃفثبت انّ العربیۃ ھی اللسان ولا یوجد فی غیرھا ھذا الشان ففکر ان کنت من المشککین ومن اجلی العلامات ان اللسان الذی کان من ربّ الکائنات و کان من احسن اللغات وابھی فی الصفات ھو اللسان الذی مدحہ اللّٰہ وسماہ باسم حسنٍ کما ھی سنۃ ربّ ذی مِنَنٍ فانبئوا بذٰلک اللسان ان کنتم فی شکٍّ من ھٰذا البیان و لن تجدوا کالعربیۃ اسمًا فی الحُسن واللمعان ففی ذٰلک اٰیات للمتوسّمین وامّا العجم فھم عند اللّٰہ کبکم لالسان لھم او کبھائم لابیان لھم فان تکلمھم ما حصل لھم الا بالعربیۃ ولیس لفظ عندھم الا من ھذہ اللھجۃ و لا یقدرون من دون العربیۃ علی المکالمات فیتحقق حینئذ انھم کالعجماوات فقابل بوجہ طلیق

के साथ नाम रखा जैसा कि यही ख़ुदा की सुन्नत है। अत: तुम ऐसी भाषा का निशान दिखाओ यदि तुम इस भाषा के बारे में सन्देह में हो और ऐसा नाम जैसा कि अरबी है कदापि नहीं पाओगे। और इसमें विचार करने वालों के लिए निशान हैं और 'अजम' ख़ुदा तआला के नज़दीक उन गूंगों की तरह है जिनकी भाषा न हो या उन चौपायों के समान जो बोल न सकें। क्योंकि उनको केवल अरबी के द्वारा बोलना प्राप्त हुआ है और उनके पास उस के अतिरिक्त एक शब्द भी नहीं और अरबी के शब्दों के अतिरिक्त बात करने पर समर्थ नहीं हो सकते। तो यहां सिद्ध होता है कि वे चौपायों के समान हैं। अत: स्पष्ट वर्णन करने के साथ सामने आ या तेज़ भाषा के साथ झगड़, निस्संदेह तू पराजित है। अत: तू इस दावे पर विचार कर और मूर्खों को स्मरण करा अगर तू बुद्धिमान है और इन तर्कों के कारण जो तुझे मिले ख़ुदा तआला का धन्यवाद कर और इस बात को न भुला कि अजम का शब्द अज्मा से बना है और अज्मा अरबी के शब्दकोषों में चौपाए को कहते हैं। तो इस नामकरण के कारण को समझ ले ताकि तुझ पर सच्चाई का सार खुले और ताकि तू विश्वास करने वालों में से हो। और कितने ही निशान इस पर मार्ग-दर्शन करते हैं यदि तुम अभिलाषी

او خاصم بلسان ذليق انك من المغلوبين فاوصيك ان تفكر فی هذا الدعوٰی وتذكر قومًا نوكى ان كنت من العاقلين واشكر اللّٰہ علی ما جاءك من البراهين و لا تنس ان لفظ العجم قد اشتق من العجماء وهو البهيمة فی هٰذه اللغة الغراء فتدبر وجه التسمية لينكشف عليك لب الحقيقة ولتكون من الموقنين و كم من اٰية تدل عليها لوكنتم طالبين ومنها ان اللّٰہ سمى الانسان سميعًا فی الفرقان فيفهم منه انه اسمعه فی اول الزمان و ما تركه كالمخذولين و منها انه اوضح فی البقرة هذا الايماء وقال فهٰذا التعليم يدل علی اشياء منها انه مكان معلم الكلمات بتوسط المسميات و نعنی بالمسميات كلما يمكن بيانه بالاشارات فعلا كان او من اسماء المخلوقات

हो। और इन निशानों में से एक यह है कि ख़ुदा तआला ने मनुष्य का नाम क़ुरआन में समीअ (सुनने वाला) रखा है। तो इस समीअ के शब्द से समझा जाता है कि पहले युग में ख़ुदा तआला ने ही उसको सुनाया और उसको शर्मिन्दगी की हालत में नहीं छोड़ा और उन निशानों में से एक यह है कि ख़ुदा ने सूरह बक़रह में इस संकेत को अधिक स्पष्टतापूर्वक लिखा है और कहा है कि ख़ुदा ने आदम को नाम सिखाए। यह सिखाना कई बातों की ओर मार्ग-दर्शन करता है। उनमें से एक यह कि अल्लाह तआला ने वाक्यों को नामों के माध्यम से सिखाया और नामों से अभिप्राय हमारी ऐसी बातें हैं जिन का वर्णन करना संकेतों के माध्यम से संभव है, चाहे कार्य हों या सृष्टियों के नाम हों। और फिर एक बात यह है कि चीज़ों की हक़ीक़त तथा उनकी जो छुपी हुई विशेषताएं हैं वे अरबी भाषा में सिखाई गईं। यदि तू यह कहे कि नहवियों (वैय्याकरणों) ने शब्द इस्म (संज्ञा) को विशेष संज्ञाओं से विशिष्ट किया है अर्थात वे संज्ञाएँ जिन के अर्थ हैं तथा तीनों कालों में से किसी से मेल नहीं रखते तो इसका उत्तर यह है कि यह उस फ़िर्क़े की परिभाषा है और जब हम वास्तविक तौर पर दृष्टि डालें तो यह परिभाषा विश्वास से गिरी हुई होगी। अत:

ومنھا انہ کان معلم حقایق الاشیاء وخواصھا المکتومۃ المخزونۃ فی حیز الاختفاء بلغۃ عربی مبین وان قلت ان النحویین خصصوا لفظ الاسم بالاسماء المخصوصۃ التی لھا معانی ولا تقترن باحد منٓ الازمنۃ الثلاثۃ فجوابہ ان ذلک اصطلاح لھٰذہ الفرقۃ ولا اعتبار بہٖ عند نظر الحقیقۃ فانظر کالمبصرین وان قیل ان المشھور بین العامۃ من اھل الملۃ ان اللّٰہ علم اٰدم جمیع اللغات المختلفۃ فکان ینطق بکل لغت من العربیۃ والفارسیۃ وغیرھا من الالسنۃ فجوابہ ان ھذا خطأ نشأ من الغفلۃ لا یلتفت الیہ احد من اھل الخبرۃ بما خالف امرًا ثبت بالبداھۃ وما ھو الا زعم الغافلین بل العربیۃ ھی اللسان من مستانف الایّام ومستطرفھا ولیس غیرھا الا کمرجان من درر صدفھا وانت تعلم ان القراٰن والتورات قد اثبتا ما قلنا

तू विवेक वालों की तरह सोच और यदि कोई कहे कि आम मुसलमानों में तो यह प्रसिद्ध है कि ख़ुदा तआला ने आदम को समस्त भाषाएँ सिखा दी थीं और वह प्रत्येक बोली अरबी और फ़ारसी इत्यादि बोलता था। तो इसका उत्तर यह है कि यह ग़लती है और इसकी ओर कोई बुद्धिमान ध्यान नहीं देगा। क्योंकि यह स्पष्ट सबूत के विपरीत है और लापरवाहों का गुमान ग़लत है अपितु पहली भाषा और पहले युग की बोली केवल अरबी है और इसके अतिरिक्त जो भी हैं वे इस का विरसे में मिला माल हैं या कोई छोटा सा मोती उसके मोतियों में से है। और तू जानता है कि क़ुरआन और तौरात ने जो कुछ हमने कहा वह सिद्ध कर दिया है। क्या तुझे मालूम नहीं कि तौरात पैदायश अध्याय-11 में लिखा है कि प्रारम्भ में समस्त पृथ्वी की भाषा एक थी फिर जब वह ईराक अरब में दाख़िल हुई तो बाबिल शहर में बोलियों में मतभेद पड़ा और क़ुरआन का बयान तो तू सुन चुका। अत: जांच-पड़ताल करने वालों के समान सोच। फिर यहां सच्चाई के सबूत का एक और उपाय और मारिफ़त के अभिलाषियों के लिए है और वह यह है कि जब हम प्रतापी ख़ुदा की सुन्नतों पर दृष्टि

وا كملا الاثبات الا تعلم ما جاء فى الاصحاح الحادى العشر من التكوين فانه شهد انّ اللسان كانت واحدة فى الارضين ثم اختلفوا ببابل معرقين و اما القراٰن فقد سبق فيه البيان ففكر كالمحققين ثم هٰهنا طريق اٰخر لطلاب الحق والمعرفة و هو انا اذا نظرنا فى سنن الله ذى الجلال و الحكمة فوجدنا نظام خلقه على طريق الوحدة و ذٰلك امر اختاره الله لهداية البرية ليكون علٰى احدية احد من الادلة و ليدل علٰى انه الخالق الواحد لا شريك له فى السماء والارضين فالّذى خلق الانسان من نفس واحدة كيف تعزٰى اليه كثرة غير مرتبة و لغات متفرقة غير منتظمة الا تعلم انه راعى الوحدة فى كل كثرة واشار اليه فى صحف مطهرة و كتاب امام العارفين و ابان فى صحفه الغراء انه خلق كل شىء من الماء فانظر الى سنة حضرة الكبرياء

डालते हैं तो हम उसकी पैदायश को एकत्व की व्यवस्था के तौर पर पाते हैं और यह वह बात है जिसको ख़ुदा तआला ने लोगों की हिदायत के लिए ग्रहण किया है ताकि उसके एकेश्वरवाद पर तर्क हो और उस तर्क को सिद्ध करे कि वह अकेला पैदा करने वाला, भागीदार रहित 'एक' है और पृथ्वी तथा आकाश में उसका कोई भागीदार नहीं। तो जिसने मनुष्य को एक नफ़स (अस्तित्व) से पैदा किया कैसे उसकी ओर एक ऐसी प्रचुरता सम्बद्ध की जाए जो क्रमविहीन है और ऐसी भाषाएँ क्योंकर उसकी ओर से समझी जाएं जो अव्यवस्थित हैं? क्या तुझे मालूम नहीं कि उसने प्रत्येक अधिकता में एकत्व का ध्यान रखा है और अपने पवित्र कलाम में उसकी ओर संकेत किया है जो अध्यात्म ज्ञानियों का पथ प्रदर्शक है और उसने अपनी रोशन किताब में वर्णन किया है कि उसने प्रत्येक वस्तु को पानी से ही पैदा किया है। अत: तू ख़ुदा तआला की सुन्नत की ओर देख कि उसने अधिकता को एकत्व की ओर कैसे लौटाया है। और पानी को पृथ्वी तथा आकाश की मां ठहराया है। अत: बुद्धिमानों की तरह सोच कि यह हिदायत पाने की निशानी है और मूर्ख मत बन। और यह आयत ख़ुदा

کیف رد الکثرة الٰی وحدة الاشیاء وجعل الماء امّ الارض والسماء ففکر کالعقلاء فانه عنوان الاهتداء ولا تستعجل کالجاهلین وانّ هٰذه الاٰیة دلیل واضح علٰی سنة خالق الرقیع والغبراء وفیها تبصرة لاهل الانظار والاراء۔

واللّٰه وتر یحب الوتر یا معشر الطلباء۔ هو الذی نوّر من نورٍ واحد نجوم السماء وخلق نفوسًا متشابهة علی الغبراء وجعل الانسان عالمًا جامع جمیع حقائق الاشیاء فلو لم یکن نظام الخلق مبنیًا علی الوحدة لما وجدت فی خلق اللّٰه وجود هٰذه المشابهة ولکان خلق اللّٰه کالمتفرقین بل لو لم یکن النظام الوحدانی لبطلت الحکم وضاع السر الروحانی وسُدّ الصراط الربانی وعسر امر السالکین

तआला की सुन्नत पर स्पष्ट तर्क है और इसमें अहले नज़र के लिए विवेक का मार्ग है।

और ख़ुदा तआला एक है और एकत्व को पसन्द करता है वही है जिसने एक प्रकाश से समस्त सितारों को बनाया और पृथ्वी पर समस्त प्राणी मिलते-जुलते पैदा किए और मनुष्य को सम्पूर्ण जगत की वस्तुओं की वास्तविकता का संग्रहीता बनाया। यदि सृष्टियों की व्यवस्था एकत्व पर आधारित न होती तो ख़ुदा तआला की पैदायश में यह समानता न पाई जाती और सृष्टि बिखरी हुई वस्तुओं की तरह होती बल्कि यदि एकत्व की व्यवस्था न होती तो हिकमत ग़लत हो जाती और रूहानी रहस्य नष्ट हो जाता और ख़ुदा का मार्ग बन्द हो जाता तथा साधकों का मामला कठिन हो जाता। तुझे क्या हो गया कि तू उस एकत्व को नहीं समझता जो उस अनुपम की ओर मार्ग दर्शन करता है और वही इस्लाम में एकेश्वरवाद का आधार है और उसकी प्रतिष्ठा एवं प्रशंसा के लिए मूल भूत आधार है। और ख़ुदा तआला का एक होना तथा उसकी अद्धितीयता को पहचानने के लिए एक प्रकाशमान

فمالك لا تفهم وحدة دالة على الوحيد وهى فى الاسلام مدار التوحيد و اصل كبير للتعظيم والتمجيد و سراج منير لمعرفة الوحدانية الالٰهية والاحدية الربانية وانّها من علوم اختصت بالمسلمين ثم اعلم ان الاٰثار النبويّة والنصوص الحديثية قد بلغت فى هذا الٰى كمال الكثرة حتى اعطت ثلج القلب ونور السكينة كما لا يخفٰى على المحدّثين و اخرج ابن عساكر فى التاريخ و هو المقبول الثقة قال قال ابن عباس ان اٰدم كان لغته فى الجنة العربية و كذٰلك اخرج عبد الملك حديثا من خير الورٰى و رجال اٰخرون اولوا العلم والنُّهٰى وحدّثوا برواية اخرٰى فقالوا ان العربية هى اللسان الاولٰى من الله المولٰى نزلت مع اٰدم من

दीपक है। और उन विद्याओं में से है जो मुसलमानों से विशेष है। फिर जान ले कि नबवी लक्षण और हदीस के स्पष्ट आदेश इस बारे में इतनी अधिकता तक पहुँच गए हैं कि जिन से दिल की संतुष्टि एवं संतोष का प्रकाश प्राप्त होता है जैसा कि मुहद्दिसों पर स्पष्ट है और इब्ने असाकिर जो मान्य एवं विश्वसनीय है इब्ने अब्बास से अपने इतिहास में वर्णन करता है कि निश्चित रूप से स्वर्ग में आदम की भाषा अरबी ही थी और इसी प्रकार अब्दुल मुल्क़ आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से एक हदीस लाया है और अन्य विद्वान् भी अन्य रिवायतों से वर्णन करते हैं। तो उन्होंने कहा है कि अरबी ही प्रथम भाषा है जो ख़ुदा तआला की ओर से है और आदम के साथ स्वर्ग से उतरी है। फिर एक युग के बाद अक्षरांतरित हो गई और उससे अन्य भाषाएँ पैदा हो गईं और अक्षरांतरण के पश्चात जो पहली भाषा प्रकट हुई वह सुरयानी थी। और ख़ुदा तआला ने भाषा के परिवर्तित करने वालों का उच्चारण वैसा ही कर दिया और इसीलिए इसको पहले लोग पहली अरबी कहा करते थे और वह थोड़े परिवर्तन के साथ अरबी ही थी फिर अन्य-अन्य

الجنة العليا ثم بعد طول العهد حرّفت و حدثت لغات شتّٰى
و اول ما ظهر بعد التحريف كان سريانيًا باذن الله اللطيف
و صرف الله اليه لهجة المبدلين و لاجل ذٰلك سمى العربى
الاول عند المتقدمين و كان عربيا بادنٰى تصريف المتصرّفين
ثم حدثت السنة اخرٰى كما حدثت الملل و النحل فى الدّنيا
و هذا هو الحق فتدبر كالعاقلين ثم من سبل العرفان انك
تجد فى القران ذكرًا واحدًا فى اختلاف اللسان و الالوان فالله
يشير الٰى ان اللسان كانت واحدة فى زمان كما كان اللون
لونًا واحدًا قبل الوان ثم اختلفا بعد زمان و حين ثم من
لطايف الايماء ان خاتم الانبياء جعل نفسه شريك اٰدم فى
تعلم الاسماء كما اخرج الديلمى فى حديث الطين و الماء

भाषाएँ पैदा हो गईं जैसा कि अन्य-अन्य धर्म पैदा हो गए और यही बात बुद्धिमानों के निकट सच है। फिर पहचानने के तरीकों में से एक यह है कि तू क़ुरआन में भाषा और रंग के मतभेद के बारे में एक ही स्थान पर चर्चा पाएगा तो अल्लाह तआला इन दोनों को एक स्थान पर वर्णन करने से यही संकेत करता है कि भाषा एक युग में एक थी। फिर रंग भी एक युग में एक था फिर युग के लम्बे अन्तराल के बाद दोनों में अन्तर हो गया। फिर एक सूक्ष्म संकेत यह है कि ख़ातमुल अंबिया सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने स्वयं को नामों के सिखाए जाने में आदम का भागीदार ठहराया है जैसा कि दैलमी ने हदीस तीन-व-मा (अर्थात् मिट्टी और पानी) में रिवायत की है। अत: तू इस कथन पर विचार कर जो आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मेरी उम्मत मेरे लिए पानी और मिट्टी के रूप में बनाई गई और मुझे नाम सिखाए गए जैसा कि आदम को नाम सिखाए गए। तो इस बात पर विचार कर जिसकी ओर आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने संकेत फ़रमाया और तू जानता है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उम्मी थे

ففکر فیما قال خاتم النبیین مُثِلتْ لی امّتی فی الماء و الطین وعُلّمت الاسماء کما علّم اٰدم الاسماء فانظر الیٰ ما اشار فخر المرسلین و انت تعلم انه صلی اللّٰه علیه وسلم کان اُمِّیًّا لا یعلم غیر العربیة نعم اُوْتی جوامع الکلم فی ھٰذه اللھجة ظھر ان المراد من الاسماء فی قصة اٰدم و حدیث خیر الانبیاء ھی العربیة المبارکة کما تدل علیه النصوص القطعیة من کتاب مبین الا تنظر الی اشتراك الالسنة فانه یوجد فی کثیر من الالفاظ المتفرقة ولا یمکن ھذا الا بعد کونھا شعب اصل واحد فی الحقیقة وانکارھا کانکار العلوم الحسیة والامور الثابتة المرئیة فان کان تغایر الالسنة من اول الفطرة فکیف وجد الاشتراك مع عدم الاتحاد فی الاصل

अरबी के अतिरिक्त किसी अन्य भाषा को नहीं जानते थे। हाँ आप को जवामेउल क़लम (अर्थात सारगर्भित वर्णन शैली) अनुभूति विज्ञान अरबी भाषा में मिली था। तो स्पष्ट हुआ कि नामों से अभिप्राय हज़रत आदम के क़िस्से और आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हदीस में नामों से अभिप्राय अरबी भाषा है जैसा कि पवित्र क़ुरआन की स्पष्ट आयतें इस पर दलालत करती हैं। क्या तू भाषाओं की समानता की ओर नहीं देखता क्योंकि वह बहुत से भिन्न-भिन्न शब्दों में पाई जाती है और ऐसे तथा इतनी समानता इस स्थिति के अतिरिक्त संभव नहीं कि समस्त भाषाएं एक ही भाषा की शाखाएं हों और इस का इन्कार संवेदनात्मक विद्याओं के इन्कार के समान है और उन बातों के इन्कार के समान जो प्रमाणित और दिखाई देने वाली हों। अत: यदि भाषाओं का अन्तर प्रारम्भ से चला आता है तो इस पुराने अन्तर के बावजूद भाषाओं में समानता क्योंकर हो गई? अत: यह बात आवश्यक है कि हम एक ऐसी भाषा का इक़रार करें जो समस्त भाषाओं की माँ हो और इस बात का इन्कार मूर्खता और अल्प बुद्धि है और अकारण का झगड़ना और अकारण

والجرثومة فلا بد من ان نقر بلسان هی ام کلها لکمال بیان وانکاره جهل و سفاهة واللدد تحکم ومکابرة وقد تبین الحق لو کنتم طالبین و فی العربیة کمالات و خواص و اٰیات تجعلها اُمّ غیرها عند المحققین و انها وقعت لها کالظل او کالعصفور عند البازی المطل فاسمع بعض ایاتها و کن من المنصفین فمنها ان التحقیق العمیق والنظر الدقیق یُلجئنا بعد المشاهدات و رؤیة البینات الیٰ ان نقرّ بانّ لغت العرب اوسع اللغات وارفعها فی الدرجات و اعظمها فی البرکات و ابرقها بالمعارف والنکات و اتمها فی نظام المفردات وابلغها فی ترصیف المرکبات وادلها علی اللطائف والاشارات و اکملها فی جمیع الصفات من اللّٰہ رب

का अहंकार है। यदि तुम अभिलाषी हो तो सच तो स्पष्ट हो चुका और अरबी भाषा में वे ख़ूबियां और निशान हैं जिन्होंने अन्वेषकों की दृष्टि में उसे उस की दूसरी (भाषाओं) की माँ ठहराया है और वे भाषाएं अरबी के लिए छाया की तरह हैं या शिकारी बाज़ के आगे चिड़िया की तरह। अत: तू इन्साफ़ से अरबी के कुछ निशान सुन। अत: उन ख़ूबियों में से एक यह है कि नि:सन्देह गहरी छानबीन और बारीक नज़र से देखने के बाद अवलोकन और स्पष्ट बातों का देखना हमें विवश करता है कि अरबी भाषा समस्त भाषाओं से विशालतर है और वह श्रेणियों में सबसे बुलन्द और बरकतों में सबसे महानतम और मआरिफ़ तथा ज्ञान में सर्वाधिक चमकने मिश्रित शब्दों को वाले और मुफ़रद शब्दों की व्यवस्था में सर्वाधिक पूर्ण और तरक़ीबों को क्रमश: में रखने में सर्वाधिक यथास्थान तक पहुंचे हुए और सूक्ष्मताओं और इशारों पर सर्वाधिक मार्ग-दर्शन करने वाले और समस्त विशेषताओं में ख़ुद की ओर से सर्वाधिक पूर्ण और उसके नामों की बनावट में बहुत सी विद्याएं पाई जाती हैं और उसकी तरकीबों और अदा करने के तरीक़ों में सूक्ष्म ज्ञान

العالمین وتوجد علوم کثیرة فی لف اسماءها و تلمع
لطائف فی تراکیبها وطرق ادائها وسنذکرها فی مقاماتها
لکشف غطاءها ونُبیّن علوم مفرداتها و فنون مرکباتها
لقوم مسترشدین والاٰن نثبت کمال نظام المفردات فانها
اول علامة لغة هی اُمّ اللغات و وحی من حکیم قویّ متین
فانا نری ان فطرة الانسان قد اقتضت من اول الاٰوان ان یعطی
لها مفردات فیها کمال البیان کما هی کاملة من احسن
الخالقین و نرٰی ان الفطرة الانسانیة والجبلة البشریة قد
کملت بقوی مختلفة وتصورات متنوعة وارادات متفننة
وحالات متفرقةٍ وخیالات متغائرة واخلاق متلوّنة وجذبات
متضادة ومحاورات موضوعة للاٰباء والبنین والاعداء

चमक रहे हैं और हम शीघ्र ही उनका वर्णन वास्तविकता दिखाने के लिए अपने स्थान पर करेंगे और उसके मुफ़रद शब्दों के ज्ञान और कलाओं को हिदायत के अभिलाषियों के लिए वर्णन करेंगे। और अब हम मुफ़रद शब्दों की व्यवस्था की ख़ूबी सिद्ध करते हैं क्योंकि वह पहली निशानी उस भाषा की है जिसे समस्त भाषाओं की माँ कहना चाहिए और जिसे ख़ुदा तआला की वह्यी मानना चाहिए। क्योंकि हम देखते हैं कि इन्सानी पैदायश ने पहले से ही यह चाहा है कि उसको वे मुफ़रद शब्द दिए जाएं जिन में कमाल श्रेणी का वर्णन हो जैसा कि वह पैदायश ख़ुदा तआला की ओर से पूर्ण है और हम यह भी देखते हैं कि मानव स्वभाव विभिन्न शक्तियों के साथ पूर्ण किया गया है और ऐसा ही भिन्न-भिन्न प्रकार की कल्पनाओं के साथ और नाना प्रकार के इरादों के साथ और विभिन्न परिस्थितियों और एक दूसरे के विरुद्ध विचारों, रंग बदलने वाले शिष्टाचारों और परस्पर विपरीत भावनाओं के साथ उसका कमाल हुआ है और ऐसा ही वे मुहावरे जो बापों और बेटियों, दुश्मनों और दोस्तों छोटों और बड़ों में होते हैं इन्सानी पैदायश की ख़ूबियों का

والمحبين والاكابر والصاغرين ثم انضمت بها افعال تصدر من جوارح الانسان كالايدى والارجل والاعين والاٰذان و كذلك كلما يطلب بوسيلة هذه الاعضاء من علوم الارض والسماء و ما يتعلق بها كالخادمين فلما خلق اللّٰه الانسان بهذه القوٰى والاستعدادات والافعال والصناعات والمقاصد والنيّات اقتضت رحمته ان يكمل فطرته بعطاء نطق يساوى الحاجات و يمده فى جمع الضرورات والمهمات ولا يتركه كالناقصين و كان تمشية هذه الارادات موقوفا على لغت هى كامل النظام فى المفردات ليساوى ضمائر الانسان و جميع الخيالات و يعطى حلل الالفاظ للطالبين فهذه هى العربية وخصت بها هذه الفضيلة هى الّتى اعطى

परिशिष्ट हैं फिर उनके साथ वे कार्य भी हैं जो मनुष्य के हाथ-पैर से जारी होते हैं जैसा कि हाथ, पैर, आंख और कान से और इसी प्रकार वे समस्त चीज़ें जो इन अवयवों के माध्यम से मांगी जाती हैं जैसा कि ज़मीनी और आकाशीय विद्याएं और जो उनसे सम्बन्धित हैं। तो जब ख़ुदा तआला ने मनुष्य को इन शक्तियों और योग्यताओं और कारीगरियों के साथ पैदा किया और उन उद्देश्यों और नीयतों के साथ उसे बनाया तो उसकी रहमत (दया) ने चाहा कि मानवीय प्रकृति को वाक् शक्ति के साथ सम्मानित करके आगे आने वाली आवश्यकताओं के साथ बराबर और समान कर दे और समस्त मुहिम एवं आवश्यकताओं में उसकी सहायता करे और उसे अपूर्ण की तरह न छोड़े और इन इरादों का पूरा होना ऐसी भाषा पर निर्भर था जो मुफ़रद शब्दों की व्यवस्था में पूर्ण हो ताकि वह इन्सान की अन्तर्आत्माओं और उसके समस्त विचारों के साथ बराबर बैठे और अभिलाषियों के लिए यथावत शब्द प्रदान करे। तो यह भाषा अरबी है और यह श्रेष्ठता उसके साथ विशिष्ट की गई है। यह वही भाषा है जिसको ख़ुदा तआला ने मुफ़रदों में पूर्ण व्यवस्था प्रदान

الله له نظامًا كاملا فى المفردات وجعل دائرتها مساوية
بالضرورات و لاجل ذٰلك احاطت دقائق الافعال۔ و أرت
تصوير الضمائر بالتمام والكمال كالمصوّرين۔ وان اردنا
ان نكتب فيه قصّة۔ او نملى حكايةً او واقعةً او نؤلف كتابًا
فى الالٰهيات۔ فلا نحتاج الى المركبات۔ ولا نضطرّ ان نورد
التركيبات مورد المفردات كالهائمين المتخبطين۔ بل يمدنا
نظامه الكامل فى كل ميدانٍ ومضمارٍ۔ ونجد مفرداتها كحلل
كاملة لانواع معانى واسرارٍ۔ ولا نجدها فى مقام كابكم
غير مبين۔ وذلك لكمال نظامها وعلوّ مقامها وغزارة
موادها وكثرة افرادها۔ وتناسبها ورشادها واطراد اشتقاقها
واتحاد انتساقها ولكونها متساوية بآمال الآملين۔ وان صحيفة

की है और उसके दायरों को आवश्यकता के साथ बराबर कर दिया है इसीलिए यह अरबी गूढ़ अर्थों वाले शब्दों पर आधारित है और सर्वनामों के सर्वांगपूर्ण चित्रों को दिखा रही है जैसा कि चित्रकार दिखलाते हैं। और यदि हम अरबी भाषा में कोई क़िस्सा लिखना चाहें या कहानी या घटना लिखें या कोई दर्शन शास्त्र पर पुस्तक लिखें तो हम मिश्रित शब्दों को प्रयोग करने के लिए विवश नहीं होते। और हम इस बात के लिए बेचैन नहीं होते कि मिश्रित शब्दों को मुफ़रदों के स्थान पर लाएं अपितु हमें अरबी की पूर्ण व्यवस्था प्रत्येक मैदान में सहायता देती है। और हम उसके मुफ़रदों को अर्थों तथा रहस्यों के लिए पूर्ण लिबासों की भांति पाते हैं और हम उसे किसी स्थान में गूंगे की तरह नहीं पाते और यह इसलिए कि उसकी व्यवस्था पूर्ण है और उसका मकाम ऊंचा है, उसके शब्द भण्डार बहुत हैं, उसके मुफ़रद अधिक हैं। उसमें अनुकूलता और सामान बहुत है उसके धातुओं से शब्द बनाने की प्रक्रिया व्यपाक है। उसके क्रमबद्धता में समानता है वह उम्मीद रखने वालों की उम्मीदों के समरूप है। और क़ानून-ए-क़ुदरत और इस भाषा के सामान

القدرة و مواد هذه اللهجة قد صدغتا كثورى فلاحة و تقابلتا كجدارى باحة فانظر كالمُبصرين۔ و من العجائب انها كانت لسان الاُمّيين و ما كانوا ان يصقلوها كالعُلماء المتبحرين ولم يكن لهم فلسفةاليونانيين و لا فنون الهنود والصينيين و معٰذلك نجدها افصح الالسنة لتعبير خواطر الحكماء و اراءة صور اراء اهل الاراء كانها تصورها كما يُصوّر فى البطن الجنين و من فضائلها انها ما مدت قط يد المسئلة الى الاغيار و ما زيّنها احد من الحكماء والاحبار و ليست عليها منة احد من دون القادر الجبار هو الذى اكملها بيد الاقتدار و صانها من كل مكروه فى الانظار و عصمها من موجبات الملال والاستحسار فهى ربيبة خدر

कंधे से कंधा मिलाए चले जाते हैं जैसे खेती करने के दो बैल या एक सहन (प्रांगण) के सामने की दो दीवारें हैं। अत: तू सुजाखों की तरह देख और चमत्कारों में से यह बात है कि वह अनपढ़ों की भाषा है और वे उसको प्रकाण्ड विद्वानों की तरह नहीं चमकाते थे और उनको यूनानियों के दर्शन-शास्त्र में से कुछ हिस्सा नहीं था और न उनके पास हिन्दुओं तथा चीनियों की विद्याएं थीं। इसके साथ हम इस भाषा को दार्शनिकों के संवेदनशील विचारों को अदा करने के लिए और प्रत्येक राय का रूप दिखाने के लिए समस्त भाषाओं से अधिक सरस पाते हैं मानो यह भाषा उन विचारों का ऐसा चित्रण करती है जैसा कि पेट के अन्दर के शिशु का चित्र पेट में खींचा जाता है। और उसकी श्रेष्ठताओं में से एक यह है कि उसने कभी ग़ैर की ओर माँगने वाला हाथ नहीं फैलाया और किसी हकीम या बुद्धिमान ने उसे नहीं सजाया और उस पर ख़ुदा तआला के अतिरिक्त किसी का उपकार नहीं। उसी अस्तित्व ने उसको अपने हाथ से पूर्ण किया है और प्रत्येक ऐसी हालत से बचाया है जिन से नज़रें घृणा करती हैं और थकने तथा अफ़सोस के कारणों

الازل کالبنات و کقاصرات الطرف و القانتات وھی حاملة باجنّة الحکم و النکات لا تسمع صوتھا فی مجمع الھاذین والحکمة تبرق من اسرّة وجھھا بنور یزین واللّٰہ احسن خلقھا کخلق الانسان و اعطاھا کل ما ھو من کمال اللسان و اَعطاھا حسنًا یصبی قلوب المبصرین۔

فلأجل ھٰذہ الکمالات و وجازة الکلمات تعصمنا عن اضاعة الاوقات و تُسعدنا الٰی ابلغ البیانات و تحفظنا عن فضوح الحَصَرِ و تعضدنا فی قید ظبأ المعانی والشصر فلا نقف موقف مندمة فی میدان و لا نرھق بمعتبة عند بیان و تکشف علینا کلام رب العالمین وان القراٰن والعربیة کضرتی الرحٰی والامر من غیرھما لا یتأتی ومثلھما کمثل العروسین فالعربیة کزوجة

से सुरक्षित रखा है। अत: यह भाषा ख़ुदा तआला के द्वारा पोषित की हुई है जैसा कि लड़कियां और संयमी पत्नियां होती हैं और यह भाषा भिन्न-भिन्न प्रकार की हिकमतों और बरीक मारिफ़तों के साथ गर्भवती है, व्यर्थ बातें करने वालों का समूह उसकी आवाज़ नहीं सुनता और ख़ुदा तआला ने इसकी प्रकृति को ऐसा ही नेक पैदा किया है जैसा कि मनुष्य की प्रकृति को और जो भाषा की ख़ूबी होनी चाहिए इसे वह सब कुछ प्रदान किया और इसे ऐसी सुन्दरता प्रदान की है जो दर्शकों के हृदयों को आकर्षित करती है।

अत: इन्हीं ख़ूबियों के कारण और वाक्यों के संक्षिप्त होने के कारण समय को बरबाद होने से बचाती है और अत्यन्त सुबोध वर्णनों की ओर हमारा पथ-प्रदर्शन करती है और (व्याकरण द्वारा) भाषा के बंधे होने से हम पर निगाह रखती है और सुन्दर तथा मनोरम अर्थों को प्रयोग करने में हमें मदद देती है। तो हम किसी मैदान में शर्मिन्दा नहीं होते और न किसी वर्णन के समय प्रकोप के भागी होते हैं और हम पर रब्बुल आलमीन का कलाम खोला जाता है और क़ुर्आन तथा अरबी एक चक्की के दो पाट हैं और इन दोनों के मिलने के बिना

كملت فى الحُسنِ والزين ومن خواص العربيةوعجائبها المختصة انها لسان زيّنت بلطائف الصنع ووضع فيها بازاء معانى متعددة بالطبع لفظ مفرد فى الوضع ليخفّ النطق به حتى الوسع ولا يحدث ملالة الطبع وهذا امر ذو شان ممد عند بيان لا يوجد نظيره فى لسان من السنالاعجمين فلذٰلك تجد تلك الالسنة غير برية من معرة اللكن۔ وخالية من فضيلة اللسن ومع ذٰلك لا تعصم عن الفضول فى الكلام ولا تكفى مفرداتها فى استيفاء انواع المرام ولا توجد فيها ذخيرة المفردات سيما مفردات مشتملة على المعارف والالٰهيات ودقايق الدينيات بل لا تستطيع ان تؤلّف بمفرداتها قصةً او تكتب حكايةً مبسوطة من امور الدنيا والدّين فانها ممسوخة مبدلة وناقصة مغيرة فلا طاقت

उद्‌देश्य प्राप्त नहीं होता। या इन दोनों का उदाहरण पति-पत्नि की तरह है और अरबी उस पत्नी की तरह है जो सुन्दरता और श्रंगार में पूर्ण हो। और अरबी के गुण और उसकी विशेष अद्‌भुत बातों में से एक यह है कि वह एक ऐसी भाषा है जो सूक्ष्म कारीगरी से सजाई गई है जो स्वभाविक रूप से अनेकों अर्थ रखती है इनके मुक़ाबले पर बनावट में एक ही शब्द रखा गया है ताकि यथाशक्ति उसका बोलना आसान हो और तबियत दु:खी न हो और यह एक बड़ी बात है जो वर्णन में सहायता करती है और किसी भाषा में इसका उदाहरण नहीं पाया जाता। इसीलिए तू देखेगा कि समस्त भाषाएं हकलाहट के दोष से ख़ाली नहीं हैं और सरसता की कला से वंचित हैं और फिर वे भाषाएं बेकार की बातें बनाने से बचा नहीं सकतीं और उनके मुफ़रद शब्द उद्‌देश्यों की प्राप्ति हेतु पर्याप्त नहीं हो सकते और उन में मुफ़रदों का भण्डार नहीं पाया जाता, विशेष रूप से वे मुफ़रद जो मआरिफ़ और ब्रह्म ज्ञान और धार्मिक बारीकियों पर आधारित हैं अपितु तुझे यह शक्ति न होगी कि उसके मुफ़रदों के साथ कोई क़िस्सा लिखे या कोई लम्बा-चौड़ा वृत्तान्त लिखे, चाहे दुनिया के बारे में चाहे धर्म के बारे

فیھا و لا قوۃ ولا نظام ولا عظمۃ ولا کمال کعربی مبین و لاجل
ذلك لا یفوز اھلھا غلبۃ عند مقابلۃ و یفر کز مّل عند مناضلۃ
و یرھق بمعتبۃ و مذلۃ و یرٰی یوم تبعۃ کالمخذولین و انھا قد
بلغت مخارم الجبال فی علو الشان و انواع الکمال و خرجت
کفاتكٍ ماضی العزیمۃ و تنادی رجل الکریھۃ فھل من مبارزٍ
فی المخالفین و ھل فی ندوۃ حیّھم احدٌ من الباسلین و ما ھذا من
الدعاوی التی لا دلیل علیھا بل ترٰی عساکر البراھین لدیھا
کالطوافین و تری انھا قائمۃ کجحیش شیحان و تجول بمفصل و
سنان فمن ارتہ شعاعًا طارت نفسہ شعاعًا و سقط کمیتین و ما
کان للاعداء ان یاتوا ببرھان علٰی دعواھم او یخرجوا من مثواھم
و ان ھم الا کالمدفونین و ما تری وجہ السنھم ببشر یشف و نضرۃ

में। क्योंकि वे भाषाएं अपूर्ण भाषाएं हैं जो परिवर्तित की हुई हैं और उनका रूप विकृत हो गया है। अत: उन बोलियों में कुछ शक्ति और ताक़त नहीं और न कुछ व्यवस्था न श्रेष्ठता और न अरबी की तरह कुछ ख़ूबी। इसीलिए उन भाषाओं का बोलने वाला मुक़ाबले के समय विजयी नहीं हो सकता। और युद्ध में एक कायर नपुंसक की तरह भागता है और अपमान तथा निन्दा सहन करता है और अन्तत: बुरा दिन देखता है जैसा कि निर्लज्ज और असफल लोग देखते हैं। और कुछ सन्देह नहीं कि अरबी भाषा अपनी शान में पर्वतों की चोटियों तक पहुंच गई है और एक बहादुर दृढ़ संकल्प वाले की तरह मैदान में निकली है और विपक्षी मनुष्य को बुला रही है। अत: क्या कोई विरोधियों में बहादुर है और क्या कोई उनकी मज्लिस में निडर मौजूद है? और यह वह दावे नहीं हैं जिन पर कोई प्रमाण न हो अपितु तू इस दावे के पास प्रमाणों की एक फ़ौज पाएगा जैसा कि तवाफ़ (परिक्रमा) करने वाले होते हैं, और इस भाषा को तू ऐसा स्थापित पाएगा जैसा कि एक बहादुर स्थायी इरादे तथा तलवार और भाले के साथ दौड़ रहा है। तो जिसको उसने अपनी किरण दिखाई उसकी हवाइयां उड़ गईं। और मुर्दों

ترف بل تراها كموماة ليس فيها من غير رمل و حصاةٍ و لا تجد فيها عين ماء معين و الذين مارسوا اللغات و فتشوها و اطلعوا على عجائب العربية و نظروها و رأوا لطائف مفرداتها و وزنوها و شاهدوا ملح مركباتها و ذاقوها فاولئك يعلمون بعلم اليقين و يقرّون بالعزم المتين بانّ العربية متفرّدة فى صفاتها و كاملة فى مفرداتها و معجبة بحسن مركّباتها و مُصْبِيَة بجمال فقراتها و لا يبلغها لسان من الالسن الارضين و يعلمون انها فائزة كل الفوز فى نظام المفردات و ما نول لسان ان يساويها فى هذه الكمالات و انها كلمة جُرّبت مرارًا و سكّتت اعداءً و اشرارًا و ذادت كل من صال انكارًا فان كنت تنكر باصرار فات كمثلها من اغيار ولن تقدر ولو تموت كجراد الفلا او تنتحر كالنوكى فلا تكن

तथा दुश्मनों को यह सामर्थ्य नहीं कि अपने दावे पर कोई प्रमाण लाएं या अपने शयनगृह से बाहर निकलें और वे तो दफ़्न किए हुए मुर्दों की तरह हैं और उनकी जीभों का मुंह ऐसा नहीं जो पूरा लार युक्त, और भरा हुआ हो और न ऐसी ताज़गी जो चमकीली हो बल्कि उन भाषाओं को तू ऐसा पाएगा जैसा कि दाना-पानी के बिना जंगल, जिसमें रेत और कंकड़ों के अतिरिक्त कुछ नहीं और तू उनमें स्वच्छ पानी का झरना नहीं पाएगा और जो लोग भाषाओं के माहिर और छान-बीन करने वाले हैं जो अरबी के चमत्कारों से परिचित हैं जिन्होंने उसके मुफ़रदों को देखा और उन को तोला और उन के मिश्रितों के लावण्य युक्त वाक्यों को देखा और उनको चखा तो वे लोग अटल विश्वास से इस बात को जानते और दृढ़ संकल्प से इस बात का इक़रार करते हैं कि अरबी अपनी विशेषताओं में अद्वितीय और अपने मुफ़रदों में पूर्ण तथा अपने मिश्रित शब्दों की सुन्दरता में अद्भुत और अपने वाक्यों के सौन्दर्य के साथ मनमोहक भाषा है। दुनिया की भाषाओं में से कोई भाषा उसकी ख़ूबी तक नहीं पहुंचती। और वे लोग जानते हैं कि अरबी मुफ़रदों की व्यवस्था में पूर्णता की श्रेणी तक

من الجاهلين و الأسف كلّ الأسف على بعض المستعجلين من المسيحيين و الغالين المعتدين انهم حسبوا اللسان الهندية اعظم الالسنة ومدحوها بالخيالات الواهية وفرحوا بالاٰراء الكاذبة و ليسوا الا كحاطب ليل او اٰخذ غثاء من سيل او مغترف من كدرٍ لا ماء معين الا ترٰى الى اللسان الويدية الهندية وغيره من الالسنة الاعجمية كيف توجد اكثر الفاظها من قبيل البرى والنحت وشتان ما بينها وبين المفرد البحت فخداج مفرداتها وقلّة ذات يدها و عسر حالاتها يدل علٰى ان تلك الالسنة ليست من حضرة العزة و لا من زمان بدو البرية بل تشهد الفراسة الصحيحة و يفتى القلب والقريحة انها نُحتت عند هجوم الضرورات

पहुंची हुई है और किसी भाषा की मजाल नहीं कि उसकी ख़ूबियों में उसकी बराबरी कर सके और यह एक ऐसी बात है जो अनेकों बार परखी गई और शत्रुओं और दुष्ट लोगों का मुंह बन्द कर दिया और प्रत्येक ऐसे व्यक्ति को रोक दिया जो इन्कार के मार्ग से आक्रमणकारी हुआ। अत: यदि तू हठपूर्वक इन्कार करता है तो इसका उदाहरण दिखा और तू इसका उदाहरण कदापि दिखा नहीं सकेगा यद्यपि तू जंगल की टिड्डियों की तरह मर जाए या मूर्खों की तरह आत्म हत्या कर ले। अत: तू जाहिलों की भांति मत हो। और उन कुछ जल्दबाज़ों पर बहुत अफ़सोस है जो ईसाइयों में से हद से बाहर निकल गए हैं। उन्होंने संस्कृत भाषा को समस्त भाषाओं से बेहतर समझ लिया है और प्रशंसनीय विचारों के साथ उसकी प्रशंसा की है और उनका उदाहरण ऐसा है जैसा कि कोई रात को लकड़ियां इकट्ठी करे या पानी का कूड़ा-कर्कट ले-ले और पानी को छोड़ दे या गन्दे पानी में से एक घूंट ले और स्वच्छ पानी को छोड़ दे। क्या तू हिन्दी भाषा अर्थात् संस्कृत इत्यादि अजमी भाषाओं को नहीं देखता कि उनके अधिकतर शब्द कैसे कांट-छांट के समूह से हैं अर्थात् मिश्रित

وصيغت عند فُقدان المفردات ليتخلص اهلها مخالب الفقر وانياب الحاجات وما خطرت ببال الاعند ما مسّتِ الحاجة اليها و ماركبت الا اذا حث الوقت عليها وقد اقربها زمر المعادين بل يحكم الرأى المستقيم و يشهد العقل السليم ان اهل تلك الالسنة واللغات المتفرقة قوم تطاول عليهم زمان الغى والخذلان وما اعانتهم يد الرحمان وما وجدوا ما يجد اهل الحق والعرفان فحلوا السنتهم بايديهم لا بايدى الفياض المنان فكان غاية سعيهم ان ينحتوا بازاء مفرداتٍ انواع تركيباتٍ ففرحوا بحيلة فاسدة مصنوعة وبعدوا من ثمار لطيفة لا مقطوعة

हैं तो उनकी शुद्ध मुफ़रदों से क्या तुलना है। अत: उनके मुफ़रदों का अपूर्ण होना और उनकी पूंजी का कम होना इस बात पर स्पष्ट प्रमाण है कि वे भाषाएं ख़ुदा तआला की ओर से नहीं और न प्रारंभिक युग से हैं। अपितु सही प्रतिभा, हृदय और स्वभाव फ़त्वा देता है कि वे समस्त भाषाएं आवश्यकताओं के समय और मुफ़रदों के न होने के कारण बना ली गई हैं ताकि उन भाषाओं वाले मुहताज होने के चंगुलों से मुक्ति पाएं और वे उन तरकीबों का आवश्यकता पड़ने से पूर्व किसी को विचार नहीं आया और तभी याद आईं जब समय ने उनकी ओर रुचि दी अपितु सीधी राय और सद्बुद्धि आदेश देती है कि इन भाषाओं और विभिन्न शब्दकोषों वाली वह क़ौम है जिन पर गुमराही और रुसवाई का लम्बा युग गुज़र गया और उनकी ख़ुदा तआला के हाथ ने मदद न की और उन्होंने उस वास्तविकता को न पाया जिसको सच्चे और अध्यात्म ज्ञानी पाते हैं तो उन्होंने अपने हाथों से अपनी भाषा को सजाया और ख़ुदा तआला के हाथों से उस भाषा ने सजावट नहीं पाई। तो उनकी कोशिश अधिक से अधिक यह थी कि मुफ़रदों के मुक़ाबले पर तरकीबों को गढ़ें। अत: वे एक बनावटी और दूषित यत्न के साथ प्रसन्न हो गए और ऐसे उत्तम फलों से दूर जा पड़े जो न

ولا ممنوعة نافعة للاٰكلين ۔

فبدت سوئتهم لاجل منقصة اللغات و انتقاص المفردات وظهر انهم كانوا كاذبين و كانوا يحمدون السنتهم بصفات لا تستحق بها و كانوا فيها مفرطين فهتكالله اسرارهم و اذاقهم استكبارهم بما كانوا معتدين و تراهم يعادون الحق و الفرقان و لا يقبلون المحمود و المشهود و العيان و لا يتركون الحقد و العدوان و يمشون كالعمين سيما الهنود فان سيرتهم الصدود و زادهم العنود وهم المزهوون لا يخشون و لا يتواضعون و لا يتدبّرون كالخاشعين وظنّوا ان لغتهم اكمل اللغات بلٓ قالوا انّها هى وحى رب السمٰوٰت و كذالك رضوا بالخزعبلات و خدعوا قلوبهم

काटे जाएं और न मना किए जाएं जो बुद्धिमानों को लाभ देते थे।

अत: भाषा के अपूर्ण होने के कारण उन का दोष प्रकट हो गया और मुफ़रदों की कमी ने उनका पर्दाफ़ाश किया और यह बात प्रकट हो गई कि वे झूठे थे। और वे लोग अपनी भाषाओं की इतनी अतिशयोक्ति से प्रशंसा करते थे जिनकी वह अधिकारी नहीं थीं और इन अनुचित प्रशंसाओं में सीमा से बढ़ गए थे तो ख़ुदा तआला ने उनके पर्दे फाड़ दिए और उनको उनके अहंकार का स्वाद चखाया क्योंकि वे सीमा से आगे बढ़ गए थे। और तू उन्हें देखता है कि वे सच और न्याय के दुश्मन हैं और वैर तथा अत्याचार को नहीं छोड़ते और अंधों के समान चलते हैं, विशेष रूप से हिन्दू लोग क्योंकि उनका चरित्र सत्य से रोकना है और उनकी शत्रुता सीमा से बढ़ गई है और उनमें अहंकार बहुत है। वे ख़ुदा तआला से नहीं डरते और न विनम्रता धारण करते हैं और न डरने वालों की तरह विचार करते हैं और उनका गुमान है कि उनकी भाषा सब भाषाओं से अधिक पूर्ण है अपितु वे तो कहते हैं कि यही इल्हामी भाषा है। और इसी प्रकार की झूठी बातों पर प्रसन्न हो गए और अपने हृदयों को मनगढ़त बातों से धोखा दिया और प्रतिभाशाली नहीं थे। और तू उनकी भाषाओं को केवल

بالمفتريات و ما كانوا مستبصرين و تجد لسانهم مجموعة التركيبات خالية عن نظام المفردات كانّ ربهم ماقدر الا على تاليف المركبات كما ما قدر الاعلى تاليف الابدان من الذرات و كان من العاجزين و اما العربية فقد عصمها الله من هذه الاضطرارات واعطاها نظامًا كاملًا من المفردات و ان فى ذلك لاٰية للمتوسّمين ولا يخفى على لبيب ولا على منشى اديب اِنّ الالسنة الاُخرٰى قد احتاجت الٰى تركيبات شتّٰى و ما استخدمت المفردات كعربى مبين وانت تعلم ان للمفردات تقدم زمانى على المركبات فانها مناط افترار ثغر التركيب وعليها تتوقف سلسلة التأليف والترتيب فالذى كان مقدما فى الطبع والزمان فهو الذى صدر من الرّحمٰن

तरकीबों का एक संग्रह पाएगा और मुफ़रदों की व्यवस्था से ख़ाली देखेगा मानो उनका ख़ुदा केवल मिश्रित बातों के लिखने पर समर्थ था जैसा कि वह केवल इस बात पर समर्थ था कि कणों को जोड़ने से शरीर को बनाए और असमर्थ था, परन्तु अरबी भाषा को ख़ुदा तआला ने इन समस्त बेचैनियों से बचाया और उसको मुफ़रदों की पूर्ण व्यवस्था प्रदान की और इसमें विवेकियों के लिए निशान है। और किसी बुद्धिमान पर छुपा नहीं और न किसी गद्य-लेखक साहित्यकार पर कि अन्य भाषाएं नाना प्रकार की तरकीबों की मुहताज हैं और वे मुफ़रदों से अरबी की तरह सेवा नहीं लेतीं। और तू जानता है कि मुफ़रदों को मिश्रित शब्दों पर समय के हिसाब से प्राथमिकता है क्योंकि तरकीब के क्रमबद्ध दांत उसी से प्रकट होते हैं और उन्हीं पर लेखन और तरकीब का सिलसिला निर्भर है। अत: वह जो समय और स्वभाव की दृष्टि से प्राथमिक है वह वही है जो ख़ुदा तआला से निकला है और प्रत्येक तरकीब उसी की ओर से हल होती है। तो क्या तू इस बात को देखता है जिसे हम देखते हैं या पर्दे में है। फिर इसमें कुछ सन्देह नहीं कि जो शब्द मुफ़रदों के न होने के कारण जमा किए गए और आवश्यकता पड़ने पर उनके स्थानापन्न बनाए गए वह मानो स्वयं

والیها ینحل کل مرکب عند ذوی العرفان فهل ترٰی کما نرٰی او کنت من المحجوبین ثم لا شك ان الالفاظ التی جمعت عند فقدان المفردات و اقیمت مقامها عند هجوم الضرورات قد نطقت بلسان الحال انها ما اُبرزت فی بزتها الا عند قحط المفردات والامحال فاذا ثبت انها تلفیقات انسانیةو ترکیبات اضطراریة فکیف تنسب الی البدیع الکامل الذی یسلك سبیل الوجازة والحکمةو یحب طریق البساطةو الوحدة و لا یلجاء الٰی ترکیبات مستحدثة کالغافلین بل هو اللّٰه الذی فطن من اول الامر الی معان مقصودة فوضع بازائها کل لفظٍ مفردٍ باوضاع محمودة و کذٰلك سلك سبیل حکمة معهودة وما کان کالذی استیقظ بعد النوم

बोल रहे हैं कि आवश्यकता के समय लिए गए हैं। तो जब कि सिद्ध हो गया कि वह इन्सानी जोड़ ने से जमा किए गए और बेइख़्तियारी तरकीबों से एकत्र किए गए तो वे उस अद्वितीय बनाने वाले पूर्ण (ख़ुदा- अनुवादक) की ओर सम्बद्ध नहीं हो सकते कि जो संक्षेप और हिकमत की पद्धति को अपनाता है और जो फैलाव-व-एकता की पद्धति को पसन्द करता है और लापरवाहों की तरह नई-नई तरकीबों का मुहताज नहीं होता बल्कि वह ख़ुदा वही है जिसके ज्ञान में पहले से ही अभीष्ट अर्थ हैं। अत: उसने उनके मुक़ाबले पर प्रत्येक शब्द मुफ़रद रख दिया। तो इसी प्रकार वह अपनी प्रतिज्ञान दूरदर्शिता को प्रयोग में लाया और वह ऐसा तो नहीं था कि सोने के बाद जागे या निन्दा के बाद सतर्क हो, अपितु प्रत्येक मानवी (अर्थ वाले) विचार के मुक़ाबले पर प्रत्येक मुफ़रद शब्द रख दिया है जो चमकदार मोती के समान है। क्या तू उसको नहीं पहचानता और वह समस्त पैदा करने वालों से सर्वश्रेष्ठ है। क्या तू गुमान करता है कि ख़ुदा तआला हिकमत के मार्ग को भूल गया या किसी विरोधी ने उसको इस इरादे से रोक दिया या वह अभीष्ट अर्थों के प्रकट करने के लिए मुफ़रद शब्द बनाने पर समर्थ नहीं, इसलिए उसकी असमर्थता ने तरकीब

او تنبّه بعد اللؤم بل وضع بازاء كل طيفٍ معنوىّ لفظًا مفردًا ككوكب درّى ببيان جلىّ الا تعرفه وهو احسن الخالقين اتظن ان اللّٰه نسى سبيل الحكمة او بطّأ به مانع من هٰذه الارادة او ما كان قادرًا علٰى وضع الالفاظ المفردة لاظهار المعانى المقصودة فالجأه عجزه الى الكلمات المركبة والتركيبات المستحدثة واضطر الى ان يلفق لها الفاظ باستعانة التراكيب و يعتمد عليها لا على الطباع العجيب و يسلك مسلك المتكلفين و انت ترٰى انّ بَنَّآءً عاقلا ذا معرفة اذا اراد ان يبنى صرحًا فى بلدة او قصرًا فيجردة فيفطن فى اول امره الٰى كل ضرورة و ينظر كلما سيحتاج اليه عند سكونة و ان كان يبنى لغيره فينبّهه ان كان فى غفلة و لا يعمل عمل العمين بل يتصور فى

और नए-नए जोड़ों की ओर उसको बेचैन किया और वह इस बात के लिए आतुर हुआ कि अभीष्ट अर्थों के व्यक्त करने के लिए तरकीबों के जोड़-तोड़ से सहायता ले और उन तरकीबों पर भरोसा रखे न कि मुफ़रदों की स्वभाविक एवं अद्‌भुत व्यवस्था पर और तकल्लुफ़ करने वालों के मार्ग पर चले। और तू देखता है कि एक बुद्धिमान, अनुभवी राजगीर जब एक हवेली के बनाने का इरादा करता है या किसी भूमि पर एक महल बनाना चाहता है तो वह अपने कार्य के प्रारंभ में अपनी प्रत्येक आवश्यकता को समझ जाता है और प्रत्येक बात को जिसकी निवास के समय, किसी समय आवश्यकता पड़ेगी, पहले देख लेता है और अगर किसी ग़ैर के लिए वह मकान बनाता है तो यदि वह ग़ैर लापरवाही में हो तो उसे होशियार कर देता है और अंधों की तरह कोई कार्य नहीं करता अपितु वह इमारत बनाने से पहले ही उन समस्त बातों की अपने हृदय में कल्पना कर लेता है जिनकी उस मकान में रहने वालों को आवश्यकता होगी। जैसा कि कमरे, मचान, सहन और आने-जाने का मार्ग तथा वायु एवं प्रकाश के लिए खिड़कियां, रोशनदान तथा पुरुषों के बैठने के लिए स्थान और स्त्रियों के रहने का स्थान और रसोई, शौचालय तथा मेहमानों, यात्रियों और

قلبه قبل البناء كل ما سيضطر اليه احد من الثُنّاء كالحجرات والرف و الفناءٍ و المداخل و المخارج للسكناء و منافذ النور والهواء ومجالس الرجال والنساء وبيت الخبز وبيت الخلاء وبيت الاضياف و الواردين من الاحبّاء و مقام السائلينو الفقراء وما يحتاج اليه فى الصيف و الشتاء و كذٰلك لا يغادر حاجة الا و يبنى لها ما يسدّ ضرورة حجرة كان او عُلّة سُلّما كان او مصطبة او ما يسرّ القلب كالبساتين فالحاصل انه يبصر فى اول نظره كل ما سَتَؤُولُ اليه لوازم امره و لا ينسى شيئا سيطلبه احد من زمره ويتم الصرح كالمتدبّرين و امّا الجاهل الغبى و القلب المخطى فلا يرٰى خيره وشرّه الا بعد البناء ويسلك مسلك العشواء۔ ولا يرٰى

दोस्तों के रहने का स्थान और माँगने वालों के लिए ठहरने का स्थान और ऐसे स्थान जो गर्मी के मौसम के यथायोग्य हों और ऐसे स्थान जो जाड़े के लिए आवश्यक हों। इसी प्रकार कोई ऐसी आवश्यकता नहीं होती जिसके निवारण के लिए यथा आवश्यक कोई स्थान नहीं बनाता, चाहे वह कमरा हो या बाला ख़ाना हो या सीढ़ी हो या चबूतरा या कोई बाग़ हो। अत: सारांश यह कि वह पहली नज़र में ही उन समस्त बातों को देख लेता है जिनकी ओर उस मामले के लिए आवश्यक वस्तुएं होंगी और ऐसी किसी चीज़ को नहीं भूलता जो उसके गिरोह में से कोई किसी समय उसको मांगे और अपने मकान को एक प्रबंध कुशल मनुष्य की तरह पूरा करता है। परन्तु जाहिल, मूर्ख और ग़लती करने वाला दिल अपने मकान की बुराई भलाई पर उस समय सूचना पाता है जब कि मकान बन कर तैयार हो जाता है। और अंधी ऊंटनी की तरह चलता है और परिणाम को प्रथम समय में देख नहीं सकता और अन्त में जो कुछ आवश्यकताएं पड़ेंगी उन पर उसकी दृष्टि नहीं होती अत: वह मकान को बिना किसी अनुमान और क्रम के यों बना डालता है और बुद्धिमान विवेकी की तरह दृष्टि नहीं डालता और नहीं सोच सकता कि उसकी इस नींव का अंजाम क्या

المآل فی اول الحال ولا ینظر الی ما سیحتاج الیه فی بعض الاحوال فیبنی من غیر تقدیر وتنسیق وترتیب ولا یتدبر کذی معرفة لبیبٍ ولا یفطن الٰی ما یلزم لمبناه الا بعد ما سکنه وجرّب مثواه ووجده ناقصًا وراه فیشعر حینئذ انه لا یکفی لمباء ته فیتألم برویته بعد خبرته ویبکی مرّة علی فقدان مُنیته واُخرٰی علٰی حُمقه وجهالته وضیعته فِضّتهٖ وتطلع علٰی قلبه نار حسرته بما لم یدر فی اول الامر مآل خطتهٖ کالعاقلین فیتدارك مافرط منه بعد ماری التفرقة واشتات متأسّفا علٰی ما فات وباکیا کالمتندّمین فھٰذا الذهول الذی یخالف العقل والحکمة ویبائن القدرة والمعرفة الکاملة لا یُعزٰی الٰی قدیر ن الذی ھو ذو الجلال والقوة وخبیر ن الذی یحیط الاشیاء بالعلم والحکمة سبحانه ھو یعلم الخفی والاخفٰی

होगा। परन्तु उसे उस समय पता लगता है जब उसमें निवास करे और अनुभव कर ले और बेकार पाए तो उस समय उसे समझ आती है कि उसके रहने के लिए पर्याप्त नहीं है। अत: उस मकान को देखने और परखने के बाद कष्ट होता है और कभी अपनी विफलता पर रोता है और कभी अपनी मूर्खता, अनाड़ीपन और पूंजी की क्षति पर रोना-धोना करता है और उसके दिल पर हसरत की आग भड़कती है इस विचार से कि क्यों पहले इन क्षतियों और हानियों पर मेरी दृष्टि नहीं पड़ी। अत: अब अनुभव के बाद और फूट एवं परेशानी उठाने के बाद अपने नुक़सान की भरपाई करता है परन्तु दिल अफ़सोस और खेद से भरा हुआ होता है और रोते हुए बिगड़े हुए का सुधार करता है। तो ऐसी भूल जो बुद्धि और हिकमत की विरोधी और पूर्ण जानकारी के विपरीत है, उस ख़ुदा की ओर सम्बद्ध नहीं हो सकती जो सामर्थ्यवान, प्रतिष्ठावान, शक्तिशाली तथा ज्ञान और दूरदर्शिता के साथ प्रत्येक चीज़ पर छाया हुआ है और गुप्त अपितु गुप्ततर को तथा निकट एवं दूर को जानता है और वह ग़ैब (परोक्ष) को और ग़ैब के ग़ैब को जानता है और उसका कार्य प्रत्येक दोष से पवित्र है

والقریب والاقصٰی ویعلم الغیب وغیب الغیب وفعله منزه عن المعرّة والعیب وانه لا یخطی کالناقصین اُنظر الٰی ما خلق من قدرة کاملة هل ترٰی فیه من فتور او منقصةٍ ثم ارجع البصر هل ترٰی من فتور فی خلق ربّ العالمین فکفاك لفهم الحقیقة ما ترٰی فی صحیفة الفطرة ولن ترٰی اختلافًا فی خلقة حضرة الاحدیة فهٰذا هو المعیار المعرفة الالسنة فخذ المعیار۔ واعرف ما انار واتق اللّٰه الذی یحبّ المتقین واستفق ولا تکن من الغالین۔

ولا یریبك ما تجد فی اللسان الهندیة وغیرها من الالسنة قلیلا من الالفاظ المفردة فانّها لیست من دارهم الخربة ولا من عیبتهم الممزقة بل هی کالاموال المسروقة او الامتعة المستعارة فی بیت المساکین والدلیل علیها انها خالیة عن اطراد المادة

और वह अपूर्णों की तरह ग़लती नहीं करता। उसकी सृष्टियों की ओर देख जो उसने पूर्ण क़ुदरत से पैदा की हैं तू उसमें कुछ हानि या ख़राबी पाता है? फिर दोबारा दृष्टि को फेर। क्या तू ख़ुदा तआला की पैदायश में कुछ दोष पाता है। अत: तेरे लिए वास्तविकता को समझने हेतु वे बातें पर्याप्त हैं जो तू संसार में देख रहा है और तू ख़ुदा तआला की पैदायश में मतभेद कदापि नहीं पाएगा। तो भाषाओं की पहचान के लिए यही मापदण्ड है। अत: मापदण्ड को पकड़ जो कुछ रोशन हुआ उसे देख ले और उस ख़ुदा से डर जो संयमियों को दोस्त रखता है और होश में आ और अतिश्योक्ति न कर।

और तुझे यह बात सन्देह में न डाले कि तू संस्कृत इत्यादि में कुछ मुफ़रद शब्द पाता है क्योंकि वे शब्द उनके वीरान घर की जायदाद नहीं हैं और न उनके फटे हुए जामादान के ये कपड़े हैं अपितु वे समस्त शब्द चोरी के माल की तरह हैं या मांगे हुए सामान की तरह हैं और उस पर तर्क यह है कि वे अतराद मवाद (धातुओं या मस्दरों) से ख़ाली हैं और ऐसे मुफ़रदों की प्रचुरता से भी जो क्रम और अनुकूलता के साथ परस्पर आए हों और उनके साथ उनके

وغزارتها المُنْتَسَقَةِ مع فقدان وجوه التسمية ولا يتحقق كنهها الا بعد ردها الى العربية ولا يخدعك قليلها فى تلك اللغات فانّها لا يوصل الى الغايات ولا تكشف عن ساق معانى المفردات علٰى سبل اطراد اشتقاق المشتقات ونَبْشِ معادن الكلمات بل هي تفهيم سطحى لخدع ذوى الجهلات وقوم عمين و كلما يردّ لفظ الٰى منتهها مقام الردّ و يفتش اصله بالجهد والكد فترٰى انه عربيةٌ ممسوخةٌ كانها شاةٌ مسلوخةٌ وترٰى كل مضغة من ابداء عربى مبين ولا نذكر عبرانية ولا سريانية فى هٰذا الكتاب فان اشتراك ذينك اللسانين مسلّم عند ذوى الالباب من غير الامتراء والارتياب وانهما مُحرّفتان من العربية الخالصة مع ابقاء اكثر

नामकरण का कारण भी लुप्त हैं और उनकी वास्तविकता सिद्ध नहीं होती सिवाए इसके कि हम उनको अरबी की ओर लौटाएं। और इस बात से धोखा न खाना कि कुछ-कुछ नामकरण के कारण उन भाषाओं में मौजूद हैं क्योंकि इतना पाया जाना मूल उद्देश्य की ओर पथ-प्रदर्शक नहीं हो सकता और मुफ़रदों के अर्थों के रहस्य को नहीं खोलता, इस प्रकार से कि शब्दों का अतराद (धातु) निकाल कर दिखा दे और वाक्यों की खानें खोदे अपितु वह तो अनाड़ियों के लिए एक सरसरी समझ होती है और अंधों को धोखा दिया गया है और जब कोई एक शब्द उसकी जड़ तलाश करते-करते मेहनत और कोशिश के साथ अन्तिम स्तर तक पहुंचाया जाए तो तू देखेगा कि वह अरबी का विकृत रूप है। मानो कि वह एक बकरी है जिसकी खाल उतार ली गई है और तू उसके प्रत्येक टुकड़े को अरबी के टुकड़ों में से पाएगा। और हम इब्रानी और सुरयानी की इस पुस्तक में कुछ चर्चा नहीं करते क्योंकि उनकी समानता बुद्धिमानों के निकट मान्य है और इसमें कुछ सन्देह नहीं कि ये दोनों भाषाएं शुद्ध अरबी के अक्षरांतरण से पैदा हुई हैं और अक्षरांतरण के बावजूद फिर अधिकांश साहित्य संबंधी नियम शेष रहे हैं और इसी प्रकार अधिकांश तरकीबें भी सुरक्षित रही हैं और ये चोरी के समान हैं

القوانين الادبية والتراكيب المتناسبة وانهم كالسارقين و كانت دار العربية آنق من حديقة زهرٍ و خميلة شجرٍ ما راٰى اهلها حر الهوى ولا حرق الجوٰى ذات عِقْيان وعقار وغرب ونضار وحدائق وانهارٍ وزهر وثمار وعبيد واحرارٍ وجرد مربوطة وجدةٍ مغبوطة وعمارات مرتفعة ومجالس منعقدة مزينةٍ ثم انتثرت عقود الزحام منالفساد فسافروا واخذوا ما راج من الزاد واحتمل كلّ بحسب الاستعداد وركبوا متن مطايا التفرقة والتضاد وبدلو الصور بترك السداد حتى جعلواالغدق جريمة واللعل وثيمة والوليمة وظيمة والحسنة جريمة والضليع حمارًا والروضة مقفارًا وغادروا بيت الفصاحة انقٰى من الراحة

और अरबी का घर फूलों के बाग़ और हरे वृक्षों की झाड़ी से अधिक सुन्दर था और उसके पात्रों ने किसी इच्छा की गर्मी और किसी भूख की आग नहीं देखी थी और यह कि धन-दौलत, चांदी और शुद्ध सोने का मालिक था। उसमें बाग़ थे, नहरें थीं और फूल थे और फल थे और ग़ुलाम थे और आज़ाद थे और उसके तवेले में उत्तम-उत्तम घोड़े थे और गर्व योग्य प्रताप तथा दौलत थी और ऊंची इमारतें और ख़ूब सजी हुई सभाएं थीं। फिर वे समस्त सभाएं फ़साद के कारण उठ गईं तो उन्होंने सफ़र किया और जो कुछ खाने-पीने का सामान मिला वह साथ ले लिया और प्रत्येक ने अपनी योग्यता के अनुसार खाने का सामान ले लिया और फूट एवं मतभेद की सवारियों पर सवार हो गए और सही मार्ग छोड़कर अपने रूपों को परिवर्तित कर दिया यहां तक कि खजूर के वृक्ष को गुठली बना दिया और लअल मोती को पत्थर बना दिया और प्रीति भोज को श्राद्ध भोज कर दिया और नेकी को बुराई बना दिया और उत्तम घोड़े को गधा कर दिया और बाग़ को बंजर भूमि कर दिया और सरसता एवं सुबोधता के घर को हथैली की तरह ख़ाली कर दिया और आनंद तथा आराम से दूर फेंक दिया। उनके बाग़ शेष न रहे और न उनका कुआं और न उनके हरे-भरे घास के मैदान

وابعد من التلذذ والراحة و ما بقيت حدائقها ولا ركيتها ولا
مروجها ولا نضرتها و ما برح يمطر عليها مطر الشدائد
وتتلقاها يد النوائب بالحصائد حتّٰى رمٰى متاعها بالكساد وبدل
صلاحها بالفساد فاصبحت دارها كالمنهوبين كانّ اللص ابلطها
او الغريم قعطها و كسح بيتها وخلى سفطها فصارت كالمعترين
وانت سمعت ان العربيّة نزلت فى بدو الفطرة و جاء ت من
حضرة الاحدية ثم اذا تجرم ذٰلك القرن فطرٰى على اذيالها الدرن
فالعبرية وغيرها كوسخ العربية وفُضلة هذه المائدة والعربية
اوّل درٍّ لارضاع الفطرة الانسانية و اول خرسة لتغذية ام البريّة
من خير المطعمين واليه اشار معطى القياس والحواس ودافع

और न उनकी ताज़गी और कठिनाइयों की वर्षा भाषाओं पर बरसने लगी और दुर्घटनाओं ने उन्हें नष्ट कर दिया यहां तक कि रिवाज न होने के कारण उनके माल की तबाही हो गई और उसकी योग्यता दोष में परिवर्तित हो गई। तो उन घरों का हाल ऐसा हो गया कि जैसे चोर ने उन्हें लूट लिया और कुछ भी न छोड़ा या कर्ज़ देने वाले ने उनकी सख़्ती से गिरफ़्त की और उनके घर को ख़ाली कर दिया और उनकी बस्ती में कुछ भी न छोड़ा तो वे मुहताजों की तरह हो गए। और तू सुन चुका है कि अरबी भाषा प्रारंभिक काल में उतरी है फिर जब वह युग गुज़र गया तो उसके दामनों पर मैल चढ़ गया। अत: इबरी तथा अन्य भाषाएं अरबी का मैल हैं और उसी माइदा (दस्तरख़्वान) का बचा हुआ हैं और अरबी वह पहला दूध है जो मानव-प्रकृति को पिलाया गया और वह पहली अच्छवानी है जो सृष्टि की मां को खिलाई गई और इसी की ओर उस अस्तित्व ने संकेत किया है जिसने अनुमान और इन्द्रियों को पैदा किया और जिसने शैतान के भ्रमों का निवारण किया। जो पहला घर अर्थात् बैतुल्लाह वही है जो मक्का में है, बरकत वाला और समस्त लोकों के मार्ग-दर्शन के लिए। तो इसमें इस बात की ओर संकेत है कि अरबी समस्त भाषाओं से आगे निकल गई और समस्त

وساوس الخناس۔ اِنَّ اَوَّلَ بَيْتٍ وُّضِعَ لِلنَّاسِ لَلَّذِیْ بِبَکَّةَ مُبٰرَکًا
وَّهُدًی لِّلْعٰلَمِیْنَ فاومٰی الی ان العربیة سبقت الالسنة واحاطت
الامکنة وهی اول غذاء للناطقین فان البیت لا یخلوا من مجمع
الناس والمجمع یحتاج الی الکلام لدفع الحوائج والاستیناس۔
فان المعاشرة موقوفة علی الفهم والتفهیم کمالا یخفی علی الزکی
الفهیم و کذالك قوله تعالی ’وَاِذْ بَوَّاْنَا لِاِبْرٰهِیْمَ مَکَانَ الْبَیْتِ‘
دلیل علی کون مکة اول العمارات فلا تسکت کالمَیِّت و کن
من المتیقظین فحاصل المقالات ان مکة کانت اول العمارات
ثم خربت من الحادثات وسیل الاٰفات۔ فلزم ذلك البیان۔ ان
العربیة کانت اول کل ما کان و علمها اللّٰه اٰدم و کمل بها الانسان۔

मकानों को घेरे हुए है और वह बोलने वालों का प्रथम भोजन है क्योंकि घर लोगों के समूह से ख़ाली नहीं होता और समूह आवश्यकता पूर्ति तथा परस्पर प्रेम पैदा करने के लिए वाणी का मुहताज होता है क्योंकि एक स्थान पर मिल-जुल कर रहना समझने एवं समझाने पर निर्भर है जैसा कि प्रवीण और विवेकवान व्यक्ति पर छुपा नहीं। और इसी प्रकार ख़ुदा तआला का यह कथन कि "याद कर कि जब हमने इब्राहीम को दोबारा बनाने के लिए वह स्थान दिखाया जहां प्रारंभ में बैतुल्लाह था" (अलहज- 27) यह कथन स्पष्ट बता रहा है कि मक्का (ख़ाना काबा) संसार में पहली इमारत है।☆ अत: मुर्दे की तरह चुप मत हो जा बल्कि जागने वालों की तरह हो। सारांश यह कि मक्का संसार में पहली इमारत थी। फिर दुर्घटनाओं और आपदाओं की बाढ़ से ख़राब हो गया। अत: इस वर्णन से यह निश्चित हुआ कि प्रत्येक भाषा के अस्तित्व से पहले अरबी भाषा थी। और ख़ुदा ने आदम को वही भाषा सिखाई थी और उसी के साथ मनुष्य को पूर्ण किया गया। फिर यह भाषा अक्षरांतरित और परिवर्तित की गई और वे नूरानी बातें

☆ नोट :- जबकि खाना काबा समस्त संसार के लिए मार्गदर्शन का माध्यम हुआ तो इसमें स्पष्ट संकेत है कि वह ऐसे केन्द्र बिन्दु पर स्थित है जिसकी भाषा समस्त संसार की भाषाओं से समानता

ثم حرفت هٰذه اللغت الاصلية ومسخت الكلمات النورانية و فات النظام الكامل الموزون وضاع الدرّ المكنون وخلف من بعدهم خلف تباعدوا عن العربية ومسخوها وبدلوها حتى جعلوها كالالسنة الجديدة وما بقى الا قليل يتكلمون بها من بعض الاٰدميّين والاٰخرون حرفوا كلمها عن مواضعها وبعّدوا جواهرها عن معادنها واماكنها فصارت السنة جديدة فى اعين الغافلين ونضى منها خلعة حللها النفيسة وجعلت عارى الجلدة بادى العورة تبذء ها اعين الناظرين فلاجل ذٰلك تراها ساقطة عن النظام والقواعد الطبعية ومتفرقة غير منتظمة كخشب الفلا المتباعدة وتشاهد انها تائهةٌ لا ذرا لها ولا دار ولا سكك

विकृत की गईं और ऐसे व्यवस्था समाप्त हो गई। और छुपा हुआ मोती नष्ट हो गया और बाद में ऐसे लोग आए जो अरबी से दूर जा पड़े और अरबी भाषा को विकृत कर दिया और बदल डाला, यहां तक कि उन भाषाओं को नवीन भाषाओं की तरह कर दिया और अरबी थोड़ी रह गई जिसे पृथ्वी पर दूसरे आदमी बोलते थे और दूसरे लोगों ने कुल अरबी शब्दों को उसके स्थान से बदल डाला और उसके जौहर को उनकी खानों और स्थानों से दूर डाल दिया। इसलिए वे भाषाएं लोगों की नज़र में दिखाई नहीं दीं और उत्तम शैलियों का लिबास उनसे उतारा गया और वे नंगी खाल वाली और पूर्णत: नंगी की गईं जिन को देख कर नज़रें घृणा करती हैं। इसी कारण तू इन भाषाओं को देखता है कि वे व्यवस्था से गिरी हुई और स्वभाविक नियमों से रिक्त और अस्त-व्यस्त जंगलों की लड़कियों की तरह असंगठित तथा एक दूसरे से दूर पड़ी हैं। और तू देखता है कि वे व्यर्थ घूमने वाली हैं। न उनका कोई घर, न पड़ोसी और तू यह भी देखता है कि उनके मुफ़रद और उनकी नज़र में परस्पर कोई संबंध शेष नहीं रहा और वे ऐसी नंगी हैं कि उनका दोष और दाग़ खुल गया और यह इसलिए हुआ कि व्यवस्था नष्ट

रखती है और यही 'समस्त भाषाओं की जननी' होने की हकीक़त है। इसी से।

و لا جوار وترى ان مفرداتها متبدّدة لا انساب بينها وعارية ابدت وصُمتها وشينها و ذالك بما ضاع النظام و ما بقى القوام ورعتها الانعام فترٰی كانها ارض بذيّة او موماة مخوفة مجنّة تبذء ها عين المحقّقين و ما حسن الاٰن شانها و ما ابدء صبيانها ولكن الظالمين يخدعون الجاهلين اضاعت نسبًا متماثلة واقدامًا متشابهة فصارت كاناسٍ متفرقة الاراءٍ او اوباش مختلفة الاهواء متغائرين غير متحدين فكانّ بعضها علٰى رباوة متخصرًا بهراوة وبعضها فى وهاد ساقطا كجماد و بعضها فقدت اسارير وجه التسمية كانه اغمى عليها او اخذتها مرض السكتة او كانت من المحقّوين وبعضها بدا كريه الشكل كثير الاختلال كانه

हो गई और प्रभुत्त्व शेष न रहा और अज्ञानियों ने भाषाओं को बिगाड़ दिया। और तू देखता है कि मानो वह ऐसी भूमि है जिसमें कोई हरियाली इत्यादि नहीं और ऐसा भयानक जंगल है जिसमें जिन्न रहते हैं जिससे अन्वेषकों की आंखे घृणा करती हैं और अब उनकी हालत कुछ अच्छी नहीं रह गई और उनके बच्चों ने गिर जाने के बाद फिर दांत नहीं निकाले परन्तु अत्याचारी लोग मूर्खों को धोखा देते हैं बल्कि उन भाषाओं ने समान कुल को बिगाड़ दिया समरूप वंश को नष्ट कर दिया। और ऐसा ही समान रूप से अग्रसर होने को भी। तो वे भाषाएं ऐसी हो गईं जैसे कि विभिन्न मतों के लोग होते हैं या जैसे लम्पट जो विभिन्न अभिलाषाएं रखते हैं जिनकी एक दूसरे के विपरीत इच्छा होती है तो मानो कुछ उनके एक टीले पर हैं एक डंडे के साथ अपनी क़मर को सहारा दिए हुए और कुछ गढ़े में पड़े हुए हैं जैसे बेजान (निष्प्राण) और कुछ नामकरण के निशानों को खो बैठे हैं मानो उनको बेहोशी पड़ी है या उन्हें मिर्गी का रोग हो गया या पेट-दर्द ने पकड़ा तथा कुछ बुरी सूरत के साथ प्रकट हुए, रूप बिगड़ गया जैसे उन्हें बच्चों की तरह चेचक निकल आई हो यहां तक कि देखने वालों ने उन से घृणा की तथा कुछ ने चादर से अपना मुंह ढक लिया और अपने हुलिए को शर्म

ابدى كالاطفال حتى بذء تها اعين الناظرين و البعض لفع وجهه
بر داءٍ و نكّر شخصه لحياءٍ و البعض الاُخر صبّغ الاطمار و دلّس
و اُرى كانه تطلّس و منها الفاظ بقيت علىٰ صورها الاصلية و ما
غيّر وجهها حرّ هواجر الغربة و ما زلزل اقدامها اعصار التفرقة
بل بقى لها نشر تنم نفحاته و ترشد الىٰ روض الحق فوحاته و تُعرف
بتارّج عُرفها و مناعت غرفها و تصبى القلوب كجميل خدين
بيد انّها اخرجت من المنازل المقرّرة و بعدت من الاوطان
الموروثية و بوعدت من الاتراب و هيل عليها الزوايد كهيل
التراب و اخفيت كالميّتين بل دُفنت كالموء ودفما مادها احد
كالودود ثم رُدّ عليها عهد تذكار الوطن و الحنين الى العطن
فاستعدت لتقويض خيام الغيبة و اسرجت جواد الاوبة بعد ما

के मारे परिवर्तित कर लिया तथा कुछ ने अपने कपड़े रंग लिए और धोखा दिया और प्रकट किया कि जैसे उसने तीलसान (अरबी चादर) पहना है और कुछ ऐसे हैं जो अपनी असली सूरतों पर शेष रहे और परदेश की धूप और दोपहर की गर्मी ने उनके चेहरे को परिवर्तित नहीं किया और आपसी फूट की तेज़ हवा ने उनके क़दमों को नहीं हिलाया बल्कि उनकी एक सुगंध शेष रह गई जिसकी लहरें गुप्त भेद को प्रकट करती रही हैं और जिनका महकना सत्य के बाग़ की ख़बर दे रहा है और अपनी सुगंध की महक से पहचानी जाती हैं और अपनी खिड़कियों की बुलन्दी से देखी जाती हैं। और सुन्दर मनुष्य की तरह दिल को आकर्षित करती हैं। हां इतना है कि वे अपनी निर्धारित मंज़िलों से निकाले गए और अपने विरासत में मिले स्थानों से दूर किए गए और अपने समआयु वालों से अलग किए गए और उन पर फ़ालतू चीज़ें डाली गईं जैसा कि मिट्टी डाली जाती है और वे मुर्दों की तरह छुपाए गए अपितु वे जीवित गाड़े जाने वाले मनुष्य के समान दफ़्न किए गए तो किसी ने दोस्त की तरह उन्हें खाना न खिलाया। फिर उन पर देश को याद करने का युग रोका गया और देश-प्रेम पैदा हो गया

كانت كالامعة و كانت كرفاقٍ مستعدّين غير انّها كانت محتاجة الٰى رجل يؤمّها فى المسير وما كان سبيل من دون استصحاب الخفير فاتيناها واخذناها كاخذ الوارث متاع الميراث وبعثناها من الاجداث بعد ما سمع نعيها من الزمن النّثاث فهى بعد امدٍ رأَتْ كناسها و وافت اناسها ونقلت الٰى قصرها بعد ما حصلها الشدائد تحت اَسْرها و كانها كانت كالف يُفقد و يسترجع له بعد مناحة تُعقد فاخرجناها كنعش الميت او الغلام الاٰبق من البيت او كطيب الاعراق اللاحق بالفساق او النسيب المهجور من الاقارب او الابن الغائب الهارب او اطفال منغمسين فمنها ما لم ير انثلام حبّة فى زمن فُرقةٍ متطاولة وازمنة بعيدة مخوفةٍ و قفل كما سافر بصحة وسلامة وصلاح وعافية و منها ما غيرها

तो वे परदेस के तंबुओं के उखाड़ने के लिए खड़े हो गए और वापसी के घोड़े पर जीनें कस लीं। बाद इसके कि वे एक हरजाई आदमी की तरह थे और सहयात्री मित्रों की तरह तैयार हो गए परन्तु केवल इतनी बात थी कि वे ऐसे व्यक्ति के मुहताज थे जो मार्ग में उनका पेशवा हो और पथ-प्रदर्शक के अतिरिक्त अन्य कोई मार्ग नहीं था। तो हम उनके पास पहुंच गए और हमने उन्हें यूं ले लिया जैसा कि कोई अपनी विरासत का माल ले लेता है। और हमने उन्हें क़ब्रों में से उठाया। इसके बाद जो ख़बर देने वाले समय ने उनकी मौत की ख़बर दी अत: एक युग के बाद उन्होंने अपना घर देखा और अपने लोगों से मिले और अपने महल की ओर आए बाद इसके कि संकटों ने उन्हें अपनी क़ैद में कर दिया था तो मानो वे उस दोस्त की तरह थे जो गुमशुदा हो जाए और शोक सभा के बाद उस पर इन्ना लिल्लाह कहा जाए तो हमने उन्हें मुर्दे के शव की तरह निकाला या उस दास के समान पकड़ा जो घर से भाग गया हो या उस सभ्य कुलीन की तरह उनको वापस लिया जो दुष्कर्मियों से जा मिला हो या उस कुलीन की तरह हम ने उन को ले लिया जो अपने परिजनों से दूर हो गया हो या उस

حر السقام حتی بلغ الٰی الاخترام وصارت كالجنائز بعد ما كانت من اهل الجوائز وظهرت بوجه مسنون بعد ما كانت كدُرٍّ مكنونٍ و ذهب حُسنها و بهائها و غاب نورها وضيائها۔ وتراءت كشيخ مسلوب الطاقة بعد ما كانت كغيد مليح الرشاقة۔ او كظليع لذيذ السياقة۔ او كجمازة لا يلحقها العناء۔ ولا تواهقها وجناء۔ ولا يخالف هذا البيان الا الذی جهل الحقيقة اومان۔ فلا شك ان الحق ابلج۔ والباطل لجلج۔ وشن علی الباطل عسكر الحق واليقين۔ هذا شان مفردات العربية واما مركباتها فهی ارفع شانًا عند اهل البصيرة۔ فان المسك واللّؤلؤ اذا خُلطا لغرض من الاغراض فلا شك ان هذا المركب اشدوا قوی لدفع

बेटे की तरह जो खो गया हो और भाग गया हो या उन बच्चों की तरह जो डूब गए हों। कुछ उनमें से ऐसे हैं जिन्होंने जुदाई के समय में एक दाने की हानि नहीं उठाई और स्वास्थ्य और सलामती के साथ अपने देश में लौट आए तथा कुछ शब्द ऐसे हैं जिनको रोग ने परिवर्तित कर दिया यहां तक कि उन्मूलन तक नौबत पहुंचा दी और जनाज़ों की तरह हो गए। इसके बाद जो दानी एवं उपकारी थे और लम्बे से मुंह निकल आए। इसके बाद जो मोती की तरह थे उनकी सुन्दरता और ख़ूबी सब जाती रही और समस्त नूर गुम हो गया और वे उस बूढ़े की तरह निकल आए जिसकी सब शक्ति जाती रही। जबकि इससे पूर्व वे छरहरी और सुडौल औरतों की तरह थे और उस घोड़े की तरह थे जिसकी चाल बहुत अच्छी हो या उस तीव्रगामी ऊंटनी की तरह जिसे थकन का कष्ट न पहुंच सके और इस वर्णन का उस व्यक्ति के अतिरिक्त कोई विरोधी न होगा जो वास्तविकता से अनभिज्ञ और झूठा हो। अत: कुछ सन्देह नहीं कि सच रोशन हो गया और झूठ गुम हो गया और झूठ पर सत्य और विश्वास की सेना टूट पड़ी। यह तो अरबी के मुफ़रदों की शान है परन्तु उसके मिश्रित शब्द तो इससे भी बढ़ कर प्रतिभाशालियों

الامراض وانت تعلم ان مركبات النبات قد تحدث فيها كيفية خارقة للعادات نافعة لكثير من الاٰفات۔ فكيف تركيب مفردات قد على شانها۔ واشرق بُرهانها واعجب الخلق لمعانها فانها نورٌ علٰى نورٍ۔ ومفتاح لسرّ مستور واٰية عظيمة للمسترشدين والسرّ فى عظمته مركبات العربية انها ركّبت من المفردات المباركة التى توجد فيها غزارة المادة والنظام الكامل على سبيل الحكمة فتولد فى مركباتها معانى كثيرة بتأثير المفردات ثم بادخال اللام والتنوينات وبكشحٍ مخصر من لطائف الترتيبات وامّا لغات اُخرٰى والسنة شتّٰى فستعلم عجرها وبجرها وسنبدى لك حصاتها وحجرها وندعوا الى الحق قومًا منصفين انها اَلسنة

के नज़दीक बुलंद शान रखते हैं क्योंकि कस्तूरी और मोती जब किसी उद्देश्य से मिलाए जाएं तो कुछ सन्देह नहीं कि यह मिश्रण रोग-निवारण के लिए अत्यन्त शक्तिवर्धक होगा और तू जानता है कि कभी वनस्पतियों के मिश्रणों में कोई ऐसी विलक्षण स्थिति पैदा हो जाती है जो बहुत सी आपदाओं में लाभ पहुंचाती है फिर उन मुफ़रदों की तरकीब अद्‌भुत क्यों न हो जिनकी शान बुलन्द और जिन का प्रमाण रौशन है। और जिन की चमक ने लोगों को आश्चर्य में डाल दिया क्योंकि वह तरकीब सोने पे सुहागा है गुप्त रहस्य के लिए कुंजी है और हिदायत मांगने वालों के लिए बड़ा निशान है। और अरबी के मिश्रण का महान होना इस कारण है कि बरकत वाले मुफ़रदों से उनकी तरकीब है वे मुफ़रद जिनमें प्रचुरता से मवाद पाए जाते हैं और हिकमत से भरपूर व्यवस्था पाई जाती है। इसलिए उनके मिश्रण में मुफ़रदों के प्रभाव से बहुत से अर्थ पैदा होते हैं। फिर अलिफ़-लाम, तन्वीन और नाना प्रकार के क्रम के लिए नए-नए अर्थ निकलते हैं परन्तु दूसरी भाषाएं और विभिन्न बोलियां यह स्थान नहीं रखतीं और शीघ्र ही तू इसकी वास्तविका को जान लेगा और हम शीघ्र ही उन के कंकड़ और पत्थर तुझ पर प्रकट कर देंगे ताकि हम न्यायप्रिय लोगों को सच्चाई की ओर बुलाएं। वे भाषाएं

ما اعطی لها بیان ولا لمعان الا غمغمة ودُخان۔

ولذالك اردنا النظهر علٰى كل مستطلع دخيلة امرها وحقيقة سرّها و كسوف قمرها لتستبين تصلف الكاذبين۔ فان كنتم لا تؤمنون ببراعة العربية وعزازتها ولا تقرون بعظمة جمازتها فارونى فى لسانكم مثل كمالاتها ومفردات كمفرداتها ومركبات كمركباتها ومعارف كمعارفها ونكاتها ان كنتم صٰدقين۔

ولا حيٰوة بعد الخزى يا معشر الاعداء فقوموا ان كانت ذرة من الحياء او ابخعوا فى غيابة الخوقاء و موتوا كالمتندّمين وان كنتم تنهضون للمقابلة فانى مجيزكم خمسة اٰلاف من الدراهم المروّجة بعد ان تكملوا شرائط هٰذه الدعوة ويشهد حَكمان بالحلف عند الشهادة ليتمّ حجّتى عند النحارير ولا يبق ندحة المعاذير وهذا

कुछ ऐसी भाषाएं हैं कि उनको वर्णन और चमक नहीं दी गई सिवाए नाक से बोलना और धुआं।

तो इसलिए हमने इरादा किया कि प्रत्येक जिज्ञासु पर उनकी आन्तरिक सच्चाई प्रकट कर दें और उनके रहस्य की वास्तविकता स्पष्ट कर दें और उनके चन्द्रमा का ग्रहण वर्णन कर दें ताकि झूठों की शेख़ी खुल जाए। अत: यदि तुम अरबी की महानता और मान्यता पर ईमान नहीं लाते और उसकी तीव्रगामी ऊंटनी की महानता के तुम क़ाइल (समर्थक) नहीं होते तो तुम उसकी ख़ूबियों का नमूना मुझे अपनी भाषा में दिखाओ और उसके मुफ़रदों के मुक़ाबले पर मुफ़रद और मिश्रित शब्दों के मुक़ाबले पर मिश्रित और मआरिफ़ (अध्यात्म) के मुक़ाबले पर मआरिफ़ (अध्यात्म) मुझे दिखाओ यदि तुम सच्चे हो।

हे दुश्मनो! अपमान के बाद क्या जीवन है। अत: यदि तनिक भी शर्म है तो उठो या किसी गहरे कुएं में डूब कर मर जाओ और लज्जित हुए लोगों की तरह मर जाओ और यदि मुक़ाबले के लिए उठते हो तो मैं तुम को पुरस्कार स्वरूप पांच हज़ार रुपये दूंगा बशर्ते कि तुम शर्तों के अनुसार उत्तर दो और

علیّ غرامة لو كنتُ من الكاذبين فقومُوا الاخذ هٰذه الصلة او لحماية لغاتكم الناقصة ان كنتم حامين و اجمعوا عين شريطتى اين تشاءون ان كنتم ترتابون او تخافون و انى اقبل كلما تطلبون و اكتب كلما تستملئون و اُبضع فى كلّ ما تسئلون لعلكم تطمئنون بها و لعلكم تستيقنون و افعل كلما تأمرون لو امرتم منصفين و ما اريد ان اشق عليكم و ما كنت من المترعين و ستجدونى انشاء الله من المقسطين و انى ارٰى انّ الالسنة ستزم و الوساوس تجذع و الحجة تتم و يفر الاعداء مشفقين مما فى ايدينا و مرتعدين و انا لملاقوهم بعون الله ذى الجلال و لو فرّوا علٰى لاحقة الآطال ثم مفرّ و هم مُحجرين و لا مناص لهم و لو نزوا فى السكاك الا بعد سواد الوجه و الاحليلاك و اذا اشرعنا الرمح علٰى العدا و ارينا المدٰى و عبطنا افراس الردا۔

दो मध्यस्थ सौगंध खाकर गवाही दें ताकि बुद्धिमानों के निकट मेरा समझाने का प्रयास पूरा हो जाए और किसी बहाने की कोई गुंजायश न रहे और यह मुझ पर जुर्माना है यदि मैं झूठा हूँ। अत: इस ईनाम के लेने के लिए खड़े हो जाओ या अपनी भाषाओं की सहायता के लिए कुछ साहस करो और मेरी शर्त का रुपया जहां चाहो जमा करा लो यदि कुछ सन्देह हो या डरते हो और जो तुम चाहो मैं सब स्वीकार करूंगा और जो लिखवाओ मैं लिखूंगा और जो तुम पूछो मैं सन्तोषजनक उत्तर दूंगा ताकि तुम सन्तुष्ट हो जाओ और ताकि तुम विश्वास करो और जो कुछ तुम कहो मैं करूंगा यदि तुम न्यायपूर्वक आदेश दो और मैं नहीं चाहता कि तुम पर कुछ कष्ट डालूं। और मैं उन में से नहीं हूँ जो बुराई के साथ किसी पर दौड़ते हैं और इन्शाअल्लाह मुझे न्याय-प्रिय पाओगे। और मैं देखता हूँ कि शीघ्र ही ज़बानें बन्द हो जाएंगी और भ्रम क़ैद में डाले जाएंगे और समझाने का अन्तिम प्रयास पूरा हो जाएगा और शत्रु हमारे दस्तावेज़ों को देखकर भाग जाएंगे, कांपते हुए भागेंगे और हम ख़ुदा की कृपा से पीछा करके उनको जा मिलेंगे और उनके लिए इन्कार का स्थान नहीं। यद्यपि

فترٰی انّهم یبدون نواجذهم غیر ضاحکین۔ وما کتبت من عندی ولکن الهمنی ربّی و ایّدنی فی امری فتاقت نفسی الی ان افض ختم هذا السر و اُری الخلق ما ارانی ذو الفضل والنصر و انه ذو الفضل المبین۔

وحاصل ما کتبنا فی هذه المقدمة ان العربیة اُمّ الاَلْسنة و وحی اللّٰه ذی المجد والعزّة و غیرها کرشٍّ من هٰذه المطرة القاشرة و ما لها سبدٌ ولا لبدٌ الا من هٰذه اللهجة وان العربیة تقسّم الامور وضعًا کما قسمها اللّٰه طبعًا وفی ذٰلك اٰیات للمتوسّمین وانّها تجری فی کل سکك بهٰذا الاشتراط و تتجافٰی عن الاشتطاط و نزهها اللّٰه عن ضیق الربع۔ و وسع مربعها لاضیاف الطبع فدعت ضیوف

वे पतली कमर वाले घोड़ों पर दौड़े हों। फिर हम ज़ोर देंगे ताकि वे भागें यहां तक कि भागते-भागते बिल में जा घुसें और जब हमने भाले को दुश्मनों पर हिलाया और छुरियां दिखाईं और मौत के घोड़ों को सरपट दौड़ाया तो तू उन्हें देखेगा कि खिस्यानी हँसी हस रहे हैं और मैंने अपनी ओर से नहीं लिखा अपितु मेरे ख़ुदा ने मुझे इल्हाम किया और मेरे मामले में मेरा समर्थन किया। अत: मेरे नफ़्स ने इच्छा की कि मैं इस रहस्य की मुहर खोलूं और लोगों को वे मआरिफ़ (अध्यात्म) दिखाऊं जो ख़ुदा तआला ने मुझे दिखाए और वह खुला-खुला फ़ज़्ल करने वाला है।

और जो कुछ हमने लिखा है उसका सारांश यह है कि अरबी समस्त भाषाओं की माँ है और ख़ुदा तआला की वह्यी है जो सम्माननीय और प्रशंसनीय है और अन्य भाषाएं उस बरकत वाली वर्षा में से कुछ बूंदे हैं और उनकी कमी और अधिकता सब इसी भाषा में से है और अरबी भाषा बनावट के अनुसार मामलों को इस प्रकार से विभाजित करती है जैसा कि अल्लाह तआला ने उनमें स्वभाविक विभाजन किया है और इसमें प्रतिभावान लोगों के लिए निशान है। और वह प्रत्येक कूचे में इसी शर्त से चलती है और सीमा से बाहर निकलने से बचती

الفطرة الى القُرٰى و مطائب ما تُشتهٰى و اثبتت انها من المتمولين
المُعطِين فلا تمل الٰى زبون و لا تُغض على صفقةٍ مغبون اتستبدل
الذى هو ادنٰى بالذى هو خير فافكر ساعة يا عار العير و اطلب سبل
الموفقين و اعلم انّها خفير الى العلوم النخب من غير الوجٰى و التعب
فمن قصدها فقد ذهب الى الذهب و من باعدها بالهجر فقد رضى
بايثار الهجر و هوى فى هوة السافلين و انّها غانية زيّنت نفسها
بكمال النظام و تجلّت بالحسن التام و لكلسائل قامت بالاجابة
حتى ثبتت ثروتها و انجابت غشاوة الاسترابة و اعتقبت دواعى
الطبع و وسعت لها فناء الربع و حلّت بكل ماحل تقسيم طبعىٌّ
بل حمله كما يحمل اوزارًا مهرى و طابقت حتى اعجبت الناظرين

है। और ख़ुदा तआला ने उसके घर को तंग होने से पवित्र कर दिया है और इसके घर को रुचिकरों के लिए विशाल कर दिया है तो उसने नेचुरल मेहमानों को दावत के लिए बुलाया और उत्तम तथा रुचिकर खाने तैयार करके उन्हें बुलाया और सिद्ध कर दिया कि वह धनवानों और देने वालों में से है। अत: तू किसी पराजित की ओर न झुक और घाटे के सौदे पर आंखें बन्द न कर। क्या तू अच्छे और उत्तम को छोड़कर निम्न को ग्रहण कर लेगा। तो कुछ थोड़ी देर विचार कर हे गधे के नंगे स्थान! और सामर्थ्य प्राप्त लोगों का मार्ग तलाश कर और जान ले कि वह प्रतिष्ठित ज्ञानों का पथ-प्रदर्शक है बिना इस बात के कि कुछ थकान या उदासी हो तो जिसने उसका इरादा किया वह सोने (स्वर्ण) की ओर गया और जो व्यक्ति पृथक होकर उस से दूर हो गया वह बकवास पर राज़ी हो गया और नीचे रहने वालों के गढ़े में गिर गया। और अरबी अपने सौन्दर्य के साथ अन्य की आवश्यकता से निश्पृहम है और पूर्ण व्यवस्था के साथ उसने अपने नफ़्स को सजाया है और पूर्ण सुन्दरता के साथ उसने चमकार दिखाई है। और वह प्रत्येक प्रश्न करने वाले का प्रश्न स्वीकार करने के लिए खड़ी हो गई यहां तक कि उसकी धनाढ्यता सिद्ध हो गई और सन्देह दूर हो गया वह स्वभाव और

فهی شجرة مبارکة اغصانها کالبرید و اصولها کالوصید و موادها کالیقطین۔ و انا لا نسلم ان کمال نظامها یوجد فی غیرها۔ او یبلغها لسان فی سیرها نعم نسلم ان کل لغت من اللغات تشتمل علی قدر من المفردات لکنّها ناقصة کالبیوت المنهدمة الخربة او کالقفة التی یئس اهلها من الزهر و الثمرة۔ و لا ترٰی دهوم المفردات فی تلک الالسن المحارفة المقلوبة الّا قلیلا غیر کافٍ للمهمات المطلوبة و انت سمعت انها کانت عربیة فی اوائل الازمنة۔ ثم مسخت فبدت باقبح الصورة فلذٰلک تراها مُنْتنةً کالجیفة۔ و خاوی الوفاض کاهل الذل و الهزیمة و تجد انها السنة بادیة الذلة۔ لیس بیدها غزارة المادة و لا دولة الاشتقاق و وجه التسمیة و لصقت الفاظها بمعانیها کقتین و انها بتلادها لا توفی النظام و لا تکمل الکلام و ما کان لاهلها ان

प्रकृति के पीछे-पीछे चल रही है और उनके लिए अपने घर को बहुत विशाल बना रखा है और प्रत्येक ऐसे स्थान में उतरी जहां स्वभाविक विभाजन उतरा अपितु उसे ऐसे उठा लिया जैसे ऊंट बोझ को उठाता है और उस से ऐसी अनुकूलता हो गई कि देखने वाले को आश्चर्य में डाला। अतएव वह ऐसा वृक्ष है जिसकी शाखाएं कंघी किए हुए बाल की तरह हैं और उसके सिद्धान्त उस बूटे की तरह हैं जिसकी जड़ें परस्पर मिली हुई हों और हम इस बात को स्वीकार नहीं करेंगे कि उसकी व्यवस्था की ख़ूबी उसके अतिरिक्त किसी अन्य में भी पाई जाती है उसकी पूर्णता में कोई भाषा उसके बराबर है। हाँ हम इतना स्वीकार करते हैं कि भाषाओं में से प्रत्येक भाषा किसी सीमा तक मुफ़रदों पर आधारित है परन्तु वे भाषाएं ख़राब हो चुकी तथा ध्वस्त घरों की तरह दोषपूर्ण हैं या वे ऐसी हैं जैसे एक सड़ा-गला और सूखा वृक्ष जिसका मालिक उसके फल और फूल से निराश हो चुका। और तू मुफ़रदों की प्रचुरता को उन अशुभ भाषाओं में नहीं पाएगा। सिवाए थोड़ा सा जो अभीष्ट कार्यों के लिए अपर्याप्त है। और तू सुन चुका है कि वे भाषाएं प्रारंभिक काल में अरबी थीं फिर बिगड़

يكتبوا بها قصّةً او يملوا حكايةً مبسوطة بحيث ان تواغد القصص نظام المفردات وتقابل التقسيم الطبعى فى جميع الخطوات و انّ هذا حق وليس من الترهات ولاجله كتبنا فى العربية هذه العبارات و قدمنا هذه المقدمة كالكماة لنقطع عرق الخصومات و لعل العدا يتفكرون فى حللها او ييأتون بألسنها من مثلها ان كانوا صادقين و قد سمعتم ان مفرداتها تواضخ نقوش تقسيم الفطرة وتعطى كلما أعطى عند التقاسيم الطبعية و تصنع كل لفظ فى المواضع التى طلبتها الضرورة الداعية او اقتضتها الصفات الإلٰهية ولا تمشى كالتّائهين وترٰى فروق الكلمات كما ارت فروقها دواعى الضرورات وتظهر فى نظام المفردات كلما اظهر القسّام فى مرأة الواقعات فكذٰلك نطلب من المخاصمين وما قلنا هذا القول كصفير اللاعبين بل

कर एक अत्यन्त बुरे रूप में प्रकट हुईं। तो इसी कारण से तू उन्हें मुर्दा की तरह बदबूदार पाता है और उनके तूणीर (तरकश) को पराजित लोगों की तरह ख़ाली देखता है और तू उन भाषाओं को खुले-खुले अपमान में पाता है। उनके हाथ में शब्दकोषों की सामग्री का कोई भारी भण्डार नहीं और न एक शब्द से अन्य शब्द बनाने की दौलत तथा नाम रखने का कारण उनके पास है। और उनके शब्द उनके अर्थों को ऐसे चिमटे हैं जैसे चिचड़ी अर्थात् अर्थों का ख़ून पीते हैं और उन्हें शोभाविहीन और कमज़ोर करते हैं और अपने घर की पूंजी के साथ जो उसे विरासत में मिली है किसी क़िस्से की व्यवस्था को पूरा नहीं कर सकते और न किसी कलाम को पूरा बना सकते हैं और उन भाषाओं के ज्ञाताओं को यह सामर्थ्य नहीं कि उनके साथ कोई क़िस्सा लिखें या कोई विस्तृत वृत्तान्त लिखें इस प्रकार कि मुफ़रदों की व्यवस्था क़िस्सों के साथ कंधे से कंधा मिलती हुई चली जाए और प्रत्येक क़दम पर स्वभाविक विभाजन में मुक़ाबला करे और यह वर्णन सच है बेकार बातों में से नहीं है और इसके लिए हमने इन इबारतों को अरबी में लिखा है और इस मुक़द्दमः को बहादुर

ارينا كلها كالمحققين۔ واثبتنا ان العربية قد وقعت كرجل رحيب الباع خصيب الرباع متناسبة الاعضاء موزون الطباع مطّلعة علٰى ذات صدر الفطرة وحامل فوائدها كالمطيّة فانكنتم من خيل هٰذا الميدان او للسانكم كمثلها يدان فاتوا بها يامعشر اهل العدوان وحزب المتعصبين وان لم تفعلوا ولن تفعلوا فاتقوا اللّٰه الذى يخزى الكاذبين۔ والاٰن نكشف عليكم سر فروق الكلمات لعل اللّٰه يهديكم الٰى طرق الصواب والثبات او تكونون من المتفكرين۔ فاعلموا ان فروق الكلمات تتبع فروقا توجد فى الكائنات وكذالك قضٰى احسن الخالقين۔ وامّا الفروق التى توجد فى خلقة الكائنات وتترائٰى فى صحف الفطرة كالبديهيات فنكشف عليك نموذجًا منها فى خلقة الانسان لعلك تفهم الحقيقة كذوى العرفان او تكون من الطالبين

सिपाहियों की तरह आगे किया है। ताकि हम झगड़ों की जड़ काट दें ताकि हमारे विरोधी इन इबारतों की शैलियों पर विचार करें या यदि सच्चे हैं तो अपनी-अपनी भाषाओं में इन इबारतों का उदाहरण प्रस्तुत करें। और तुम सुन चुके हो कि अरबी के मुफ़रद स्वभाविक विभाजन के कंधे से कंधा मिलाते चले जाते हैं। और जो कुछ स्वभाविक विभाजन ने दिया वह सब माल देते हैं और प्रत्येक शब्द को ऐसे स्थान पर रखते हैं जिसे आने वाली आवश्यकता ने चाहा है या ख़ुदा की विशेषताओं ने उसे चाहा है और आवारा लोगों की तरह नहीं चलते और शब्दों के अन्तरों को वे ऐसे दिखाते हैं जैसा आवश्यकताओं के कारणों ने उन को दिखाया है और मुफ़रदों की व्यवस्था में वे समस्त बातें प्रकट करते हैं जो ख़ुदा तआला ने घटनाओं के दर्पण में व्यक्त की हैं अत: हम इन्हीं बातों का उदाहरण विरोधियों से मांगते हैं। और हमने इस कथन को खेलने वालों की सीटी की तरह नहीं कहा बल्कि हम ने इसे अन्वेषकों की तरह दिखाया है और सिद्ध कर दिया है कि अरबी उस मर्द की तरह है जो समृद्ध और बहुत मालदार हो और सुडौल शरीर तथा उचित प्रकृति वाला हो। अरबी भाषा प्रकृति के भेदों से अवगत है और उसके

فانظر ان الانسان اذا قُلِّب فی مراتب الخلقة و اُخرج الٰی حیز الفعل من القوة و اعطی صورًا فی المجالی الطبعیّة و قفّا بعضها بعضًا بالتمایز والتفرقة فجمعت ھٰھنا مدارج تقتضی لانفسها الاسماء فاعطتها العربیة و اکملت العطاء کالاسخیاء المتموّلین و تفصیله ان اللّٰه اذا اراد خلق الانسان فبدء خلقه من سلالة طین مطهر من الادران فلذٰلک سمّاه اٰدم عند الخطاب و فی الکتاب لما خلقه من التراب و لما جمع فیه فضائل العالمین و کذٰلک خمر فی طینه اُنسانِ اُنس ما خُلق منه وانس الخالق الرحمان کما یوجد اُنس الاُمّ والاب فی الصبیان فدعاه باسم الانسان و ھذا مبنیٌّ علی التثنیة من المنان لیدل لفظ الانسین علٰی کلتی الصفتین الی انقطاع الزمان و یکون من المتذکّرین ثم بدل قانون القدرة باذن اللّٰه ذی العزّة و الحکمة و خلق الانسان بعد تغیرات

अनुपम मोतियों के लिए यह सवारी की तरह है। यदि तुम इस मैदान के सवार हो या तुम्हारी भाषा को उसके अनुसार शक्ति है तो हे अत्याचारी लोगो अपनी भाषाओं को प्रस्तुत करो और यदि तुम न कर सको और कदापि न कर सकोगे तो उस ख़ुदा से डरो जो झूठों को अपमानित करता है। और अब हम तुम पर शब्दों के अन्तरों का रहस्य खोलते हैं ताकि शायद ख़ुदा तआला तुम्हें सीधा चलने और दृढ़ संकल्प रहने का मार्ग दिखा दे या तुम सोचने वाले बन जाओ। तो अब जान लो कि वाक्यों के अन्तर उन अन्तरों के अधीन हैं जो क़ायनात में पाए जाते हैं और इसी प्रकार अहसनुल ख़ालिकीन ने इरादा किया है परन्तु वे अन्तर जो क़ायनात की पैदायश में पाए जाते हैं और प्रकृति में स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं। तो हम तुझ पर उनका एक नमूना इन्सान की पैदायश के बारे में खोलते हैं ताकि तू उसे अध्यात्म ज्ञानियों की तरह समझ जाए या तू अभिलाषियों में से हो जाए। अत: तू देख कि जब इन्सान पैदायश की श्रेणियों में फेरा गया और हरक़त से शक्ति की ओर लाया गया और प्राकृतिक अवस्थाओं से भिन्न-भिन्न प्रकार के रूप दिया गया और पैदायश एक रूप से दूसरी ओर परिवर्तित की गई। और

فى اَرْحامِ اُمّهاتٍ۔ فسمى التغيّر الاُوْلٰى ماءً دافقًا و نُطْفة و الثّانى الذى يزداد فيه اثر الحيات علقة و الثالث الذى زاد الى قدر المضغ شدة وضاها فى قدره لقمة فسمى لهذا مضغة و الرابع الذى زاد من قدر اللقمة و مع ذٰلك بلغ الٰى مُنتهى الصلابة و اَودعها اللّٰه حِكمًا عظيمة خلقة و نظامًا فسمّاها عظاما بما بلغت العظمة و زادت شرفًا و كما و مقامًا و بما ركب بعضها بالعظام من رب العالمين۔ و الخامس اللحم الذى زاد عليها كالحُلّة و صار سبب كمال الحسن و الزينة فسمى لحمًا بما لُوْحِم بالعظام الصلبة و صاربها كذوى اللحمة و السادس خلق اٰخر و سمى نفسًا لنفاستها و لطافتها و سرائتها فى الاعضاء و عزّتها۔ و سمى جميعها باسم الجنين۔ فَتبارك اللّٰه اَحْسَنُ الخالقين۔ ثم اذا خرج الجنين من بطن الاُمّة۔ و تولّد باذن اللّٰه ذى القدرة فسمى

उनमें परस्पर भिन्नता और अन्तर हुआ तो यहां कई स्तर पैदा हुए जो अपने लिए (भिन्न-भिन्न) नाम चाहते थे। तो अरबी ने उनको उनके नाम प्रदान किये और अपने दान को पूर्ण किया जैसे दानी और धनवान लोगों का काम होता है। और इसका विवरण यह है कि जब ख़ुदा तआला ने इन्सान को पैदा करना चाहा तो उसको उस मिट्टी से पैदा किया जो पृथ्वी की सम्पूर्ण शक्तियों का इत्र था और मैलों से पवित्र था। उसका नाम सम्बोधन तथा पुस्तक में आदम रखा इसलिए कि उसे मिट्टी से पैदा किया और सारे लोकों की ख़ूबियां उस में भर दीं और उसकी प्रकृति में दो उन्स (प्रेम) रख दिए। एक तो उसी चीज़ का उन्स जिस से वह पैदा हुआ और दूसरा सृष्टा रहमान का उन्स, जैसे बच्चों में माँ-बाप का 'उन्स' पाया जाता है इसलिए उसका नाम 'इन्सान' रखा। यह संज्ञा द्विवचन है ताकि हमेशा के लिए इन दो 'उन्सों' का शब्द इन दो विशेषताओं को बताता रहे। फिर ख़ुदा तआला के इरादे से प्रकृति के नियम में यों परिवर्तन हुआ कि कई परिवर्तनों के पश्चात् मांओं के गर्भाशय के द्वारा उसकी पैदायश होने लगी। तो पहले परिवर्तन का नाम **माउन् दाफ़िक़ (उछलने वाला पानी)**

وليدا فی هذه اللهجة۔ ثم اذا صبا الیٰ ثدی الاُمّ للرضاع فسمی صبیّا و رضیعا الی مُدی الارضاع۔ ثم بعد الفطام سمی فطیما و قطیعا فی هذا اللسان ثم اذا دبّ و نما و ارٰی اکثر اٰثار الحیوان فسمی دارجًا فی ذٰلک الزمان ثم اذا بلغ طوله اربعة اشبار فهو رباعی عند اولی الابصار۔ و اذا بلغ خمسة فهو خماسی و اذا سقطت رواضعه فهو مثغور عند العرب۔ و اذا نبتت بعد السقوط فهو و مثغر عند ذوی الادب۔ و اذا تجاوز عشر سنین فهو مترعرع عند العربیین و اذا شارف الاحتلام و کرب الماء لیمطر الجهام فهو یافع و مراهق قد بلغ البلوغ التام و اذا احتلم و اجتمعت قوته و کملت طاقته فهو حَزْوَرٌ۔ ثم من الثلٰثین الی الاربعین شاب ففرح مسرور۔ ثم بعد ذٰلک کهل الی ان یستو فی الستین ثم بعد ذلک شیخ ثم خرف مفند و من المستضعفین۔

और वीर्य रखा और दूसरे का नाम जिसमें जीवन का लक्षण उन्नति करता है '**अलक़ा**' रखा और तीसरे का नाम जो सख़्ती में एक कौर के अनुमान के समान हुआ '**मुज़्गा**' रखा और चौथा परिवर्तन जो कठोरता और अनुमान में कौर से उन्नति कर गया और बड़ी-बड़ी हिकमतों पर उस की पैदायश की व्यवस्था आधारित हुई उसको '**इज़ाम**' (अस्थि) का नाम दिया गया। इसलिए वह श्रेष्ठता एवं सम्मान, महत्व और मुक़ाम में पराकाष्ठा को पहुंच गया और इसलिए भी कि हड्डियों से उसके कुछ हिस्से बने। और पांचवे का नाम '**लहम**' (मांस) हुआ। इसलिए कि लहम अरबी में एक चीज़ के पैबन्द और संलग्न होने को कहते हैं, जब वह चीज़ दूसरे से मिलती और पैबन्द करती है अत: मांस कपड़े की तरह शरीर से मिलता है और इसलिए भी कि मांस कठोर हड्डियों से मिलता है और उन्हें परस्पर मिलाता है और अपनी निकटता उनको प्रदान करता है। और छठे को '**ख़ल्क़ आख़र**' कहा और उसे पूर्ण स्वच्छता और अंगों में प्रवेश करने के कारण से **नफ़्स** भी कहा और फिर इस समस्त संग्रह का नाम जनीन (जन्म से पूर्व पूरा बच्चा) पड़ा। फिर जब जनीन माँ के

و كذالك بازاءٍ كل حصة عمر اسم علحدة فى عربى مبين و اذا مات فهو المتوفى الذى يختصم فى لفظه حزب الجاهلين۔ و كذلك كلما تحقق فى الانسان طبعا يوجد فى العربية وضعًا و كلما ترٰى فى الحس و العيان تجد بازائه لفظًا فى هذا اللسان و لا تجد نظيره فى العالمين۔ و أىُّ حجّةٍ اكبر من هٰذا لو كنتم مُبْصرين۔ فتامل تامل المنتقد۔ و انظر بالمصباح المتقد۔ و احلل محل المستبصرين۔ و ان كنت تقترح ان تسمع منى فى اشتراك الالسنة فكفاك لفظ الاُمّ و الاُمّة۔ فان هذا لفظ تشارك فيه اللسان الهندية و العربية۔ و كذٰلك اللسان الفارسية و الانكليزية۔ بل كلها كما تشهد التجربة الصحيحة فانظر كالمنقدين و قد ظهر من وجه التسمية۔ ان هذا اللفظ دخل فى الالسن الاعجمية من العربية فان التسمية بحقيقة لا تُوجد الّا

पेट से निकला तो उसका नाम '**वलीद**' (शिशु) हुआ। फिर जब दूध पीने को माँ के स्तन की ओर झुका तो '**सबी**' नाम हुआ और दूध पीने के दिनों तक '**रज़ी**' नाम हुआ फिर दूध छुड़ाने के बाद **फ़तीम और क़तीअ** हुआ फिर थोड़ा बड़ा हुआ तो **दारिज,** फिर जब चार बालिश्त का हुआ तो **रुबाई** और जो पांच का हुआ तो **ख़ुमासी** और जब दूध के दांत झड़ गए तो **मस्ग़ूर** और जो फिर उगे तो **मुसग़र** और जब दस वर्ष का हुआ तो **मुतरअरा** और जब व्यस्कता के निकट पहुंचा तो **याफ़िऊ** और **मुराहक़** और जब पूरी शक्ति और जवानी को पहुंचा तो **हज़वर** फिर तीस से चालीस वर्ष की आयु तक **शाब** फिर साठ वर्ष तक **कहलुन**। इसके बाद **शेख़** फिर **ख़र्फ़** फिर इसी प्रकार आयु के प्रत्येक भाग के लिए अरबी भाषा में अलग-अलग नाम है। और जब मरा तो **मुतवफ़्फ़ी** नाम हुआ और यह वही शब्द है जिसमें मूर्खों का गिरोह अब तक झगड़ रहा है। इसी प्रकार मनुष्य की हर स्वभाविक अवस्था के लिए एक शब्द बना होगा और प्रत्येक मौजूद तथा महसूस के लिए इसमें एक शब्द अवश्य है जिसका दूसरी भाषाओं में उदाहरण नहीं और जब इसका उदाहरण

فی ھٰذا اللسان و اما غیرہ فلا یخلوا من التصنع فی البیان۔ فان من شان التسمیۃ الحقیقیۃ التی ھی من حضرۃ العزۃ۔ ان لا تنفک بزمن من الازمنۃ الثٰلثۃ وتکون للمسمی کالعرض اللازم و ان تجایؤہ فی ھذہ النشأۃ ولا یفرض فرض فارض کونھا فی وقت من الامور المنفکۃ و لا تکون کالامور المستحدثۃ المصنوعۃ و لا توجد فیھا ریح التصنعات الانسیّۃ و یقرّ من استشف جوھرھا بانھا من رب العالمین۔ فخذ بیدیک ھٰذا المیزان۔ ثم اعرف بھا من صدق و مان ولا تتبع سبل المفترین وھٰذا اٰخر ما اردنا من ایراد المقدمۃ۔ و کتبناھا لِاِراۃ النظام فی الرسالۃ و قد وعیتَ ما قصصنا علیک من الادلّۃ ففکّر فیھا و اجتن ثمرۃ البراعۃ۔ و احکم بما اراک اللّٰہ و لا تکن کالمتجاھلین۔ و لا یختلج فی قلبک ان العربیۃ قد حقرت فی

कहीं नहीं तो इस से बढ़कर और क्या प्रमाण हो सकता है। बुद्धिमत्ता के दीपक लेकर ढूंढ़ो तथा विचार करो और यदि भाषाओं की समानता का उदाहरण पूछना चाहो तो शब्द उम्म और उम्म: प्रर्याप्त है। यह शब्द हिन्दी-अरबी, फ़ारसी, अंग्रेज़ी बल्कि सब भाषाओं में शामिल है और अनुभव इस पर गवाह है और इस नाम के रखने का कारण बताता है कि यह शब्द अरबी भाषा से अजमी भाषाओं में गया, क्योंकि नाम रखने का वास्तविक कारण इसी भाषा में है तथा औरों में बनावट और तकल्लुफ़ है। क्योंकि नाम रखने के वास्तविक कारण की शान यह है कि किसी युग में भी वह मुसम्मा से पृथक न हो और कभी भी कोई उस से उसको पृथक न कर सके और उसमें इन्सानी बनावट की गंध भी न पाई जाए और देखने सुनने वाला उसके बारे में पुकार उठे कि नि:सन्देह यह अल्लाह तआला की ओर से है। अत: इस तराज़ू से सच और झूठ को तोलो और मुफ़्तरी (झूठ गढ़ने वाले) के मार्ग पर न चलो। तो यही है जो हम ने इस मुक़द्दम: में लिखना चाहा और व्यवस्था के दिखाने के लिए यह सब लिखा। तुम सब कुछ सुन ही चुके हो अब इस से लाभ प्राप्त करो और ख़ुदा

اعین سُکّانِ هٰذه البلاد۔ وان جواهرها قد رمیت بالکساد فان هذا من فساد اهل الزمان وان قصوی بغیتهم طلب الصریف والعقیان وحُمادیٰ همتهم هوی الموائد والجفان وانهم من المفتونین وانی لما اردت ان انضد جواهر الکلام واسلکها فی سمط الانتظام۔ القی فی روعی ان اکتبها فی هٰذه اللهجة۔ ولا اخفی بروقها فی البُرقة الهندیة۔ وأسرح النواظر فی النواضر الاصلیة۔

★ ★ ★

से विवेक मांगो और उसी के साथ फ़ैसला करो और यदि अरबी भाषा की इस देश के लोगों ने क़द्र नहीं की तो इसकी क्या परवाह है। इसलिए कि इन बिगड़ते हुए स्वभाव के लोगों का परम उद्देश्य चांदी, सोने और खाने-पीने के बरतनों के अतिरिक्त और कुछ नहीं और जब मैंने इन मोतियों को व्यवस्था के तार में पिरोना चाहा तो मेरे हृदय में डाला गया कि अरबी भाषा में ही इन्हें क्रमबद्ध करूँ और हिन्दी भाषा में लिखकर उनकी चमक-दमक को तबाह न करूँ और मैंने चाहा कि आंखों के चौपायों के लिए वास्तविक चरागाह प्रस्तुत करूँ जो अरबी है।

★ ★ ★

पारिभाषिक शब्दावली

अतराद मवाद- मूल धातु, जिसे अरबी भाषा में मस्दर भी कहते हैं।

अर्श- सिंहासन। वह स्थान जहाँ पर अल्लाह का अधिष्ठान है।

अह्ले किताब- यहूदी और ईसाई जो तौरात नामक ग्रंथ को ईशवाणी मानते हैं।

अज़ाब - अल्लाह की अवज्ञा करने पर मिलने वाला दंड। ईशप्रकोप, कष्ट, विपत्ति।

अलैहिस्सलाम- उनपर अल्लाह की कृपा हो। नबियों, रसूलों और अवतारों के नामों के बाद यह वाक्य कहा जाता है।

आयत- पवित्र क़ुर्आन की पंक्ति अथवा वाक्य।

इस्राईल- अल्लाह का वीर या सैनिक। हज़रत याक़ूब अलै. का एक गुणवाचक नाम, जिस के कारण उनके वंशज को बनी इस्राईल (अर्थात इस्राईल की संतान) कहा जाता है। फ़िलिस्तीन का एक भू-भाग जिस में यहूदियों ने अपना राज्य स्थापित करके उस का नाम इस्राईल रखा है।

ईमान- अर्थात विश्वास और स्वीकार करना। जैसे अल्लाह, फ़रिश्तों, रसूलों, ईश्वरीय ग्रंथों और पारलौकिक जीवन पर विश्वास करना।

उम्मत- संप्रदाय। किसी नबी या रसूल के अनुयायिओं का समूह उसकी उम्मत कहलाता है।

उम्मती नबी- किसी नबी की शिक्षाओं को आगे फैलाने के लिये उसके अनुयायियों में से किसी का नबी पद प्राप्त करना।

उलमा- इस्लामी धर्मज्ञ।

क़यामत- महाप्रलय। मृत्यु के बाद अल्लाह के समक्ष उपस्थित होने का दिन

कश्फ़- जागृत अवस्था में कोई अदृष्ट विषय देखना। स्वप्न और कश्फ़ में यह अंतर है कि स्वप्न सोते में देखा जाता है और कश्फ़ जागते में देखा जाता है। दिव्य-दर्शन। योगनिद्रा, तन्द्रावस्था।

काफ़िर - सच्चाई का इन्कार करने वाला। इस्लाम धर्म का अस्वीकारी।

क़िब्ला -	आमने-सामने। जिसकी ओर मुँह करके मुसलमान नमाज़ पढ़ते हैं। ख़ाना काबा मुसलमानों का क़िब्ला है जिसकी ओर सारे संसार के मुसलमान मुँह करके नमाज़ पढ़ते हैं।
कुफ्र-	सच्चाई का इन्कार, इस्लाम का इन्कार करना।
ख़लीफ़ा-	उत्तराधिकारी। अधिनायक। नबी और रसूलों के बाद उनका स्थान लेने वाला और उनके काम को चलाने वाला।
ख़िलाफ़त-	नबी और रसूल के बाद उनके कामों को आगे चलाने वाली व्यवस्था, जिसका प्रमुख ख़लीफ़ा कहलाता है।
जिब्रील-	ईशवाणी लाने वाला फ़रिश्ता।
जिहाद -	प्रबल उद्यम करना। स्वयं को सुधारने के लिये या धर्मप्रचार के लिये प्रयत्न करना। सत्यधर्म की रक्षा के लिये प्रतिरक्षात्मक युद्ध करना।
तसरीफ-	गर्दान करना, धातु या शब्दों के रूप चलाना,
तक़वा -	निष्ठापूर्वक अल्लाह की आज्ञा का पालन करना और हर काम को करते समय अल्लाह का भय मन में रखना। संयम, धर्मपरायणता।
ताबयीन-	अनुगमन कारी। वे मुसलमान जिन्होंने हज़रत मुहम्मद सल्ल. को तो नहीं देखा परंतु हज़रत मुहम्मद सल्ल. के साहाबियों को देखा।
तबअ ताबयीन -	ताबयीन के अनुगामी। जिन्होंने केवल ताबयीन को देखा।
तौरात -	यहूदियों का धर्मग्रंथ।
दज्जाल-	झूठा, धोखेबाज, अंत्ययुग में लोगों को धर्मभ्रष्ट कराने के लिए उत्पन्न होने वाला एक समूह।
दुरूद व सलाम -	हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए की जाने वाली दुआ।
नबी-	लोगों को सन्मार्ग पर लाने के लिए अल्लाह की ओर से आया हुआ व्यक्ति, जिसे अदृष्ट विषयों से अवगत कराया जाता है। अवतार।
नुबुव्वत-	नबी बनने की क्रिया। अवतारत्व।
नूर-	अध्यात्म प्रकाश, ज्योति।

नेमत - अल्लाह की देन।

पैग़म्बर - अल्लाह का संदेशवाहक, नबी, रसूल।

बनी इस्राईल- इस्राईल की संतान। (इस्राईल शब्द भी देखें)

बैअत- बिक जाना, धर्मगुरु के हाथ पर हाथ रख कर उसका आनुगत्य स्वीकार करना।

मुफरद - एकांकी शब्द

मुश्रिक - शिर्क करने वाला। अल्लाह अर्थात परम सत्ता के अतिरिक्त किसी अन्य को उपास्य मान कर उसे अल्लाह का समकक्ष ठहराने वाला।

मुनाफ़िक़- कपटाचारी। वह व्यक्ति जो ईमान लाने का प्रदर्शन तो करे परंतु दिल से उसको अस्वीकार करने वाला हो।

मुत्तक़ी - निष्ठापूर्वक अल्लाह की आज्ञा का पालन करने वाला और हर काम को करते समय अल्लाह का भय मन में रखने वाला व्यक्ति, धर्मपरायण।

मुबाहलः- एक दूसरे को शाप देना। इस्लामी धर्मविधान के अनुसार किसी विवादित धार्मिक विषय को अल्लाह पर छोड़ते हुए एक दूसरे को शाप देना कि जो झूठा है उस पर अल्लाह की लानत हो।

मे'राज - आध्यात्मिक उत्थान। अल्लाह की ओर हज़रत मुहम्मद सल्ल. की अलौकिक यात्रा जो सशरीर नहीं हुई।

मोमिन - अल्लाह, फ़रिश्तों, रसूलों, ईश्वरीय ग्रंथों और पारलौकिक जीवन पर विश्वास करने वाला निष्ठावान् व्यक्ति।

याजूज-माजूज-अंत्ययुग में उत्पन्न होने वाली दो महाशक्तियाँ।

रज़ियल्लाहु अन्हु- अल्लाह उन पर प्रसन्न हो। हज़रत मुहम्मद सल्ल. के पुरुष सहाबियों के लिए प्रयुक्त होता है। अल्लाह उनसे प्रसन्न हुआ।

रहिमहुल्लाहु- उन पर अल्लाह की कृपा हो। यह वाक्य दिवंगत महापुरुषों के नाम के साथ प्रयुक्त होता है।

रूह- आत्मा।

रूह-उल-क़ुदुस-पवित्रात्मा। ईशवाणी लाने वाला फ़रिश्ता।

रूह-उल-अमीन-जिब्रील, जो ईशवाणी लाने वाले फ़रिश्ता हैं।

ला'नत - अभिशाप, अमंगल कामना।

वह्यी - अल्लाह की ओर से प्रकाशित होने वाला संदेश, ईशवाणी। ईश्वरीय ग्रन्थों का अवतरण वह्यी के द्वारा होता है। पवित्र क़ुर्आन हज़रत मुहम्मद सल्ल. पर वह्यी के द्वारा ही उतरा है।

शरीयत- इस्लामी धर्मविधान।

शिर्क- अल्लाह अर्थात एक परम सत्ता के बदले दूसरे को उपास्य मानना, किसी को अल्लाह का समकक्ष ठहराना।

सलाम - शांति और आशीर्वाद सूचक अभिवादन।

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम- उनपर अल्लाह की कृपा और शांति अवतरित हो। हज़रत मुहम्मद स० के नाम के साथ यह वाक्य कहा जाता है।

सहाबी - हज़रत मुहम्मद सल्ल. के वे अनुगामी जिन्हें आपकी संगति प्राप्त हुई।

सूरः / सूरत- पवित्र क़ुर्आन का अध्याय। पवित्र क़ुर्आन में 114 अध्याय हैं।

हज़रत - श्रद्धेय व्यक्तियों के नाम से पूर्व सम्मानार्थ लगाया जाने वाला शब्द।

हदीस - हज़रत मुहम्मद सल्ल. के कथन जिन्हें कुछ वर्षों के पश्चात इकट्ठा करके ग्रंथबद्ध किया गया। इन में से छः विश्वसनीय हदीस ग्रंथों को **सहा-ए-सित्ता** कहा जाता है। इनके अतिरिक्त और भी हदीस के ग्रंथ हैं।

हिजरत - देशांतरण। हज़रत मुहम्मद सल्ल. के मक्का से मदीना जाने की घटना हिजरत के नाम से प्रसिद्ध है।

हिदायत- सन्मार्ग प्राप्ति।

* * *